HANSA MEHTA
The M. S. University

: तृतीय अध्याय :

: रामायण की कथावस्तु पर आधारित डा. कोहली के उपन्यास :

प्रास्ताविक :

पूर्ववर्ती अध्यायों में उपन्यास, उसका विकास, यथार्थ से उसका सम्बन्ध, इतिहास और पुराण, ऐतिहासिक उपन्यास और पौराणिक उपन्यास तथा डा. नरेन्द्र कोहली के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व प्रभृति मुद्दों पर चर्चा हो चुकी है। डा. कोहली के कृतित्व की चर्चा करते हुए उनके रामायण और महाभारत पर आधारित उपन्यासों के×अभिनिरिमल से इतर रचनाओं पर हमारा ध्यान अधिक केन्द्रित था और रामायण तथा महाभारत पर आधारित उनके उपन्यासों पर अधिक विचार नहीं किया था, क्योंकि परवर्ती अध्यायों में उनकी चर्चा अपेक्षित है। रामायण और महाभारत ये दो ग्रन्थ — ये दो महाकाव्य — हमारी संस्कृति के मूलाधार ग्रन्थ हैं। भारतीय साहित्य चाहे फिर वह किसी भी भाषा का हो, इन दो महाग्रन्थों से

ओतप्रोत रहता है । कारण स्पष्ट है , हमारी भारतीय संस्कृति , हमारा जन-जीवन , इन दो महाकाव्यों से निरंतर ऊर्जा प्राप्त करता रहता है । हमारे यहां के अनपढ़ से अनपढ़ , निरक्षर भट्टाचार्य के मुंह से भी रामायण और महाभारत की बातें सुनने को मिलती हैं , क्योंकि वे हमारे जीवन में रस-बस गई हैं । एक बार गुजराती के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता कवि उमाशंकर जोशी ने कहा था कि हम सब भारतीय साहित्यकार अपनी-अपनी भाषाओं में एक ही भारतीय संस्कृति का आलेखन कर रहे हैं । हमारे देश में भाषा , बोली , रीति-रिवाज , लिबास , खान-पान , वातावरण आदि का गजब का वैविध्य पाया जाता है ; परन्तु इस विविधता में भी एक प्रकार की एकता के हमें निरंतर दर्शन होते हैं । यह एकता है भारतीय आत्मा की । बाहर से भले हम अलग-अलग दिखते हैं , पर भीतर से हम एक हैं , क्योंकि हमारी आत्मा -- हमारी संस्कृति एक है । दक्षिण के लोग गंगा-यमुना , काशी , xxxxx हरद्वार , केदारनाथ , अमरनाथ को उतना ही मानते हैं ह, जितना उत्तर के लोग मानते हैं । उसी प्रकार गोदावरी , कृष्णा , तिरूपति , कन्याकुमारी आदि में उत्तर के लोगों की धार्मिक श्रद्धा है । इस प्रकार धार्मिक-आध्यात्मिक दृष्टि से यह देश एक है । ऊपर-ऊपर से भिन्नता , पर भीतर से एक प्रकार की एकता और अद्वैतता । फलतः आपको कोई भी भारतीय कवि, लेखक , साहित्यकार ऐसा नहीं मिलेगा जिसने कभी रामायण और महाभारत के वस्तु को न लिया हो । यहां तक कि प्रगतिवादी-मार्क्सवादी लेखक-कवि भी उसके वस्तु को लेकर अपने प्रगतिवादी ढंग से उसकी व्याख्या करते हैं । हमारे आलोच्य लेखक डा. नरेन्द्र कोहली एक जनवादी लेखक के रूप में जाने जाते हैं और उन्होंने रामायण - महाभारत के कथावस्तु को लेकर उसकी व्याख्या आधुनिक-वैज्ञानिक ढंग से , तार्किकता के साथ करने की कोशिश की है । प्रस्तुत अध्याय में हम उनके उन उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करेंगे जो रामायण की कथावस्तु पर आधारित है । यद्यपि हमारे देश में "रामायण" अनेक हैं । इसीलिए तो गुजराती में एक मुहावरा चल

पड़ा है — रामनी रामायण । किन्तु डा० कोहली ने अधिकांशतः वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामायण अर्थात् "रामचरितमानस " की कथावस्तु को आधार बनाया है । प्रस्तुत अध्याय में हम रामकथा-की पृष्ठभूमि तथा हिन्दी में रामकाव्य की परंपरा निर्दिष्ट करते हुए डा० कोहली के "दीक्षा" , " अवसर" , "संघर्ष की ओर " और और युद्ध" इन चार उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करेंगे । अब ये चारों उपन्यास "अभ्युदय : खण्ड-1 " और "अभ्युदय : खण्ड-2 " में संकलित हैं । "अभ्युदय-खण्ड-1 " में , "दीक्षा" , " अवसर" और "संघर्ष की ओर " संकलित हैं ; और " अभ्युदयः खण्ड-2 - " में "युद्ध" उपन्यास " युद्ध-1 " और "युद्ध-2 " के रूप में संकलित हैं । वाल्मीकि रामायण में भी "युद्ध-कांड" अधिक विस्तृत व दीर्घ है ।

रामकथा की पृष्ठभूमि :

राम और कृष्ण भारतीय जन-जीवन के महानायक हैं । यहाँ तक कि लोग उनको भगवान तक मानते हैं । हमारे यहाँ जो अवतार की कल्पना की गई है , उसके दो मुख्य अवतार रामावतार और कृष्णावतार हैं । हमारे त्रिदेवों में ब्रह्मा , विष्णु और महेश हैं । इनमें ब्रह्मा सृष्टि के सर्जक माने गए हैं , सृष्टि के पालनहार के रूप में विष्णु की कल्पना की गई है और महेश संहार के देवता हैं । इस तरह विष्णु का दायित्व संसार का पालन-पोषण करना है । अतः संसार में लोगों पर जब भी कोई आपत्ति आती है , तो ईश्वर उस आपत्ति को दूर करने के लिए अवतार ग्रहण करते हैं । हम सामान्यतया इतना तो जानते ही हैं कि जब-जब हमारे देश पर किसी-न-किसी प्रकार का संकट आया है , उसे दूर करने के लिए कोई महापुरुष सामने आया है । यदि हम आधुनिक युग की बात करें तो देश को पराधीनता की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए महात्मा गांधी अवतरित हुए हैं । इसी तरह दलितों पर अत्याचार और अन्याय जब बढ़ गया तो उसे दूर करने के लिए डा. बाबासाहब आम्बेडकर जैसा व्यक्तित्व सामने

आता है । यदि जन-साधारण का अवलोकन करें तो स्पष्टतया ज्ञात होगा कि अभिवादन के रूप में लोग प्रायः "जय रामजी की " या "राम-राम " शब्द का प्रयोग करते हैं । गुजरात के वैष्णव समाज में प्रायः " जयश्री कृष्ण " कहने का रिवाज है । अभिप्राय यह कि जन-साधारण में राम और कृष्ण हमारे दैनंदिन जीवन में इस प्रकार घुल-मिल गये हैं उनको दूर करना कठिन ही नहीं असंभव है । यहां तक कि मध्य-कालीन निर्गुण काव्य के शिरमौर कवि कबीर ने भी भगवान या ब्रह्म के नाम के रूप में "राम" शब्द को ग्रहण किया है । आत्मा के लिए भी संतकाव्य में "राम" शब्द प्रयुक्त होता रहा है ।

संस्कृत-साहित्य में रामकथा :

संस्कृत-साहित्य में हमें रामकथा निम्नलिखित छः विभागों में उपलब्ध होती है — 1. वैदिक साहित्य में रामकथा , 2. पुराणों में रामकथा , 3. संस्कृत-रामायणों में रामकथा , 4. महाभारत में रामकथा , 5. संस्कृत प्रबंध काव्यों में रामकथा और 6. संस्कृत नाटकों में रामकथा । यहां बहुत संक्षेप में इन पर विचार किया जायेगा ।

/1/ वैदिक साहित्य में रामकथा :

सर्वप्रथम हमें रामकथा वैदिक साहित्य में उपलब्ध होती है । वेदों , ब्राह्मण ग्रन्थों और तैत्तिरीय आरण्यक में रामकथा से सम्बद्ध अनेक पात्रों का उल्लेख हुआ है । उन पात्रों में इक्ष्वाकु , दशरथ , जनक, राम , सीता और दशानन आदि मुख्य हैं । ऋग्वेद में रघुकुल के राजा इक्ष्वाकु का वर्णन एक प्रतापी और पराक्रमी राजा के रूप में मिलता है । यथा —" यस्येक्ष्वाकुरुपव्रते रेवान् मराय्येधते । दिवीव पञ्च कृष्टयः ।"[1] ऋग्वेद के ही एक मंत्र में कहा गया है —" चत्वारिंशद्दशरथस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति । मदच्युतः कृशनावतो अत्यान्कक्षीवन्त उदमृक्षन्त-पत्राः ।।"[2] अर्थात् दशरथ के लाल रक्त में चालीस घोड़े और एक हजार धेनुओं के दल का नेतृत्व करने की शक्ति है ।

अथर्ववेद में भी इक्ष्वाकु के प्रताप व पराक्रम का उल्लेख है —' त्वा वेद पूर्व इक्ष्वाकी यं ...'[3] ऋग्वेद के एक मंत्र में दःशीम , वेन और पृथवान के साथ एक अतिशय प्रतापी नरेश के रूप में राम का उल्लेख मिलता है । ऋग्वेद तथा अथर्ववेद आदि में अनेक मंत्र मिलते हैं । ऋग्वेद के भाष्यकार सायण का मत है कि उन मंत्रों में राम आदि बलवान नरेशों की स्तुति की गयी है और उनसे प्राप्त होने वाले दान का भी वर्णन किया गया है ।[4] ब्राह्मण ग्रन्थों तथा तैत्तिरीय आरण्यक में भी राम का उल्लेख मिलता है । ऋग्वेद और अथर्ववेद में सीता का उल्लेख हुआ है । अथर्ववेद में एक स्थान पर दशानन के संदर्भ में कहा गया है कि सर्वप्रथम ब्राह्मण दशानन उत्पन्न हुआ और उसने सोमरस का पान करके विष के प्रभाव को समाप्त कर दिया —' ब्राह्मणो जज्ञे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः । स सोमं प्रथमः पपौ च चकारारसं विषम् ।।'[5] अथर्ववेद में ही अयोध्यानगरी का वर्णन मिलता है जिसमें उसे आठ चक्रों और नौ द्वारों से युक्त बताया है ।[6] ब्राह्मण ग्रन्थों में भी सीता शब्द का प्रयोग हुआ है । डा० याकोबी के मतानुसार रामायण की सीता वैदिक सीता से अभिन्न है । उनके मत से वैदिक काल के देवता इन्द्र रामायण-काल तक परिवर्तित होकर राम हो गये हैं ।[7] डा० फादर कामिल बुल्के का इस संदर्भ में यह अभिमत है कि वैदिक रचनाओं में रामायण के एकाध पात्रों के नाम अवश्य मिलते हैं , लेकिन न तो इनके पारस्परिक संबंध की कोई सूचना दी गयी है और न इनके विषय में रामायण की कथा-वस्तु का किंचित् भी निर्देश किया गया है । जनक और सीता का बार-बार उल्लेख होने पर भी दोनों का पिता-पुत्री संबंध कहीं भी निर्दिष्ट नहीं हुआ है । अतः वैदिक काल में रामायण की रचना हुई थी , अथवा राम-कथा संबंधी गाथाएं प्रसिद्ध हो चुकी थीं ; इसका निर्देश समस्त विस्तृत वैदिक साहित्य में कहीं भी नहीं पाया जाता । अनेक ऐतिहासिक व्यक्तियों के नाम रामायण के पात्रों के नामों के मिलते हैं । इससे इतना निष्कर्ष ही निकाला जा सकता है कि ये नाम प्राचीन काल में भी प्रचलित थे ।[8] किन्तु डा. विश्वम्भरदयाल अवस्थी डा० फादर कामिल बुल्के के उक्त मत से सहमत नहीं है । यथा —' मेरे

विचार से फादर डा कामिल बुल्के का यह निष्कर्ष कि वैदिक साहित्य में उल्लिखित इक्ष्वाकु , जनक , दशरथ , राम , सीता और दशानन ; रामकथा में प्रसिद्ध तत्तद् नाम वाले पात्रों से भिन्न हैं , उचित नहीं है । वेदों के मंत्रद्रष्टा ऋषि विश्वामित्र , वसिष्ठ और जामदग्नि परशुराम रामकथा के प्रमुख पात्रों --- दशरथ , जनक और श्रीराम --- के समकालिक तथा उनसे सम्बन्धित थे । इसके अतिरिक्त ऋग्वेद में श्रीराम के साथ वेन और पृथवान् का भी उल्लेख हुआ है । वेन और पृथवान् या वेनपुत्र पृथु मन्त्रद्रष्टा हैं और वे पुराणों में भी प्रतापी नरेश के रूप में xxx× उल्लिखित हुए हैं । इसलिए जब निरुक्तकार के मत से वेद में देवापि और शन्तनु के इतिहास का अस्तित्व है ; तब वैदिक साहित्य में उल्लिखित जनक , दशरथ , राम , सीता और दशानन को रामायणकालीन जनक , दशरथ , राम , सीता और दशानन से भिन्न मानना कथमपि न्यायसंगत नहीं है । '[9]

वेदों , ब्राह्मण-ग्रन्थों तथा आरण्यकों के उपरांत राम-कथा के पात्रों का उल्लेख रामपूर्व तापिनीय उपनिषद , रामोत्तर तापिनीय उपनिषद और सीतोपनिषद x× आदि उपनिषदों में मिलता है । रामपूर्व तापिनीय उपनिषद में एक स्थान पर कहा गया है --- 'जब श्रीराम सौम्य कान्तिवाली सीता के साथ होते हैं तब वे अग्नि-षोमात्मक विश्व के कारणभूत होते हैं । जैसे चन्द्रमा चन्द्रिका के साथ अत्यन्त xxxx× शोभायुक्त होता है , वैसे ही श्रीराम सीता के साथ अत्यन्त सुशोभित होते हैं । सीता उनकी आह्लादिनी शक्ति है और अणिमादिक अष्ट-सिद्धियां उनकी सेवा करती हैं ।'[10] इसी में xxx बालि-सुग्रीव , रावण-विभीषण इत्यादि का उल्लेख भी मिलता है । रामोत्तर तापिनीय उपनिषद में कहा गया है कि भगवान शंकर श्रीराम के वरदान से प्राप्त शक्ति के कारण ही काशी में मरने वाले×xxxxx प्राणियों को मुक्ति प्रदान करते हैं और जो ब्रह्म-रूप राम का मंत्र जपते हैं वे निश्चय ही मुक्त हो जाते हैं । राम-मंत्र जीव को जन्म , जरा-मरण आदि संकटों से तारता है , इसलिए उसे तारक मंत्र भी कहते हैं । सीतोपनिषद में सीता के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए

कहा गया है कि सीताजी शक्तिरूपिणी हैं । मूल प्रकृति-रूप होने से उनको ही प्रकृति कहा जाता है । वे साक्षात् योगमाया ही हैं और इस भूतल पर जनक की यज्ञ-भूमि में हल के अग्रभाग से प्रकट हुईं । श्री-राम के नित्य-सान्निध्य के कारण सीताजी विश्व का कल्याण करने वाली हैं । वे सभी प्राणियों की उत्पत्ति , स्थिति और प्रलय का कारण हैं । वे ही शक्तिरूपिणी होकर इच्छा-शक्ति , क्रिया-शक्ति और साक्षात् शक्ति के रूप में प्रकट होती है । ।।

/2/ पुराणों में रामकथा :

वैदिक साहित्य के उपरान्त पुराणों में भी हमें रामकथा उपलब्ध होती है । पुराणों में विष्णुपुराण (चतुर्थ शती) , हरिवंश-पुराण (चतुर्थ शती) , भागवतपुराण (षष्ठ शती) , पद्मपुराण (द्वादश शती) आदि पुराणों में रामकथा प्राप्त होती है । वैष्णव पुराणों में सर्ग , प्रतिसर्ग आदि के वर्णन के प्रसंग में भगवान की विभिन्न लीला-ओं का वर्णन उपलब्ध होता है । यद्यपि इन लीलाओं में श्रीकृष्ण की अपेक्षा श्रीराम की लीलाओं का बहुत× वर्णन बहुत संक्षेप में हुआ है , तथापि वह संक्षिप्त वर्णन भी अत्यन्त प्रशस्त एवं महत्त्वपूर्ण है ।

विष्णुपुराण के चतुर्थ अंश में अठारह श्लोकों में राम-कथा का वर्णन मिलता है , जिनमें निर्दिष्ट किया गया है कि विष्णु ने अपने अंशों से राम , लक्ष्मण , भरत और शत्रुघ्न के रूप में अवतार धारण किया ; विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा हेतु श्रीराम ने ताड़का तथा सुबाहु आदि का वध किया ; अपने दर्शन मात्र से उन्होंने अहल्या के कलंक को दूर किया ; शंकर के प्रचंड धनुष को तोड़कर श्रीराम ने सीता के साथ विवाह किया और क्षत्रियों के लिए कालरूप परशुराम का यश और पराक्रम नष्ट किया ; पिता की आज्ञा मानकर श्रीराम अपनी पत्नी सीता और अनुज लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष की अवधि के लिए वन चले गये और वहाँ उन्होंने खर , दूषण , त्रिशिरा आदि राक्षसों का तथा महाबलि बालि का वध किया । सीता के अपहर्ता रावण का

परिवार सहित नाश किया । इसके पश्चात् उन्होंने लौकिक मर्यादा की रक्षा हेतु सीता को अग्नि-परीक्षा द्वारा निष्पाप प्रमाणित कर अयोध्या ले आये और ग्यारह हजार वर्षों तक इस पृथ्वी पर शासन किया ।[12]

×हरिवं×× हरिवंशपुराण महाभारत के खिल भाग के रूप में प्रसिद्ध है । इस पुराण में प्रथम पर्व के इकतालीसवें अध्याय में 35 श्लोकों में श्रीराम की लीलाओं का वर्णन दिया गया है । इस पुराण के अनुसार विष्णु ने 24 वें त्रेतायुग में राम के रूप में राक्षसों के विनाश के लिए अवतार धारण किया । विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा , मारीच तथा सुबाहु का शमन , प्रसन्न होकर विश्वामित्र द्वारा दिव्यास्त्रों का दिया जाना ,जनकपुर में पहुँचकर धनुष-भंग करना , पिताज्ञा से वनगमन, रावण द्वारा सीता का हरण , सीतान्वेषण में सुग्रीव से भेंट , महाबली वानर-राज बालि का वध , सुग्रीव का किष्किंधा में राज्यारोहण , रावण-वध , राम का राज्याभिषेक आदि घटनाओं का इसमें उल्लेख मिलता है । भागवतपुराण में प्रथम , द्वितीय तथा एकादश स्कन्ध में कुल चार प्रसंग राम-कथा के संदर्भ में आये हैं । इसमें यह बताया गया है कि देवताओं के कार्य संपन्न करने के लिए विष्णु रामावतार धारण करते हैं ।इसमें भी अन्य पुराणों में वर्णित कथाएं हैं । रावण के पराक्रम के संदर्भ में यह कहा गया है कि पूर्वकाल में उसकी प्रचंड छाती से टकराकर ऐरावत हाथी के दाँत चूर्ण होकर चारों ओर फैल गये थे । श्रीराम ने अनेक यज्ञ किये थे और ब्राह्मणों को पुष्कल दान दिया था । वे ब्रह्मण्यदेव के रूप में विश्रुत है । इसमें लोकोपवाद से दुःखी होकर सीता-परित्याग तथा वाल्मीकि के आश्रम में लव-कुश के जन्म की कथा भी कही गई है । कुछ समय पश्चात् सीता श्रीराम का स्मरण करते हुए पृथ्वी में अन्तर्हित हो गयीं । इसके पश्चात् श्रीराम ने ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए तेरह हजार वर्षों तक अखण्ड रूप से अग्निहोत्र किया । राम-राज्य में श्रीराम के पुण्य-प्रताप से लोगों की इच्छा-मृत्यु होती थी , अर्थात् जब कोई मृत्यु की इच्छा करे , तभी उसकी मृत्यु होती थी । [13]

"पद्मपुराण" का कथानक छः खण्डों में विभक्त है । उसके छठे खण्ड में श्रीराम के उत्तरार्द्ध-चरित्र का वर्णन उपलब्ध है । आततायी रावण-वध के पश्चात् विभीषण का राज्याभिषेक करवाकर राम पुष्पक विमान में समासीन होकर अयोध्या लौटे तब भरत ने अयोध्या का राज्य उनको समर्पित कर दिया । श्रीराम के राज्य में कोई भी प्राणी दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से पीड़ित नहीं था । सभी स्त्रियां पति-परायणा होती थीं और सभी व्यक्ति सात्विक भावों से परिपूर्ण थे । कुछ दिनों के उपरान्त एक रजक द्वारा सीता- चरित्र पर आक्षेप किये जाने पर राम अत्यन्त दुःखी होकर सीता को त्याग देते हैं । वाल्मीकि के आश्रम में सीता को प्रश्रय मिलता है । वहां वह लव-कुश को जन्म देती हैं । श्रीराम पुलस्त्य मुनि के कुल में उत्पन्न ब्राह्मण-वर्णी रावण का वध करने के कारण स्वयं को ब्रह्म-हत्या के दोषी मानकर दुःखी रहते थे । अतः ब्रह्म-हत्या के पाप से मुक्त होने के लिए वे अश्वमेध यज्ञ करते हैं । सीता की स्वर्णमयी प्रतिमा स्थापित कर वसिष्ठ के निर्देशन में यज्ञ संपन्न होता है । यज्ञ-समाप्ति पर राम द्वारा निमंत्रित होने पर वाल्मीकि अयोध्या आते हैं । वे श्रीराम को बताते हैं कि सीता निष्कलंक है, अतः उनको ससम्मान अयोध्या वापस बुला लेना चाहिए । फलतः राम सीता को अयोध्या बुलाते हैं और उनके साथ मिलकर यज्ञ की पूर्णाहुति करते हैं । इस प्रकार "पद्मपुराण" कार राम-सीता का पुनः मिलन करवाकर उसे सुखान्त रूप प्रदान करते हैं । तत्पश्चात् श्रीराम पृथ्वी पर ग्यारह हजार वर्ष तक राज्य करने के उपरान्त स्वधाम चले जाते हैं ।[14]

इस प्रकार इन विभिन्न पुराणों में राम-कथा के कुछ प्रसंग हमें क्रमिक रूप से कथा-रूप में उपलब्ध होते हैं । वैदिक-साहित्य में जहां हमें केवल रामकथा के विभिन्न प्रमुख पात्रों के उल्लेख मिलते हैं, वहां इन पुराणों में हमें रामकथा हमें किंचित् परिवर्तन के साथ क्रमिक रूप से प्राप्त होती है । भागवतपुराण और पद्मपुराण में हमें राम के चरित्र का उत्तरार्द्ध प्राप्त होता है, जो इसके पहले के पुराणों में नहीं मिलता था ।

/3/ संस्कृत-रामायणों में रामकथा :

संस्कृत में अनेक रामायण-काव्यों की रचना हुई है, उनमें निम्नलिखित प्रमुख हैं -- 1. वाल्मीकि रामायण, 2. योगवासिष्ठ रामायण, 3. अध्यात्म रामायण, 4. अद्भुत रामायण, 5. आनंद रामायण, और 6. भुशुण्डि रामायण। यहां बहुत संक्षेप में उन पर विचार किया जायेगा।

1. वाल्मीकि रामायण :

वाल्मीकि रामायण सम्पूर्ण रामकथा-साहित्य का उपजीव्य और आकर ग्रन्थ है। इससीसे प्रेरित होकर भारत की विभिन्न भाषाओं में रामकथा से सम्बद्ध रामायणों, प्रबंध-काव्यों और नाटकों का प्रणयन हुआ है। उसके रचयिता आदिकवि वाल्मीकि हैं और रचना काल अनुमानतः 500 ई. पू. के आसपास का है। वाल्मीकि रामायण का आरंभ वाल्मीकि और नारद के संवाद से शुरू होता है। महर्षि वाल्मीकि ने नारद से पूछा कि वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में गुण, वीर्य, धर्म, कृतज्ञता, सत्य-भाषण, दृढ़-प्रतिज्ञा, सदाचार, प्राणियों का हित-चिंतन और साधन, वेदुष्य, शक्तिमत्ता, प्रियदर्शन, संयम और चारित्र्यआदि की दृष्टि से सबसे महान कौन है? [15] इसके उत्तर में नारद ने श्रीराम का नामोल्लेख करते हुए बतलाया कि वे संसार के सभी उदात्त और श्रेष्ठ गुणों के आश्रयभूत हैं। [16] यह काव्य सात काण्डों में लिखा गया है -- बालकाण्ड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधाकांड, सुंदरकांड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकांड। [17] इसकी प्रमुख घटनाओं में दशरथ द्वारा अश्वमेध एवं पुत्रेष्टि यज्ञ करना, कौशल्यादि रानियों का गर्भवती होना, देवताओं की प्रार्थना पर विष्णु का राम के रूप में जन्म ग्रहण करना, विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा हेतु राम-लक्ष्मण का जाना, ताड़कावध, अहल्या-उद्धार, धनुषभंग, सीतादि चार बहनों का श्रीराम तथा उनके भाइयों से विवाह, परशुराम-प्रसंग, देवासुर-संग्राम में दिये गये दो वचनों का कैकेयी द्वारा मांगा जाना, तदानुसार राम-लक्ष्मण-सीता का वनगमन, चित्रकूट में राम-भरत मिलाप, तीनों का चित्रकूट

राम की प्रेरणा से लक्ष्मण द्वारा शूर्पणखा के नाक-कान काटकर उसे विरूप कर देना , खर-दूषण और त्रिशिरा का वध , राम द्वारा महाबली बालि का वध , सुग्रीव से मित्रता व संधि , तदानुसार वानर-सेना का आयोजन , सेतु-निर्माण , राम-रावण के बीच घमासान युद्ध , मेघनाद द्वारा राम-लक्ष्मण को बांध देना , गरूड़ द्वारा नागपाश से मुक्ति , रावण का युद्ध-भूमि पर आना , ब्रह्मा द्वारा प्रदत्त शक्ति से लक्ष्मण को मूर्छित कर देना , रावण का राम द्वारा अपमानित और पराजित होकर लौटना , कुम्भकर्ण का रणभूमि पर आना , कुम्भकर्ण की मृत्यु के पश्चात् मेघनाद का पुनः युद्धभूमि पर आना , ब्रह्मास्त्र के प्रहार से राम-लक्ष्मण उभय को मूर्छित कर देना , जाम्बवान की प्रेरणा से हनुमान का हिमालय जाना और वहां से मृतसंजीवनी , विशल्य-करणी , सुवर्णकरणी और संधानी नामक औषधियों को लेकर लौटना; राम-लक्ष्मण तथा अन्य योद्धाओं का स्वस्थ हो जाना , पूर्वकाल में ब्रह्माजी द्वारा मेघनाद को सूचित करना कि "निकुम्भिला" नामक वट-वृक्ष के पास हवन करने से पूर्व जो शत्रु उस पर आक्रमण करेगा उसके द्वारा उसका वध होगा , तदानुसार लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का वध , मेघनाद-वध के उपरान्त रावण का पुनः युद्धभूमि पर आना , विभीषण-वध हेतु रावण द्वारा मयनिर्मित शक्ति का प्रहार , लक्ष्मण द्वारा उसको धारण करना , फलतः लक्ष्मण का पुनः मूर्छित हो जाना , हनुमान द्वारा लायी गयी औषधियों के प्रयोग से सुषेण द्वारा लक्ष्मण की मूर्छा को ठीक करना , तदुपरांत अगस्त्यमुनि द्वारा प्रदत्त ब्रह्मास्त्र के प्रहार से राम द्वारा रावण का वध , रावण-वध के उपरांत उपस्थित सीता के चरित्र पर आक्षेप , सीता की अग्निपरीक्षा , राम का अयोध्यागमन , राम का राज्याभिषेक , राम के शासन में प्रजा का हर तरह से सुखी व संतुष्ट रहना आदि घटनाओं का वर्णन उत्तर-कांड पूर्व के कांडों में उपलब्ध होता है ।

उत्तरकांड में रावण और कुम्भकर्ण आदि का जन्म , उनके तप और पराक्रम का वर्णन , रावण की कठोर तपस्या , एक हजार वर्ष की

अवधि की समाप्ति के पश्चात् रावण अपना एक शिर अग्नि-देव को अर्पित कर देता था , इस प्रकार नव हजार वर्षों में नौ शिरों को अर्पित कर देना , दशवें शिर के समय ब्रह्मा का प्रकट होना , उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे दुर्लभ वर प्रदान करना , ब्रह्मा के ही वर-दान से पूर्व में अर्पित सभी शिरों का पुनः आविर्भूत हो जाना , आपन्न-सत्वा सीता द्वारा दोहद के रूप में वन में जाकर ऋषिपत्नियों की संन्निधि में कुछ समय व्यतीत करने की इच्छा , उन्हीं दिनों में सीता के संदर्भ में लोकोपवाद का उठना , राम का निर्णय , लक्ष्मण का सीता को वाल्मीकि ऋषि के आश्रम के पास छोड़ देना , आश्रम में लव-कुश का जन्म , एक बार श्रीराम के राज्य में ब्राह्मण-बालक की अकाल मृत्यु , कारण पूछने पर नारदजी का बताना कि मर्यादा के अतिक्रमण के कारण ऐसा हुआ ; उनके मत से सत्ययुग में केवल ब्राह्मण , त्रेतायुग में ब्राह्मण और क्षत्रिय , द्वापर में ब्राह्मण , क्षत्रिय और वैश्य तथा कलियुग में अन्य वर्णों के साथ शूद्र को भी तपस्या करने का अधिकार है ; [18] त्रेतायुग में अनधिकारी शूद्र शम्बूक द्वारा तप का करना , फलतः श्रीराम द्वारा उसका वध , राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ का आयोजन , वाल्मीकि के साथ यज्ञस्थल पर सीता का भी आना , वाल्मीकि के आग्रह पर राम का कहना कि सीता एक बार पुनः जन-समूह के सम्मुख अपनी पवित्रता की परीक्षा दें , सीता का यह कथन कि राम के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति का मन से भी चिंतन न किया हो तो माधवी देवी (पृथ्वी) उनको अपने में समाहित कर लें , [19] माधवी देवी का आविर्भूत होना , सीता को अपनी गोद में लेकर उसे पृथ्वी में अन्तर्निहित कर देना , रामावतार की अवधि (ग्यारह हजार वर्ष) की समाप्ति पर स्वयं काल-देवता का उपस्थित होना , राम के परित्याग से व्यथित लक्ष्मण का प्राण-त्याग , उसका सशरीर इन्द्रलोक जाना , राम का अपने भ्राताओं के साथ विष्णुलोक में प्रवेश करना , राम के परधाम-गमन से व्यथित अयोध्यावासियों का सरयू में स्नान कर सन्तानक लोक में चले जाना आदि घटनाओं का उल्लेख मिलता है । [20]

कुछ विद्वानों के मतानुसार समूचा उत्तरकांड बाद में जोड़ा गया है, जिसके लिए वे निम्नलिखित प्रमाण प्रस्तुत करते हैं —

1. युद्धकाण्ड के अंत में काव्य की फलश्रुति का उल्लेख हुआ है, ठीक उसी प्रकार की फलश्रुति उत्तरकांड के अंत में भी दी गयी है। अतः एक काव्य की दो स्थानों पर फलश्रुति देने की आवश्यकता ही क्या थी ?

2. वाल्मीकि रामायण के कांडों की संख्या बताते हुए पहले छः काण्डों का उल्लेख हुआ है, और बाद में उत्तरकांड का भी उल्लेख किया गया है।

3. लंकाकांड के अन्त में ही सुग्रीव आदि की बिदाई का वर्णन दिया गया है।

4. वाल्मीकि रामायण में रामकथा का जो सारांश दिया गया है, उसमें उत्तरकाण्ड में वर्णित घटनाओं का उल्लेख नहीं है। [21]

डा. याकोबी तथा डा. फादर कामिल बुल्के उत्तरकांड के अतिरिक्त बालकाण्ड को भी प्रक्षिप्त मानते हैं। डा. फादर कामिल बुल्के के मतानुसार रामायण के वे सभी प्रसंग जहाँ श्रीराम को भगवान का अवतार बतलाया गया है, प्रक्षिप्त हैं। [22]

वाल्मीकि रामायण के अतिरिक्त योगवासिष्ठ रामायण, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनंद रामायण तथा भुशुण्डि रामायण आदि रामायण काव्य संस्कृत में हमें मिलते हैं। "योगवासिष्ठ रामायण में काण्ड के स्थान पर "प्रकरण" शब्द प्रयुक्त हुआ है। इसमें अध्यात्म विषयक प्रसंगों का बाहुल्य है। इसके "निर्वाण" प्रकरण में सम्पूर्ण रामकथा का उल्लेख किया गया है। इसमें विश्वामित्र श्रीराम के अवतार लेने के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि श्रीराम साक्षात् परमेश्वर हैं और उन्होंने देवताओं का दुःख दूर करने के उद्देश्य से अवतार धारण किया है — " देवकार्य' चरामोऽन्यदवतार प्रयोजनम् ।" [23] वे सिद्धाश्रम राम-लक्ष्मण को ले जाने से पूर्व ही आगामी घटनाओं की चर्चा भी वहां पर करते हैं। "अध्यात्म रामायण" के वक्ता और श्रोता क्रमशः शिव और पार्वती हैं। इस रामायण में कहा गया है कि श्रीराम चिन्मय

और अविनाशी हैं । वे विश्व की उत्पत्ति , स्थिति और लय के कारण हैं --" विश्वोद्‌भवस्थितिलयादिषु हेतुमेकं ।" [24] इसमें अधिकांश घटनाएं तो वाल्मीकि रामायण के अनुसार हैं , अतः जहां कोई नयी बात है , उसका उल्लेख यहां किया जायेगा । सरस्वती द्वारा प्रेरित मंथरा कैकेयी को वरदान मांगने के लिए उकसाती है । बालि-वध के संदर्भ में कहा गया है कि पुत्री , बहन , अनुजवधू और पुत्रवधू के साथ जो अनाचार करता है , वह राजा द्वारा वध्य है , किन्तु छिपकर मारने का कारण यहां भी नहीं बतलाया गया है । सेतु-निर्माण के पूर्व राम शिव (रामेश्वर) की मूर्ति की स्थापना और पूजा करते हैं । राम-रावण युद्ध-प्रसंग में कहा गया है कि श्रीराम पहले आग्नेयास्त्र से रावण की नाभि में स्थित अमृत को सोख लेते हैं और फिर ब्रह्मास्त्र चलाकर रावण का वध करते हैं । एक नयी बात यहां पर यह है कि रावण जिस सीता का हरण करता है , वह असली सीता न होकर "माया सीता" है । जब अग्निपरीक्षा हेतु माया सीता अग्नि में प्रवेश करती है , तब उसके स्थान पर वास्तविक सीता का प्रादुर्भाव होता है । [25]

अद्‌भुत रामायण में 27 सर्ग और 1353 श्लोक हैं । इसमें रामकथा वाल्मीकि-भारद्वाज संवाद के रूप में प्रस्तुत की गयी है । इसमें कहा गया है कि नारद के शाप के कारण श्रीराम का अवतार हुआ था । इसमें नारद-मोह की कथा है । राजा अम्बरीष की परम सुन्दरी कन्या श्रीमती को देखकर नारद और पर्वत नामक ऋषि मोहित हो जाते हैं । अतः श्रीमती को मुग्ध करने हेतु ये दोनों भगवान विष्णु के पास सुंदर रूप की याचना लेकर जाते हैं , तब वे उनको बन्दर का रूप प्रदान कर देते हैं , दूसरी तरफ श्रीमती विष्णु का वरण करती है । इससे क्रुद्ध होकर नारद विष्णु को शाप देते हैं । रामावतार उसका परिणाम है । [26]

राम की भांति सीता के जन्म की कथा भी यहां प्रस्तुत है । ब्रह्मा और शंकर के वरदानों से उन्मत्त अत्याचारी रावण ऋषियों और मुनियों के शरीर में बाण चुभोकर उनका रक्त एक कलश में जमा करने

करता है । उस कलश में लक्ष्मी को पुत्री रूप में प्राप्त करने की कामना से प्रेरितगृत्समद नामक ब्राह्मण पहले से ही अभिमंत्रित दूध संग्रहीत कर रहा था । जब रावण उस घड़े को लेकर लंका जाता है तब मंदोदरी रावण की परदारागमन की दुष्प्रवृत्ति से क्षुब्ध होकर उस रक्त को सामान्य विष से अधिक तीक्ष्ण मानकर पी जाती है, किन्तु अभिमंत्रित दुग्ध-प्रभाव के कारण मंदोदरी गर्भिणी हो जाती है । फलतः लोक-लाज तथा रावण के भय के कारण मंदोदरी कुरुक्षेत्र में जाकर गर्भपात करवा लेती है और सद्यो-त्पन्न कन्या को एक घड़े में रखकर पृथ्वी में गाड़ देती है । बाद में राजा जनक के हल जोतने के समय उसका प्राकट्य होता है । हल के अग्र भाग "सीर" के स्पर्श से उत्पन्न होने के कारण ही कन्या का नाम सीता रखा जाता है और राजा जनक उसका पालन-पोषण पुत्री के रूप में करते हैं । एक और कथा भी यहाँ प्राप्त है । अगस्त्य आदि ऋषि रावण-वध क्रम के लिए राम की प्रशंसा करते हैं, तब सीता हंस पड़ती है । ऋषियों के बहुत पूछने पर बताती है कि पूर्वकाल में ऋषि विश्रवा और कैकसी के संयोग से दो रावण उत्पन्न हुए थे — एक दशानन रावण और दूसरा सहस्त्रमुख रावण । यह सहस्त्रमुख रावण दशानन रावण की अपेक्षा अधिक बलवान है । वह पुष्कर द्वीप का राजा है । जब तक श्रीराम उस सहस्त्रमुख रावण को पराजित न करें उनको परमवीर कैसे कहा जा सकता है । इस पर राम पुष्कर द्वीप पर आक्रमण कर देते हैं । सहस्त्रमुख रावण उनको घायल कर देता है और वे अचेत हो जाते हैं । तब सीता विकराल रूप धारण करके युद्ध-भूमि पर पहुँचती है और सहस्त्रमुख रावण का वध कर देती है । [27]

"आनंद रामायण" के वक्ता और श्रोता क्रमशः शिव और पार्वती है । यह रामायण नौ काण्ड और 110 सर्गों में उपन्यस्त है । इस रामायण में रामकथा से सम्बद्ध ऐसे अनेक आख्यानों का उल्लेख किया गया है जो प्रायः दूसरी रामायणों में अनुपलब्ध हैं । इसमें काण्ड और सर्ग-संख्या की जो नियोजना है, उसको सूचित करने वाली तालिका नीचे प्रस्तुत है —

काण्ड	सर्ग-संख्या
§1§ सारकाण्डम्	13 सर्ग
§2§ यात्राकाण्डम्	9 सर्ग
§3§ यागकाण्डम्	9 सर्ग
§4§ विलासकाण्डम्	9 सर्ग
§5§ जन्मकाण्डम्	9 सर्ग
§6§ विवाहकाण्डम्	9 सर्ग
§7§ राज्यकाण्डम्	25 सर्ग
§8§ मनोहरकाण्डम्	18 सर्ग
§9§ पूर्णकाण्डम्	9 सर्ग
	कुल = 110 सर्ग

§1§ सारकाण्डम् : रावण को ब्रह्मा द्वारा ज्ञात होना कि उसकी मृत्यु कौशल्या-पुत्र राम के हाथों होगी , कौशल्या का अपहरण करके उन्हें पिटारी में बन्द कर समुद्र में तिमिंगल को दे आना , विधि-विधान-वश समागत दशरथ के साथ कौशल्या के गान्धर्व विवाह का संपन्न होना , दशरथ की दूसरी पत्नी कैकेयी द्वारा दैत्य-युद्ध के समय दशरथ को बचाना , फलतः दशरथ से दो वरदानों का प्राप्त करना , ऋष्यश्रृंग के पुत्रेष्टि यज्ञ से रामादिक चार पुत्रों का जन्म होना , विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा हेतु राम का उनके साथ जाना , ताड़का और सुबाहु का वध , अहल्या-उद्धार , शिव-धनुष भंग , राम-सीता का विवाह , परशुराम से भेंट , परशुराम को राम के विष्णुत्व का ज्ञान होना , कैकेयी की अभिसंधि के कारण राम का वनवास , खर-दूषण और त्रिशिरा का वध , राम द्वारा सीता को आदेश देना कि वह स्वयं को तीन रूपों में विभक्त करें —1. रजोरूप से अग्नि में , 2. सत्वरूप से राम के बायें अंग में और 3. तमोरूप से रावण को मोहित करने हेतु पंचवटी में निवास करें — रावण द्वारा उस तमोरूपी सीता का अपहरण , विरह-व्यथित राम की परीक्षा हेतु

पार्वती का सीतारूप धारण करना , पार्वतीजी को राम के ईश्वरत्व का ज्ञान होना , सुग्रीव से संधि , वालि का वध , राम-रावण युद्ध , ऐरा-वण मैरावण द्वारा राम-लक्ष्मण का अपहरण , उनको पाताल लोक में ले जाना , दोनों राक्षसों की मृत्यु का रहस्य जानकर हनुमान की सहायता से उनका वध , रावण-वध , राम-सीता-लक्ष्मण का अयोध्या लौट आना , रावण-कुम्भकर्ण आदि के जन्म , तपस्या और पराक्रम की कथा जैसी घटना-ओं को इस काण्ड में लिया गया है । महाबली बालि के संदर्भ में एक और कथा भी यहां वर्णित है । बालि के पास इन्द्र-प्रदत्त एक माला थी , जिसके धारण करने पर शत्रु बलहीन हो जाता है । अतः राम सात ताल-वृक्षों को भेदकर एक सर्प को मुक्त करते हैं , जो सोते हुए बालि की माला को चुरा लाता है । तदुपरांत राम सुग्रीव से युद्ध करते हुए बालि को एक वृक्ष की ओट लेकर मार डालते हैं । बालि राम से कहता है कि आपने छिपकर मेरा वध किया , अतः आपको अपयश मिलेगा । तब राम कहते हैं कि तुमने सुग्रीव की पत्नी रूमा का उपभोग करके पाप किया है । यद्यपि तुम अपने इस पाप के कारण मारे गये हो , तथापि द्वापर में भील होकर प्रभास-क्षेत्र में तुम मेरे पैर में बाण मारोगे और इस प्रकार इस बैर का बदला लोगे । इस प्रकार रामायण की समग्र कथा तो इस कांड में आ जाती है ।

(2) यात्राकाण्डम् : श्रीराम की तीर्थ-यात्रों का वर्णन , गया में फल्गु नदी में स्नान करते हुए सीता के द्वारा दशरथ का पिण्डदान स्वीकार करना , तदुपरांत उनका पृथ्वी में अन्तर्हित हो जाना , राम द्वारा संशय करने पर दशरथ का प्रकट होकर उक्त घटना की पुष्टि करना जैसी घटनाओं को वर्णित किया गया है ।

(3) यागकाण्डम् : राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ , समागत राजाओं द्वारा राम को प्रणाम करना आदि घटनाओं को यहां लिया गया है ।

(4) विलासकाण्डम् : राम की सुंदरता से आकृष्ट हो देवांगनाओं द्वारा काम-पूर्ति की याचना , राम द्वारा वचन दिया जाना कि कृष्णावतार में वह उनकी कामना-पूर्ति करेंगे , इससे संतुष्ट होकर देव-रमणियों का प्रस्थान कर जाना , राम के तीन व्रतों की बात का उल्लेख -- 1. एक

पत्नी व्रत , 2. सत्य-भाषण और 3. एक बाण से शत्रु का संहार — आदि घटनाओं को इस काण्ड में रखा गया है ।

§5§ जन्मकाण्डम् : इस काण्ड में सीता-निर्वासन , वाल्मीकि आश्रम में लव-कुश का जन्म , राम के यज्ञ , स्वर्णिम प्रतिमा स्थापित कर 99 यज्ञों को पूरा करना , सौवें यज्ञ के समय सीता का वाल्मीकि के साथ आना, पवित्रता की शपथ लेकर पृथ्वी में अन्तर्निहित हो जाना , श्रीराम का पृथ्वी पर क्रोधित हो जाना , पृथ्वी द्वारा सीता को पुनः समर्पित करना , जैसी घटनाओं का आलेखन किया गया है । सीता-निर्वासन का एक नया कारण यहां दिया गया है । लोकोपवाद की बात चल रही थी, उन्हीं दिनों में कैकेयी सीता से पूछती है कि रावण कैसा था ? उत्तर में सीता कहती है कि मैंने उसे कभी नहीं देखा । बहुत आग्रह करने पर बताती हैं कि उसने रावण का केवल अंगूठा देखा था । [28] और आग्रह करने पर रावण के पैर के अंगूठे का चित्र सीता बना देती है -- "तथेत जानकी लेख्य तदंगुष्ठं भयानकम् । " [29] सीता के अन्यत्र चले जाने पर कैकेयी उस अंगूठे के आधार पर रावण का पूरा चित्र बना देती है और उसे राम को बताते हुए कहती है कि सीता रावण के प्रति अनुरक्त रही है । इसे सुनकर राम दुःखी होकर सीता -परित्याग का निर्णय लेते हैं ।

अन्य काण्डों में "विवाहकाण्ड" के अन्तर्गत लव-कुश के विवाहों का वर्णन ; राज्यकाण्ड में शम्बूक-वध प्रसंग , "मनोहरकाण्ड " में अयोध्यावासियों को राम के मंगलमय मनोहर उपदेशों का वर्णन और "पूर्णकाण्ड" में गयारह हजार वर्ष , ग्यारह महीने , ग्यारह दिन , ग्यारह नाड़ी और ग्यारह पल के पूर्ण होने पर ब्रह्मा की प्रार्थना पर श्रीराम का वैकुण्ठ-गमन , तदुपरांत समस्त अयोध्यावासियों का सान्तानिक लोक में जाना आदि घटनाएं उपन्यस्त की गयी हैं । [30]

"भुशुण्डिरामायण" के वक्ता और श्रोता क्रमशः ब्रह्मा और काकभुशुण्डि " हैं । इसमें चार खण्ड हैं । छत्तीस हजार श्लोकों में कथा वर्णित है । इसमें राम की बाललीला और किशोरलीला का वर्णन भागवत में वर्णित कृष्णलीला के अनुसार है । धनुष-भंग और सीता-विवाह से लेकर

रावण-वध तक की घटनाएं कमोबेश रूप से समान हैं । प्रारंभ और अन्त की कथा पर भागवत और कृष्णलीला का प्रभाव है । यहां हम केवल भिन्नत्व वाले अंशों की बात कर रहे हैं ।

1. राजा दशरथ रावण के अत्याचारों से भयभीत होकर श्रीराम आदि चार कुमारों को सरयू पार कामिका वन में सुखित गोप के यहां भेज देते हैं । दण्डकारण्यवासी सोलह हजार मुनि अवध-प्रदेश में स्थित ब्रज प्रदेश में गोपीरूप धारण करके उनके साथ महारास करते हैं । 2. जनक की पत्नी महालक्ष्मी की उपासना करती है, जिसके फलस्वरूप सीता आदि चार पुत्रियों के जन्म होते हैं । 3. सीता के सौन्दर्य की प्रशंसा सुनकर श्रीराम एक पक्षी द्वारा सीता को संदेश प्रेषित करके विवाह की इच्छा व्यक्त करते हैं । उसी पक्षी के माध्यम से सीता अपना एक चित्र श्रीराम को प्रेषित करती है । पुष्पवाटिका में राम-सीता का मिलन होता है । 4. चित्रकूट में एक बार इन्द्र-पुत्र जयंत ने सीता का अपमान करने की चेष्टा की, तब श्रीराम ने उसकी दाहिनी आंख फोड़ डाली थी । 5. भक्त शबरी के उच्छिष्ट बेर खाकर भक्ति की महिमा को प्रतिष्ठित करते हैं । 6. सीता के भूमि-प्रवेश के उपरान्त श्रीराम अयुत वर्ष तक पृथ्वी पर शासन करते हैं । अन्त में अपनी मानवी लीला संवृत्त कर श्रीराम प्रमोदवन में नित्यलीला में लीन हो जाते हैं । वहां सीता, सहजा, मंगला और सुखिता के साथ उनकी नित्यरमणलीला सदैव चलती रहती है ।[31]

/4/ महाभारत में रामकथा :

महाभारत के वनपर्व, द्रोणपर्व तथा शान्तिपर्व में रामकथा का वर्णन उपलब्ध होता है । वनपर्व में जयद्रथ द्वारा द्रौपदीहरण पर व्यथित युधिष्ठिर को सांत्वना देने हेतु मार्कण्डेय ऋषि उनको रामकथा सुनाते हैं । कथा लगभग वही है जो वाल्मीकि रामायण में है । यहां रावण के नाम की व्याख्या प्रस्तुत है -- " रावयामास लोकान् यत् तस्माद् रावण उच्यते । "[32] अर्थात् अपने अत्याचारों से सभी प्राणियों को रुलाने के कारण उसे रावण कहते थे ।

महाभारत के "द्रोणपर्व" में अभिमन्यु की मृत्यु से दुःखी युधिष्ठिर को सांत्वना प्रदान करने के लिए नारद लोकविश्रुत महापुरुषों के चरित्र सुनाते हुए कहते हैं कि ये महापुरुष अपने महान् कार्यों से अमर होते हुए भी एक न एक दिन मृत्यु के मुख में चले गये । यहां लोकविश्रुत महापुरुषोंमें रामकथा का वर्णन मिलता है । यहां बताया गया है कि रामराज्य में किसीकी अकाल मृत्यु नहीं होती थी और उस समय मनुष्य की आयु एक हजार वर्ष होती थी — " सहस्रपुत्राः पुरुषा दश वर्ष शतायुषः ।" [33] रामकथा का तीसरा प्रसंग शांतिपर्व में आता है । महाभारत-युद्ध में असंख्य जनों की आहुति से व्यथित युधिष्ठिर को श्रीकृष्ण दुष्यन्त-पुत्र भरत आदि महापुरुषों के अलौकिक कार्यों का बखान करते हुए उसी क्रम में राम का उल्लेख भी करते हैं । यहां बताया गया है कि रामराज्य में कोई व्यक्ति न अनाथ होता था न कोई स्त्री विधवा । लोगों की आयु हजारों वर्ष की होती थी । श्रीराम का वर्ण श्याम था और वे आजानबाहु थे । उन्होंने पृथ्वी पर ग्यारह हजार वर्षों तक शासन किया ।

/5/ संस्कृत-प्रबंधकाव्यों में रामकथा :

संस्कृत के प्रबंध काव्यों में महाकवि कालिदास विरचित "रघुवंश" महाकाव्य, महाकवि भट्टी द्वारा विरचित रावण-वध काव्य, सिंहल के महाकवि कुमारदास द्वारा रचित "जानकी-हरण" काव्य, महाकवि क्षेमेन्द्र द्वारा विरचित "रामायण-मंजरी" और "दशावतार-चरितम्" आदि प्रमुख काव्य हैं जिनमें रामकथा का वर्णन मिलता है ।

"रघुवंश" प्रथम शती ई.पू. का काव्य माना जाता है ।[34] उसमें सूर्यवंश की 29 पीढ़ियों के 36 राजाओं के चरित्र का वर्णन उपलब्ध है । इसके 19 सर्ग हैं । इनमें दशम् सर्ग से लेकर पंचदशम् सर्ग तक में श्रीराम के अलौकिक चरित्र का मनोहारी वर्णन प्राप्त होता है । यहां भी प्रायः उन्हीं सब घटनाओं का आलेखन मिलता है जो वाल्मीकि रामायण में है, किन्तु अयोध्यावासियों के मिथ्यापवाद के कारण राम द्वारा

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY University of Baroda

सीता-परित्याग पर रघुवंश की सीता चुप नहीं रहती है । वह लक्ष्मण से कहती है कि हे देवर ! तुम मेरी ओर से राजा रामचन्द्र से कहना कि आपने अपने समक्ष अग्नि में दग्ध मुझको विशुद्ध जानकर भी लोक-निन्दा के भय से जो मेरा परित्याग कर दिया है, क्या आपका यह आचरण लोक-विश्रुत वंश के अनुरूप है ? [35] यदि आपका तेज मेरे गर्भ में न होता और उसकी रक्षा करना मेरा धर्म न होता, तो मैं इसी समय अपने शरीर का परित्याग कर देती । [36]

भट्टी द्वारा प्रणीत रावण-वध काव्य केवल रावण-वध तक सीमित है । उसमें उत्तरकांड की घटनाएं नहीं है । यह काव्य वल्लभी-नरेश श्रीधर सेन के समय का है, अतः उसका रचना-काल पांचवीं शताब्दी माना जा सकता है । इसमें रामकथा के साथ-साथ संस्कृत के व्याकरण के नियमों की चर्चा होती रही है । इसके 22 सर्ग हैं ।

सिंहल के महाकवि कुमारदास विरचित "जानकी-हरण" काव्य संस्कृत-साहित्य का एक अमूल्य रत्न है । राजशेखर की एक सूक्ति के अनुसार "रघुवंश" के रहते हुए जानकी-हरण करने की क्षमता या तो महाबलशाली रावण में थी या फिर महाकवि कुमारदास में । [37] इसका कथानक 20 सर्ग में उपन्यस्त है । वह वाल्मीकि रामायण के प्रारंभिक छः काण्डों पर आधारित है । यहां एक तथ्य ध्यातव्य रहे कि कुमारदास रामभक्त कवि नहीं है, अतः उन्होंने राम की ~~xxxxx~~ उदात्तता का प्रतिपादन न करते हुए अनेक स्थानों पर अमर्यादित प्रणय-केलि-वर्णन किया है । उसके तृतीय सर्ग में दशरथ की प्रणय-केलि का रमणीय वर्णन हुआ है, उसी प्रकार अष्टम् सर्ग में भी राम-सीता के केलि प्रसंगों की खुलकर नियोजना की है । सोलहवें सर्ग में रावण और राक्षसों का केलि का वर्णन भी किया है ।

महाकवि क्षेमेन्द्र द्वारा प्रणीत "रामायण-मंजरी" की रचना सन् 1037 ई. में हुई थी । कथा सात काण्डों में विभक्त है और उसमें 6391 श्लोक हैं । कथा की प्रस्तुति, उक्ति-वैचित्र्य, औचित्य की सुंदर समायोजना, शब्द और अर्थ की समन्विति तथा आलंकारिक

प्रयोगों के कारण यह काव्य उल्लेखनीय रहेगा । "दशावतार-चरितम्" में महाकवि क्षेमेन्द्र ने रामकथा को नवीन रूप में प्रस्तुत किया है । इसके प्रारंभ में एक-एक श्लोक में प्रत्येक अवतार की स्तुति की गई है । उसके बाद सभी अवतारों की कथा पृथक्-पृथक् अध्यायों में दी गई है । रामावतार की कथा का वर्णन 294 श्लोक में है । कथा का आरंभ रावण के जन्म और उसकी तपस्या से होता है । एक बार रावण ने कुबेर की पुत्रवधू रम्भा के साथ अनाचार किया था , अतः क्रुद्ध होकर नलकुबेर ने रावण को शाप दिया था कि अनासक्त स्त्री के साथ बलात्कार करने पर उसकी मृत्यु हो जायेगी ।

/6/ संस्कृत-नाटकों में रामकथा 2

काव्य के उपरान्त संस्कृत नाटकों में भी रामकथा मिलती है । सर्वप्रथम भास कृत "प्रतिमा नाटक" (तृतीय शती ई.पू.) आता है , जिसमेंरामकथा का निरूपण हुआ है । उसके बाद आठवीं शताब्दी में भवभूति कृत " उत्तररामचरित नाटक " उपलब्ध होता है । इसमें उत्तरकांड की कथा कुछ अधिक विस्तार से है । लक्ष्मण-पुत्र चन्द्रकेतु अश्वमेधीय घोड़े के साथ जाते हैं । वन में लव उस घोड़े को पकड़ लेते हैं । इस पर चन्द्रकेतु और लव के बीच विवाद होता है । लव राम के संदर्भ में कुछ खरी-खरी बातें सुनाता है । फिर दोनों के बीच युद्ध होता है । श्रीराम वहाँ आकर उस युद्ध को रूकवा देते हैं । ग्यारहवीं शताब्दी में हनुमन्नाटक मिलता है । इसके दो संस्करण मिलते हैं । प्रथम संस्करण में नाटककार के रूप में दामोदर मिश्र का नाम है और द्वितीय में नाटककार के रूप में मधुसूदन मिश्र का नाम है । इस नाटक में अंगद के चरित्र में कुछ वैषम्य प्राप्त होता है । श्रीराम ने बालि का वध छिपकर किया था इस बात को लेकर अंगद का मन राम की ओर से हमेशा खिन्न रहता था , अतः रावण-वध के उपरान्त वह श्रीराम से युद्ध की इच्छा व्यक्त करता है , परन्तु तभी आकाशवाणी होती है कि वे अगले जन्म में बालि व्याध होकर श्रीराम के आगामी अवतार कृष्ण का वध करके अपनी मृत्यु का बदला स्वयं लेने वाले हैं , तब अंगद की द्वेषाग्नि शान्त होती है ।

तदुपरान्त तेरहवीं शताब्दी में पीयूषवर्षी जयदेव कृत "प्रसन्न राघव" नाटक उपलब्ध होता है । ध्यान रहे गीतगोविन्दकार जयदेव इनसे भिन्न हैं । यह एक अलंकारवादी आचार्य थे । प्रस्तुत नाटक में व्यंजना शब्द-शक्ति का भरपूर प्रयोग हुआ है । नाटक के आरंभ में नट सूत्रधार से प्रश्न करता है कि प्रायः सभी कवि श्रीराम के ही गुणों का वर्णन क्यों करते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए सूत्रधार कहता है कि इसमें कवियों का कोई दोष नहीं है । यह दोष तो उन अनिन्द्य गुण-ग्रामों का है ; जो समष्टि रूप में श्रीराम में ही निवास करते हैं । फिर भला कवि सम्पूर्ण सद्गुणों के आश्रय-स्थल श्रीराम की कथा का वर्णन क्यों न करें ? [38]

इन नाटकों में भी प्रायः वे ही सब घटनाएं हैं जो पूर्वोक्त रामायण-काव्यों में कहीं-न-कहीं वर्णित हैं, किन्तु इनको नाटकीय-कौशल के साथ अभिव्यक्त किया गया है ।

पालि , प्राकृत और अपभ्रंश काव्य में रामकथा

बौद्ध धर्म का प्राचीनतम साहित्य पालि भाषा में सुरक्षित है । गौतम बुद्ध की शिक्षाओं को ई.पू. तीसरी शताब्दी में त्रिपिटक में संगृहीत किया गया है । ये त्रिपिटक हैं — सुत्तपिटक , विनयपिटक और अभिधम्मपिटक । सुत्तपिटक में पांच निकाय हैं । इसका पंचम निकाय खुद्दक निकाय नाम से प्रसिद्ध है । खुद्दक निकाय में 15 ग्रन्थ हैं । इनमें दशम ग्रन्थ जातक के नाम से उल्लिखित है । "जातक" का अर्थ है — जन्म संबंधी । इन जातक ग्रन्थों में बुद्ध के पूर्व के 547 जन्मों की कथा निबद्ध है । इसमें रामकथा से सम्बद्ध तीन जातक उपलब्ध होते हैं — 1. दशरथ जातक, 2. अनामक जातक और 3. दशरथ कथानम । दशरथ जातक में बताया गया है कि एक बार एक गृहस्थ के पिता की मृत्यु हो गई , तब पितृ-शोक से व्यथित होकर उसने अपने गृहस्थ कर्तव्यों का त्याग कर दिया । तब गौतम बुद्ध ने उसे सांत्वना प्रदान करने के लिए जेतवन में दशरथ जातक की कथा सुनाई । इसमें राजा दशरथ को वाराणसी का राजा बताया है । दशरथ की बड़ी रानी के दो पुत्र — राम पंडित और लक्खनकुमार — और एक पुत्री — सीता देवी — थीं । इस रानी के दिवंगत होने पर

राजा ने एक अन्य रानी को ज्येष्ठा पद पर नियुक्त किया । उससे उसे भरतकुमार नामक पुत्र प्राप्त हुआ । इस रानी के षडयंत्र से भयभीत होकर दशरथ ने राम-लक्ष्मण को कहा कि वे किसी अन्य राज्य या वन में जाकर रहें और उनकी मृत्यु हो जाने पर लौटकर राज्य पर अधिकार कर लें । राजा को ज्योतिषियों ने बताया था कि उनकी आयु 12 वर्ष शेष है । अतः दशरथ ने कहा कि 12 वर्ष के पश्चात् वे लौटें । पिता की आज्ञा मानकर वे हिमालय चले गये । पुत्रशोक के कारण दशरथ की मृत्यु नौ वर्ष में ही हो गयी । पिता की मृत्यु के बाद भरत राम को वापस लौटाने के लिए आये । पिता की मृत्यु के समाचार बताकर भरत रोने लगे, किन्तु राम पंडित ने न तो शोक किया और न ही रोये । भरत के अनुरोध पर अपनी पादुकाएं उन्होंने भरत को दी और तीन वर्ष के उपरान्त वन से लौटकर अपनी बहन सीता के साथ विवाह किया ।[39]

"अनामक जातक में रामकथा के पात्रों का उल्लेख किये बिना रामायण निरूपित घटनाओं का वर्णन किया गया है । "दशरथ कथानम" में कहा गया है कि प्राचीन काल में जम्बू द्वीप में दशरथ नामक राजा राज्य करता था । उसकी तीन रानियां और चार पुत्र थे । राजा अपनी तीसरी रानी को बहुत प्यार करते थे, अतः उसके कहने पर राम को बारह वर्ष का वनवास दिया गया, हालांकि राजा ने राम को युवराज बनाया था ।

जैन धर्म का साहित्य प्राकृत और अपभ्रंश में मिलता है । विमल सूरि द्वारा रचित "पउम चरियं" प्राकृत भाषा में है । यह प्राकृत में राम-विषयक प्रथम महाकाव्य है । कवि राम को "पउम" अर्थात् "पद्म" कहते हैं । पद्म के समान नेत्र होने के कारण राम को "पउ-मुप्पल दलच्छो" कहा गया है । जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक कल्प के त्रिषष्टि महापुरुषों में 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, 9 बलदेव, 9 वासु-देव और 9 प्रतिवासुदेव होते हैं । राम, लक्ष्मण और रावण यहां क्रमशः अष्टम बलदेव, वासुदेव और प्रतिवासुदेव माने जाते हैं । वासुदेव अपने बड़े भाई बलदेव के साथ प्रति वासुदेव से युद्ध करते हैं और अन्त में उनका वध करते हैं । बाद में रविषेणाचार्य ने प्राकृत में लिखी गयी

"पउम चरियं" को सन् 660 ई. में "पद्मचरित्र" के नाम से संस्कृत में रूपान्तरित किया । परवर्ती जैन कवियों ने "पद्मचरित्र " का ही अनुकरण किया है ।

"पउमचरियं" का कथानक 118 पर्वों में विभक्त है । पर्व एक से बीस तक रावण चरित , पर्व 21 से 32 राम और सीता का जन्म तथा विवाह , पर्व 33 से 42 तक श्रीराम का वन-भ्रमण , पर्व 43 से 53 तक सीताहरण और उनका अन्वेषण , पर्व 54 से 77 तक राम-रावण युद्ध , 77 वें पर्व में बताया गया है कि रावण-वध के उपरान्त राम-लक्ष्मण रावण के महल में ही ठहरते हैं और उन कन्याओं के साथ विवाह करते हैं जिनकी मंगनी इनके साथ हो चुकी है । राम और लक्ष्मण छः वर्ष तक लंका में निवास करते हैं । पर्व 78 से 118 तक श्रीराम के जीवन की परवर्ती घटनाओं का आलेखन किया गया है । इसमें राम और लक्ष्मण की क्रमशः 8 हजार और 16 हजार पत्नियों का उल्लेख किया गया है ।

सन् 500 ई. से सन् 1000 ई. तक में हमें अपभ्रंश साहित्य मिलता है । अपभ्रंश में भी जैन राम-काव्य प्रचुरता से मिलता है , किन्तु इनमें निम्नांकित तीन कृतियाँ विशेष महत्वपूर्ण है — /1/ पउम चरिउ - रामायण पुराण — स्वयंभू , /2/ पउम चरिउ — महापुराण — पुष्पदंत और /3/ पउम चरिउ या बलहद्द चरिउ — पद्मपुराण या बलभद्रपुराण — रइधू । स्वयंभू द्वारा विरचित "पउम चरिउ" / रामायण पुराण / का रचना काल आठवीं शताब्दी है । उसके पांच कांड इस प्रकार हैं — /1/ विद्याधर काण्ड , /2/ अयोध्याकांड , /3/ सुंदरकांड , /4/ युद्ध कांड और /5/ उत्तर काण्ड । प्रस्तुत काव्य के विद्याधर कांड में रावण-चरित वर्णित है । अयोध्याकांड में सीता-विवाह से लेकर सीता-हरण तक की कथा , सुंदरकांड में सीतान्वेषण से लेकर लंका-अभियान तक की कथा , युद्धकांड में राम-रावण युद्ध की कथा तथा उत्तरकांड में राम के जीवन की परवर्ती कथा की नियोजना की गई है । "पउम चरिउ" में सीता को राजा जनक की औरस पुत्री बतलाया गया है और सीता के सहोदर भ्राता का नाम भामण्डल बतलाया गया है । [40]

"पउम चरिउ" या "महापराण" की रचना पुष्पदंत ने सन् 965 ई. में की है । उसमें 63 महापुरुषों के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है, अतः उसे "तिसटठीमहापुरिसगुणालंकारु" भी कहा जाता है । [41] 63 महापुरुषों के चरित्र-क्रम में राम का चरित्र भी वर्णित किया गया है । इसमें सीता को विद्याधर रावण और मंदोदरी की पुत्री बताया गया है । सीता-जन्म के समय की भविष्यवाणी जानकर कि यह कन्या अपने पिता पर विपत्ति लायेगी, रावण उसे एक मंजूषा में बन्द कर एक खेत में गड़वा देता है और हल चलाते हुए एक किसान को वह प्राप्त होती है । वह उसे राजा जनक को सौंप देता है । इसमें एक नया प्रसंग यह भी वर्णित है कि अशोकवाटिका में मंदोदरी अपनी पुत्री को पहचान लेती है और उसे यह आश्वासन देती है कि उसका अहित न हो पायेगा । इसमें बालि और रावण का वध लक्ष्मण द्वारा बताया गया है जिसके कारण मृत्यु के उपरान्त उसे नरक में जाना पड़ता है ।

रइधू कृत "पउम चरिउ" या "बलहद्द चरिउ" (बलभद्र पुराण) संवत् 1496 के पूर्व की रचना है । उसमें 265 कड़वक और 12 संधियां हैं । इसकी द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम से लेकर एकादश संधि तक में रामकथा वर्णित है । इसमें रावण के चरित्र को भी कुछ संयमित बताया गया है । इस प्रकार पालि-प्राकृत-अपभ्रंश के बौद्ध-जैन साहित्य में रामकथा कुछ परिवर्तित रूप में उपलब्ध होती है ।

अन्य रामायणों में रामकथा :

पूर्वोक्त संस्कृत रामायणों के अतिरिक्त तमिल भाषा के महाकवि कम्बन् द्वारा विरचित "कम्ब रामायण" या "तमिल रामायण" नौवीं शताब्दी की रचना मानी जाती है । श्रीराम ने बालि-वध का कारण, बालि के पूछने पर, अनेक रामायणों में बताया है कि अनुज-भार्या के साथ अनाचार के पापकर्म के कारण वह राजा द्वारा वध्य है, किन्तु राम ने बालि का वध छिपकर ही क्यों किया, उसका कारण मात्र "कम्ब" रामायण में है । इसमें कहा गया है कि

बालि द्वारा पूछे जाने पर लक्ष्मण बताते हैं कि तुम्हारे भाई सुग्रीव ने श्रीराम की शरण ग्रहण की थी , तब श्रीराम ने सुग्रीव को मित्र मानकर उसके शत्रु अर्थात् तुम्हें मारने की प्रतिज्ञा कर ली थी । यदि वे तुम्हारे सामने आकर तुम्हें मारते तो सम्भव था कि तुम प्राण-संकट देखकर अपने प्राणों की रक्षा के लिए उनकी शरण में आ जाते , और तब तुम्हारे वध की श्रीराम की प्रतिज्ञा-भंग होती । तुम्हें छिपकर मारने का यही उद्देश्य था । लक्ष्मण के इस उत्तर से बालि शान्त हो गया ।[43] "कम्ब रामायण" के बाद तेरहवीं शताब्दी में बुद्धनाथ द्वारा विरचित तेलुगु भाषा की रंगनाथ रामायण प्राप्त होती है । इसमें बालकाण्ड से लेकर युद्धकाण्ड तक के छः काण्ड हैं । इसमें मंथरा-प्रसंग के संदर्भ में कहा गया है कि एक बार शैशवावस्था में राम गेंद खेल रहे थे , तब मंथराने गेंद को पकड़ लिया था , इस पर राम ने डण्डा मारकर उसके एक पैर को तोड़ डाला था । अतः बाद में कैकेयी द्वारा राम को वनवास दिलवाकर वह उसका बदला लेती है ।[44] उसके उपरान्त बंगला भाषा के संत कवि कृतिवास की कृतिवास रामायण 15 वीं शताब्दी में प्राप्त होती है । इसमें राम के पुनः सीता-त्याग की बात को इस प्रकार रखा गया है — एक बार कुछ स्त्रियों के बहुत आग्रह करने पर सीता ने रावण का चित्र बनाया । उसके पश्चात् आलस्यवश वह वहाँ ही सो गयी । राम ने जब सीता के पास रावण के चित्र को देखा तो उनके मन में सीता के चरित्र के सम्बन्ध में संदेह उत्पन्न हुआ और उसके कारण उन्होंने सीता को निर्वासित किया । ध्यान रहे आनंदरामायण में इस प्रसंग को दूसरी तरह से बताया गया है ।[45] छायावाद के महाप्राण निराला ने "राम की शक्तिपूजा" काव्य में राम द्वारा शक्ति-पूजा करवायी है । उसका कारण भी यही बंगला रामायण है । इसमें राम की दुर्गापूजा का जिक्र है । 108 नील कमलों से देवी की आराधना राम को करनी थी । तब देवी राम की परीक्षा लेना चाहती है । वह अंतिम कमल चुरा लेती है । उस अपहृत कमल के स्थान पर जब राम

अपना एक नेत्र समर्पित करने के लिए उद्यत हो जाते हैं, तब देवी प्रसन्न होकर राम को रावण-विजय का वरदान देती है। इसके अलावा गुज-रात में गिरधर रामायण मिलती है। मुरारीबापू द्वारा कथित रामकथा भी अब तो उपलब्ध है। स्वतंत्र भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल राजगोपाला-चारी उर्फ राजाजी ने अंग्रेजी में रामायण और महाभारत पर आधुनिक ढंग से लिखा है।

हिन्दी रामकाव्य परंपरा

हिन्दी में रामकाव्य की एक सुदीर्घ परंपरा मिलती है। भक्तिकाल के सगुण भक्तिकाव्य में रामभक्ति-शाखा के प्रायः सभी कवियों ने रामकाव्य की रचना की है। पूर्ववर्ती पृष्ठों में हम जैन रामकाव्य की चर्चा कर चुके हैं। यदि जैन कवियों के साहित्य को आदिकाल के हिन्दी साहित्य में परिगणित कर लिया जाए तो "पउम चरिउ" से उसका प्रारंभ माना जा सकता है। चन्द बरदायी कृत "पृथ्वीराज रासो में 69 समय हैं, यहां "सर्ग" के लिए "समय" शब्द प्रयुक्त हुआ है। उसका दूसरा समय "अथ दसम " कहलाता है, क्योंकि उसमें भगवान के दशावतारों का वर्णन है। दशावतार प्रसंग में रामकथा 264 से 301 छंद में कही गई है। उसके बाद भक्तिकाल के कवियों में सूरसागर" में महाकवि सूरदास ने नवम् स्कन्ध के अंतर्गत 158 पदों में श्रीराम की कथा का वर्णन किया है। यहां रामजन्म के हेतु के संदर्भ में निर्दिष्ट किया है कि विष्णु के जय-[illegible]× विजय नामक दो पार्षद थे। सनकादिकों के शाप के कारण प्रथम जन्म में वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु हुए, दूसरे जन्म में वे ही रावण और कुंभकर्ण हुए और उनके विनाश के लिए ही भगवान को राम का अवतार धारण करना पड़ा। हिन्दी के रामभक्त कवियों में भक्त-चूड़ामणि गोस्वामी तुलसीदास प्रथम पंक्ति में आते हैं। उन्होंने बारह काव्यों का प्रणयन किया है, उनमें रामचरितमानस, गीतावली और कवितावली [illegible]×है× रामकाव्य की दृष्टि से मुख्य हैं। रचना-

क्रम की दृष्टि से उनका स्थान गीतावली , रामचरितमानस और कवितावली रहेगा । गीतावली में कवि का ललित भाव व्यक्त हुआ है । उस पर कृष्णकाव्य का अधिक प्रभाव होने के कारण उसके उत्तरकांड में सीता के दोलोत्सव और वसन्त-विहार का वर्णन है । गीतावली सप्त काण्ड में विभक्त है । उसमें भी वही रामकथा है जो मानस में कही गई है , किन्तु जहां मानस में सीता-निर्वासन का प्रसंग नहीं है , वहां इसमें यह प्रसंग एक नवीन हेतु के साथ उद्भवित हुआ है । राम चाहते हैं कि वे अपने पिता की आयु भी भोगे , क्योंकि वे अपनी आयु पूर्णतः भोगे बिना ही चले गए थे । अतः पिता की आयु भोगते समय सीता उनके साथ नहीं होनी चाहिए , इस कारण वे सीता-निर्वासन का विचार करते हैं । गीतावली में जहां सौम्य और मधुर प्रसंगों की बहुलता है , वहां कवितावली में गोस्वामीजी ने रामायण के परुष प्रसंगों को विस्तार दिया है । मानस दोहा-चौपाई में लिखा गया है , किन्तु गीतावली-कवितावली में कवि ने कवित्त और सवैयों का भी प्रयोग किया है ।

रामचरितमानस रामकाव्य परंपरा का सर्वोत्तम काव्य हैं । सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का निचोड़ उसमें आ जाता है । हमारे तमाम शास्त्रों का नवनीत मानस में संग्रहीत है । मोरेशियस में हुए विश्वहिन्दी सम्मेलन में डा. शिवमंगलसिंह ने कहा था कि यदि किन्हीं कारणों से हमारे अन्य धर्मग्रन्थ और शास्त्र विनष्ट हो जाते हैं , पर "मानस " बच जाता है , तो भारतीय संस्कृति पुनः पल्लवित हो सकती है । वाल्मीकि रामायण के पश्चात् सम्पूर्ण विश्व में "रामचरितमानस " का ही लोग गुणगान करते हैं । उत्तरभारत में तो अनपढ़ से अनपढ़ लोग भी रामचरितमानस की चौपाइयों और दोहों को सुनाते रहते हैं । बात-बात में नैतिकता के संदर्भ में वे तुलसी की चौपाइयों को उद्धृत करते हैं । उनकी कुछ चौपाइयों ने तो कहावतों का रूप धारण कर लिया है । इससे इस काव्य की लोकप्रियता स्वतः सिद्ध होती है ।

डा. नरेन्द्र कोहली ने जो रामकथा लिखी है, उसमें उन्होंने अधिकांशतः वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामायण अर्थात् "मानस" का आधार लिया है। वाल्मीकि रामायण में एक महापुरुष के रूप में, लोकनायक या आदर्श राजा के रूप में राम का चित्रण हुआ है, वहां "मानस" में राम को भगवान ही माना गया है। वाल्मीकि रामायण ऋषि-काव्य है, "मानस" भक्ति-काव्य है। उसके प्रथम अनुबन्ध (विषय) में कहा गया है —" जेहि महुं आदि मध्य अवसाना। प्रभुप्रतिपाद्य रामु भगवाना।"[46] अर्थात् रामचरितमानस के आदि, मध्य और अन्त में सर्वत्र राम का ही प्रतिपादन किया गया है। द्वितीय अनुबंध (प्रयोजन) में उसके दो प्रयोजन बताए गए हैं — कवि के स्वान्तः सुख और आत्मबोध की उपलब्धि, जीव के मोह का निवारण और लोकमंगल की सिद्धि। यथा - "स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा, भाषानिबन्ध मति मंजुल मातनोति"[47] तथा --" निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करी कथा भव सरिता तरनी।।"[48] इसके तृतीय अनुबंध (सम्बन्ध) के संदर्भ में कहा गया है कि रामचरितमानस के प्रतिपाद्य विषय और उसके प्रयोजन में साध्य-साधक भाव है।[49] उसके चतुर्थ अनुबंध (अधिकारी) के संदर्भ में गोस्वामीजी कहते हैं कि जो व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति से युक्त और सत्संग-प्रेमी है एवं जिनके हृदय में श्रीराम के प्रति अनुराग है तथा उनकी कथा सुनने की लालसा है; वे ही व्यक्ति रामकथा के अधिकारी हैं। यथा —
"रामकथा के तेइ अधिकारी। जिनकें सतसंगति अति प्यारी।।
गुरुपद प्रीति नीतिरत जेई। द्विज सेवक अधिकारी तेई।।"[50]

श्रीराम के अवतार-धारण के यहां चार कारण बताए गए हैं -- 1. जय-विजय को मुक्ति दिलाने, 2. जलन्धर की पत्नी के शाप के कारण, 3, नारद के शाप के कारण और 4. स्वयंभू मनु और शतरूपा के तप के कारण उनके पुत्ररूप में अवतार धारण करना। इस प्रकार यहां भी उन्होंने एतद्विषयक नाना कथाओं का समन्वय किया है।

"मानस में निम्नलिखित घटनाओं का वर्णन है -- अपने अंशों सहित श्रीराम का दशरथ के यहां जन्म लेना , ताड़का-सुबाहु वध , मारीच को समुद्र किनारे फेंक देना , अहल्या उद्धार , विश्वामित्र के साथ जनकपुर पहुंचना , पंचपवाटिका में सीता को मिलना , शिव-धनुष भंग , परशुराम का मान-मर्दन , सरस्वती के माध्यम से मंथरा को द्वेषाग्नि से प्रज्वलित कर दिग्भ्रमित कैकेयी द्वारा दो वरों को मांगना , राम-लक्ष्मण-सीता का वनवास , शूर्पणखा को विरूप करना , खर-दूषण-त्रिशिरा का वध , राम के विषय में रावण का सोचना , श्रीराम की ईश्वरता की परीक्षा , रावण को विफल करने हेतु राम द्वारा अज्ञानता की लीला करना , सामान्य क्षत्रियकुमार समझकर रावण द्वारा छाया-सीता का हरण , मूल सीता का अग्नि में प्रविष्ट हो जाना , सीता अन्वेषण , शबरी से भेंट , नवधा भक्ति का उपदेश , सुग्रीव का राम की शरण में आना , बालि-वध , सेतु-निर्माण , लंका पर चढ़ाई , मेघनाद द्वारा वीरघातिनी शक्ति-प्रहार से लक्ष्मण का मूर्छित हो जाना , सुषेण के मार्गदर्शनानुसार हनुमान का द्रोणगिरि से संजीवनी बूटी लाना , लक्ष्मण के प्राणों की रक्षा , हनुमान द्वारा कालनेमि का वध , कुम्भ-का वध , मेघनाद द्वारा राम को नागपाश , गरुड़ द्वारा मुक्ति , निकुम्भिला-यज्ञ करते समय लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का वध , रावण का युद्धभूमि पर आना , रावण द्वारा विभीषण पर प्रहार , राम का उसे अपने ऊपर ले लेना , कुछ समय के लिए राम का मूर्छित हो जाना , रावण की नाभि में स्थित अमृत को बाण द्वारा सोख लेना , रावण-वध , विभीषण का राज्याभिषेक , राम-राज्य की चर्चा , राम द्वारा करोड़ों अश्वमेध यज्ञ करना आदि आदि । यद्यपि गोस्वामीजी ने मानस में कहीं सीता-निर्वासन की बात नहीं की है , किन्तु इस संदर्भ में कुछ संकेत अवश्य दिए हैं । कवि ने रजक के अघ की चर्चा की है । उसी प्रकार उन्होंने तीनों भाइयों के दो- दो पुत्रों की चर्चा की है , किन्तु श्रीराम के बजाय सीता के दो पुत्रों की बात कही है । तत्कालीन परंपरा के अनुसार स्त्री जब पितृगृह में होती है , तब माता के नाम से उसके पुत्रों का परिचय दिया जाता है । मानस में गोस्वामीजी ने

श्रीराम के परधामगमन की कथा भी नहीं कही है , क्योंकि वे मानते थे कि अणु-अणु में व्याप्त परब्रह्म का परधाम कैसा ?

भक्तिकाल के उपरान्त रीतिकाल में केशवदास विरचित रामचन्द्रिका , श्रीलालदास कृत "अवध-विलास " , चन्ददास कृत रामविनोद { चन्ददास रामायण } आदि काव्य रामकाव्य-परंपरा में प्राप्त होते हैं ।

रीतिकाल के उपरान्त आधुनिक काल आता है । आधुनिक काल में नवजागरण के कारण अनेक नयी अवधारणाएं आती हैं , राज-नीतिक गतिविधियाँ भी जन-जीवन को आंदोलित करती हैं , गांधीजी का आविर्भाव और गांधीवादी विचारधारा भी जीवन व साहित्य को प्रभावित करते हैं । फलतः रामकाव्य में भी कुछ नवीन अवधारणाओं का समावेश होता है । आधुनिक काल में रामकथा मैथिलीशरण गुप्त विरचित महाकाव्य "साकेत " , डा. बलदेवप्रसाद मिश्र द्वारा प्रणीत xxxx "कोशल-किशोर " साकेत-सन्त" और "राम-राज्य " ; महाप्राण निराला विरचित "राम की शक्तिपूजा " , अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध कृत "वैदेही-वनवास " , बालकृष्ण शर्मा "नवीन" कृत "उर्मिला", मनबोधनलाल श्रीवास्तव कृत "भगवान राम " , राजाराम शुक्ल प्रणीत "जानकी-जीवन" , श्रीरामावतार अरुण xxxxxx पोद्दार विरचित "अरुण रामायण " , केदारनाथ मिश्र "प्रभात" विरचित "कैकेयी" , नरेश मेहता कृत "संशय की एक रात " , रघुवीरशरण "मित्र" कृत "भूमिजा " आदि xxxxxxxxxxxx काव्यों में उप-लब्ध होती है । कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर की "काव्येर उपेक्षिता" तथा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के " कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता " नामक लेखों से प्रभावित होकर इधर कवियों ने रामायण के उर्मिला के पात्र को अपनी चेतना के केन्द्र में रखा है । गुप्तजी द्वारा विरचित साकेत काव्य में नवम् सर्ग के अन्तर्गत उर्मिला की विरह-वेदना पर कवि का ध्यान अधिक केन्द्रित रहा है । कैकेयी आदि पात्रों का भी कुछ मार्जन हुआ है । गुप्तजी ने कैकेयी के पश्चाताप के द्वारा उस पात्र को कुछ उदात्त बनाने की चेष्टा की है । इसके

अतिरिक्त नारी-विमर्श विषयक चिंतन के कारण कवियों का ध्यान सीता की ओर भी अधिक गया है । "जानकी-जीवन" और "भूमिजा" जैसे खण्डकाव्य इसके परिणामस्वरूप हैं । दलित-विमर्श के कारण भी राम-काव्य को एक अलग दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति मिलती है । जगदीश गुप्त द्वारा प्रणीत "शम्बूक " तथा - नरेश मेहता विरचित "शबरी" आदि काव्य इसके प्रमाण हैं । [51]

रामकथा पर आधारित हिन्दी उपन्यास :

आधुनिक काल में गद्य का आविर्भाव हुआ । गद्य के विकास के साथ अनेक गद्य-विधाएं भी सामने आयीं । उपन्यास भी उनमें से एक है । आधुनिक काल के पूर्व रामकथा हमें अधिकांशतः पद्य में ही उपलब्ध होती है, परन्तु आधुनिक का ल में गद्य के आविर्भाव के कारण और उपन्यास के उद्भव के कारण अब रामकथा उपन्यासों भी मिलने लगी है । यह और बात है कि उपन्यास के यथार्थ के तकाजे के कारण अब उसमें आधुनिक - तार्किक अर्थघटन का समावेश होने लगा है ।

रामकथा पर आधारित उपन्यासों में डा॰ नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों के अतिरिक्त आचार्य चतुरसेन शास्त्री कृत "वयं रक्षामः" , अमृतलाल नागर कृत " मानस का हंस " , भगवतीशरण मिश्र कृत पवनपुत्र " , भगवानसिंह कृत " अपने अपने राम " , युगेश्वर कृत "सीता एक जीवन " , हनुमान एक जीवन " , "राम एक जीवन" "रावण एक जीवन" आदि उपन्यास समाविष्ट होते हैं । "वयं रक्षामः" रावण की दृष्टि से लिखा गया उपन्यास है । "मानस का हंस" यों तो गोस्वामी तुलसीदास पर आधारित उपन्यास है, पर प्रकारान्तर से उसमें रामकथा का भी आलेखन मिलता है । "पवनपुत्र" हनुमान पर आधारित उपन्यास है, अतः उसमें भी परोक्षतः राम-का चरित्र वर्णित है । "अपने अपने राम" में कथा को नये संदर्भ दिए गए हैं और मिथक के प्रयोग ने भाषा को लालित्य प्रदान किया है । डा. नामवरसिंह उसके संदर्भ में कहते हैं --" "अपने अपने राम" वस्तुतः

एक विशाल ~~षड्यन्त्र~~ षड्यन्त्र कथा है जिसका ताना-बाना लेखक ने बड़ी बारीकी से बुना है। इसलिए अति-परिचित कथा में भी आदि से अन्ततक कुतूहल बना रहता है और बहुत कुछ "डिटेक्टीव" का-सा मजा आता है। वसिष्ठ के जासूस हर जगह हैं।" 52 अन्य उपन्यास सामान्य प्रकार के हैं।

रामायण की कथा पर आधारित डा. कोहली के उपन्यास :

डा. नरेन्द्र कोहली के लेखन का प्रारंभ एक व्यंग्यकार के रूप में हुआ था, इसे हम पूर्ववर्ती पृष्ठों में रेखांकित कर चुके हैं। रामायण पर आधारित उपन्यास-माला का प्रथम उपन्यास "दीक्षा" लिखने से पूर्व लेखक "आतंक" नामक उपन्यास लिख चुके थे जिसमें उन्होंने समकालीन जीवन का यथार्थ चित्रित किया था। "आतंक" पर "कृति" की जो गोष्ठी हुई उसमें मित्रों ने बताया कि इसमें राजनीतिक-सामाजिक भ्रष्टाचार की निराशा ही निराशा है, आशा की कोई किरण नहीं है। उसमें कोई ऐसा आदर्श चरित्र होना चाहिए, जो समाज को इस स्थिति से उबार ले। लेखक उन दिनों भयंकर मानसिक उहापोह से ग्रस्त थे। कालेज में आयेदिन गुंडागर्दी की कोई-न-कोई घटना घटित होती थी। लेकिन प्राध्यापकों में कोई प्रतिक्रिया नहीं थे। वे चुपचाप किनारे खड़े तमाशा देख रहे थे। लेखक बराबर महसूस करते हैं कि " बुद्धिजीवियों के इस वर्ग में चिंतन ही है, कर्म नहीं। उन्हें अपने कर्म के लिए कोई और व्यक्ति चाहिए। ऐसा ही चरित्र "आतंक" के डा. राजेश कपिला ~~है~~ का है। लोगों ने अनेक बार मुझसे पूछा है कि क्या मैंने आत्मकथा लिखी है। उन्हें समझा नहीं पाता कि वह सारे बुद्धिजीवी वर्ग की आत्म-कथा है, जिनमें से मैं भी एक हूं।" 53 डा. राजेश कपिला सबकुछ देखता है, उसका विश्लेषण करता है, कुछ निष्कर्षों पर पहुंचता है, किन्तु कर कुछ नहीं सकता।

उन्हीं दिनों में तीन घटनाएं होती है जो लेखक के मानसिक चिंतन को जोरों से झकझोरती हैं । पहली घटना उनके कालेज में घटित होती है , जिसमें कुछ गुण्डेनुमा लड़के ढाई-तीन सौ विद्यार्थियों की भीड़ में एक लड़के पर चाकू के तीन वार करके भाग जाते हैं । संयोग से लेखक भी वहां उपस्थित थे । मारने वाले भाग गये । घायल लड़के को अस्पताल पहुंचाया गया । किन्तु तीन दिन के बाद भी पुलिस की ओर से कोई अधिकारी इस घटना की छानबीन के लिए नहीं आया । पूछताछ करने पर पता चला कि आक्रमण की योजना पहले से बन गई थी , पुलिस थाने में सूचना भी दे दी गई थी और भेंट-पूजा भी अग्रिम रूप से पहुंचा दी गई थी । दूसरी घटना बिहार के एक गांव की थी जिसमें कुछ तथाकथित कुलीन राजपूतों ने हरिजन कन्याओं से आत्समर्पण चाहा और उनके द्वारा तिरस्कृत होने पर उन लोगों ने उनकी झोंपड़ियों में आग लगा दी , पुरुषों को जीवित जला दिया , स्त्रियों का शीलभंग किया और उन्हीं की जलती हुई झोंपड़ियों की आग में तपाकर लौह-शलाकाओं से उन हरिजन स्त्रियों के गुप्तांगों पर उनकी जाति चिह्नित कर दी गई । यह वही बिहार था , जहां विश्वामित्र राम को अपने आश्रम में यज्ञ-रक्षा हेतु लाए थे , यह वही बिहार था जहां सीरध्वज जनक का राज्य था । और तीसरी घटना बांगलादेश के युद्ध की थी । बांगलादेश-युद्ध में एक ओर राक्षसी क्रूरताएं और अत्याचार थे , दूसरी ओर बुद्धिजीवियों का अत्याचार विरोध और सत्य के पक्ष में उनका बलिदान । लेखक के मन में इन तथ्यों की पृष्ठभूमि में रामकथा निर्मित होने लगी । इस संदर्भ में स्वयं डा॰ कोहली कहते हैं -- " सामान्यतः हम प्रत्येक युद्ध को महाभारत के साथ जोड़ने के अभ्यस्त हैं , किन्तु बांगलादेश का युद्ध रामायण के ही निकट है । बांगलादेश में अपने देश का हित सोचने वाले बुद्धिजीवी अमरीका की आंखों में कांटे-सरीखे खटक रहे थे । क्यों ? क्योंकि पाकिस्तानी अत्याचारी अमरीका के भाईबंधु थे और बांगलादेश के बुद्धिजीवी उनके मार्ग की बाधा थे । मेरे

मन में स्पष्ट होने लगा कि बनवासी ऋषि किस प्रकार लंका में बैठे रावण×××× के मार्ग की बाधा थे । यह पहला युद्ध था जिसमें भारत की सेना किसी अन्य देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने गई थी और विजय प्राप्त कर शासन का अधिकार उस देश की जनता के हाथों में दे आयी थी — जैसे राम किष्किंधा को सुग्रीव के हाथों और लंका को विभीषण कें हाथों में सौंप आए थे । तब मेरे मन में बांगला देश के बुद्धिजीवियों के साथ "आतंक " का डा. राजेश कपिला जुड़ गया और उन सबका स्वरूप विश्वामित्र जैसा हो गया । विश्वामित्र जहां कहीं होगा , वह मानव का हित सोचेगा , अतः अनायास या सायास , पूंजी के बल पर शोषण करने वाले , सोने की लंका के स्वामी का शत्रु हो जाएगा । रावण विश्वामित्र पर प्रहार करेगा ही, और विश्वामित्र को अपने पक्ष में लड़ने के लिए राम को"दीक्षित " करना ही होगा ।" [54]

इस प्रकार रामायण की कथा लेखक के मन में अंकुराने लगी । उनका अपना ही कालेज सिद्धाश्रम में बदल गया और उनका वह छात्र , वह घायल लड़का सुकंठ बनकर लेखक की कल्पना के सामने मानो लेट गया । लेखक स्वयं विश्वामित्र के रूप में कि कालेज का यह सारा वर्ग — छात्र-छात्राएं — कालेज के अध्यापकों के संरक्षण में हैं , लेकिन ये अध्यापक क्या कर पाते हैं ? विश्वामित्र ने शासकीय सहायता के लिए आजानबाहु को भेजा , तो वह बहुलाश्व और उसके पुत्र देवप्रिय की घटना की सूचना ले आए । बिहार के उस गांव की हरिजन कन्याएं , उनके घर के पुरुष , ये सब मानो लेखक के सामने उपस्थित हो गए । और तब विश्वामित्र ने वह सब सोचा , जो लेखक ने अपने परिवेश में देखा , पढ़ा , सुना और समझा था । इस प्रकार "दीक्षा " का पहला अध्याय तैयार हो गया ।

"दीक्षा" लिखने से पहले लेखक की जो मनःस्थिति थी उसका वर्णन स्वयं लेखक इस प्रकार दे रहे हैं —" "दीक्षा" लिखते हुए मेरे मन में अपना वर्तमान था , अपना परिवेश था , अपनी मान्यताएं थीं ,

उसके चमत्कार तथा अलौकिकता थी । और मैं उपन्यास लिख रहा था — उपन्यास, अर्थात् अपने युग की समस्याओं को अपने युग की कथा के माध्यम से अपने युग के लोगों तक अपनी टिप्पणियों के साथ पहुंचाने का प्रयत्न । उस कथा की घटनाओं तथा चरित्रों को समकालीन मनोविज्ञान, चिंतन तथा संस्कृति में ढालना था । [55] इस प्रकार कुछेक वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों से उद्वेलित होकर लेखक ने रामायण को लेकर उपन्यास-माला लिखने का विचार किया और फिर पूरी तरह से दत्तचित्त होकर उसमें जुट गये ।

दीक्षा :
=====

"दीक्षा" डा. नरेन्द्र कोहली का पहला पौराणिक उपन्यास है । उसकी अभूतपूर्व सफलता से प्रेरित होकर बाद में उन्होंने रामकथा को आगे बढ़ाया । वैसे लेखक के सर्जक मन ने रामकथा का एक व्यवस्थित ढांचा बना लिया था । "उपन्यास" दो तरह से लिखा जाता है, एक व्यवस्थित योजना बनाकर, योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना, यह तरीका ~~डा~~ भगवतीचरण वर्मा का है ; और दूसरे एक बिन्दु से कथा की शुरूआत करके, कथा-प्रवाह में स्वयं को छोड़ देना । यह दूसरा तरीका जैनेन्द्र का है । कहना न होगा कि डा. नरेन्द्र कोहली का तरीका वह पहले प्रकार वाला है ।

इस संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं —" मेरे सर्जक मन ने रामकथा के जिस रूप को देखा था, उसके चार खण्ड बन रहे थे । पहला खण्ड वह था जहां विश्वामित्र ने पीड़ित मानवता की सहायता की दीक्षा दी । दूसरा खण्ड वह था, जहां अपने घरेलू झगड़ों के कारण राम को वन जाकर पीड़ित मानवता के संपर्क में आने का अवसर मिला । तीसरे खण्ड में वे अपने संकल्प के कारण राक्षस-विरोधी शिविर में खड़े दिखाई दिए और राक्षसों से संघर्ष आरंभ हुआ । चौथे खण्ड में राक्षसों की केन्द्रीय शक्ति — रावण से उनका युद्ध हुआ । इन्हीं कारणों से मैंने उन चारों उपन्यासों के नाम "दीक्षा", "अवसर", " संघर्ष की

और " तथा "युद्ध" रखे । ..."दीक्षा " लिखते हुए मेरे मन में इच्छा तो थी कि ये चारों उपन्यास शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करूं, किन्तु यह विश्वास नहीं था कि ये चारों उपन्यास ठीक-ठीक कभी लिखे भी जायेंगे । इसलिए मन को समझा लिया था कि मैंने चार स्वतंत्र उपन्यास लिखने की योजना बनाई है । किसी कारणवश यदि चारों न लिखे गए, तो एक, दो, तीन -- जितने भी लिखे जाएंगे वे अपने आप में स्वतंत्र तथा पूर्ण उपन्यास होंगे, अतः कोई हानि नहीं हो सकेगी ।" [56]

रामकथा लिखना लेखक के लिए एक चुनौती भरा काम था । ये चुनौतियां रामकथा के भीतर भी थीं और बाहर भी थीं । भीतर की चुनौतियों में रामकथा का पौराणिक रूप, उसके मिथक, उसकी चमत्कारपूर्ण घटनाएं -- जिन पर भक्तों और श्रद्धालुओं को तो विश्वास बैठ सकता है, लेकिन जो वैज्ञानिक सोच रख सकता है, वह भला क्यों उन पर विश्वास करेगा -- और बाहर की चुनौतियों में सबसे बड़ी चुनौती तो यह थी कि जिस कथा को देश के बुद्धिजीवियों द्वारा पुरानी, पिछड़ी हुई, सामन्ती मूल्यों की पोषक तथा अमानवीय घटिया मूल्यों की प्रतिष्ठापक मान लिया गया है, जिस पर लिखना न आधुनिक माना जाएगा, न फैशनेबुल । ऐसी स्थिति में कुछ लोगों के लिए वे हास्यास्पद भी बन सकते थे । राम के उन पक्षों पर तो लिख सकते हैं जिन पर प्रहार किया जा सकता है, पर लाख प्रगतिशील मानते हुए भी लेखक के अपने कुछ संस्कार ऐसे थे जिनके रहते वे राम पर प्रहारात्मक प्रकार का साहित्य तो वे नहीं ही लिख सकते थे । उनके यहां सुंदरकांड और रामचरितमानस का पाठ भी होता था । लेखक राम को पीड़ित मानवता का पक्षधर मानते थे और उसके उसी रूप को चित्रित करना चाहते थे, यही उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी । "कृति" की गोष्ठी में जब "दीक्षा" के कुछ अंश सुनाए गए तो कई तरह की आपत्तियां उठाई गईं । कुछ मित्रों ने तो यहां तक

कह डाला कि "इन तिलों में तेल नहीं है " , लेकिन लेखक को इन तिलों में भरपूर धाराप्रवाह तेल दिख रहा था । "कृति" की उस गोष्ठी में स्वर्गीय भारतभूषण अग्रवाल भी लेखक के सद्भाग्य से आए हुए थे । वे अपने संतुलित ढंग से कुछ वाक्यों में जो उसकी प्रशंसा कर गए , उनसे लेखक को बहुत ही बल मिला । उन्होंने "दीक्षा" को पूरा किया । उनका यह उपन्यास अनेक प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा अस्वीकृत हुआ , अन्ततः सन् 1975 के अंत तक वह पराग प्रकाशन , दिल्ली से प्रकाशित हुआ । बाद में 1976-79 के बीच उनकी राम-कथा के शेष भाग -- "अवसर" , "संघर्ष की ओर " और "युद्ध" भी प्रकाशित हुए । अब ये चारों उपन्यास "अभ्युदय" खण्ड-1 और 2 में संकलित होकर अभिरूचि प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हो गए हैं । और इस तरह हम देख रहे हैं कि यदि लेखक में दम है , साहस है और प्रतिभा है तो वह ऐसे तिलों से भी तेल निकाल सकता है ।

रामायण की रामकथा अयोध्या से शुरू होती है , जब कि प्रस्तुत उपन्यास में विश्वामित्र के आश्रम से उसका प्रारंभ होता है । कथा भी विश्वामित्र के इर्दगिर्द ही चक्कर काटती है । विश्वामित्र के पास एक लम्बी कहानी है , जो रामकथा की नूतन व्याख्या करती है । यह व्याख्या इतनी सटीक है कि इसमें कथारस की रक्षा तो होती ही है , उसमें बुद्धि , तर्क , विज्ञान , विवेक और घटनाओं की संगति भी है । इसमें लेखक ने पाकिस्तानी सेनाओं के नृशंस अत्याचारों से पीड़ित निरीह जनता की पीड़ा को राम-रावण के युद्ध के संदर्भ में देखने और दिखाने का संनिष्ठ प्रयास किया है । उपन्यास का प्रारंभ विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से शुरू होता है । राक्षसों ने फिर आतंक मचाया है । उनका एक शिष्य नक्षत्र बुरी तरह से मारा गया है । यथा --" समाचार सुना और विश्वामित्र एकदम क्षुब्ध हो उठे । उनकी आँखें , ललाट , कपोल -- क्षोभ से लाल हो गये । क्षणभर समाचार लाने वाले शिष्य पुनर्वसु को बेध्यान घूरते रहे ; और सहसा उनके नेत्र झुककर पृथ्वी पर टिक गये । अस्फुट-से स्वर में

उन्होंने कहा , "असह्य ! " [57] नक्षत्र को देखकर , जिस निर्दयता और नृशंसता से उसको मारा गया था , उसे देखकर ऋषि अत्यन्त क्षुब्ध और व्यथित हो जाते हैं ।" विश्वामित्र का मन हुआ कि वे अपनी आँखें फेर लें । पर आँखें थीं कि नक्षत्र के क्षत-विक्षत चेहरे से चिपक गयी थीं ; और नक्षत्र की भयविदीर्ण मृत पुतलियाँ कहीं उनके मन में जलती लौह-शलाकाओं के समान चुभ गयी थी ; अब वे न अपनी आँखें फेर सकेंगे और न उन्हें मूंद ही सकेंगे । बहुत दिनों तक उन्होंने अपनी आँखें मूंदे रखी थी -- अब वे और अधिक उपेक्षा नहीं कर सकते । कोई-न कोई व्यवस्था उन्हें करनी पड़ेगी ..." [58] यहां से विश्वामित्र के मन में एक उहापोह शुरू हो जाता है --" क्या अपनी शांति के लिए , अपने आश्रमवासियों की रक्षा के लिए , राक्षसों से समझौता कर लूं ? क्या उनकी बात मान लूं ? क्या अपना शस्त्र-ज्ञान उन्हें समर्पित कर मैं एक और शुक्राचार्य बन जाऊं ? भृगुओं और भरतों का समस्त शस्त्र , औषध तथा अश्वपालन सम्बन्धी ज्ञान देकर इन्हें और भी शक्तिशाली बना दूं ? क्या मैं भी उनमें से एक ही हो जाऊं ? राक्षसी वृत्तियों को निर्बाध पनपने दूं ? अपने आश्रम से आर्य-संस्कृति को निष्कासित कर , उसे xxxxराक्षस-संस्कृति का गढ़ बन जाने दूं ?" [59] प्रश्न , प्रश्न और निरंतर प्रश्न । इन्हीं प्रश्नों के समाधान के लिए वे दशरथ के पास जाकर राम-लक्ष्मण को मांग लाते हैं , ताकि उन्हें दीक्षित कर वे इन राक्षसी-आसुरी शक्तियों का सामना कर सकें । चाणक्य ने भी वही किया था । चन्द्रगुप्त मौर्य को x xxxxx शिक्षित - दीक्षित करके धननंद का नाश करके अपने अपमान का प्रतिशोध किया था । किन्तु वहां चाणक्य की चिन्ता वैयक्तिक थी , यहां विश्वामित्र की चिन्ता समष्टिगत है । वे त्रस्त , आतंकित मानवता को , क्रूर-राक्षसी शक्तियों से बचाना चाहते हैं । इस प्रकार "आतंक " का डा॰ कपिला यहां विश्वामित्र के रूप में सामने आता है । दूसरे शब्दों में कहें तो लेखक के भीतर का बुद्धिजीवी यहां xxxxx विश्वामित्र हो गया है । वस्तुतः पौराणिक ग्रन्थों

की मिथक कथाएं इस तरह की होती हैं कि प्रत्येक युग का चिंतक उसकी व्याख्या अपने ढंग से करता है । यही कारण है कि उनका मिथकत्व कभी चूकता नहीं है । स्वयं डा. नरेन्द्र इस संदर्भ में कहते हैं —" पुराणों और पौराणिक ग्रन्थों में केवल इस जीवन को और अपने काल को ही . सृष्टि की सीमा नहीं माना गया है । उनके सम्मुख एक विराट् सृष्टि है । असीम देश और काल है । इस जीवन के साथ ही सबकुछ समाप्त नहीं हो जाता । अनन्त लोक है और काल भी अनन्त है । उसको समग्रता में देखने से ही जीवन की परख होती है ।" 60

डा. नरेन्द्र कोहली ने भी प्रचलित-परंपरागत रामकथा के कई मिथकों को तोड़ते हुए उसे एक नया रूप दिया है । रामचरितमानस में तुलसीदास ने लिखा है कि गुरु-गृह पढ़ने जाकर राम ने थोड़े समय में ही कई सारी विद्याओं को आत्मसात कर लिया था । फिर विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए उनको मांगकर ले गए थे । इस प्रकार कुलगुरु वसिष्ठ को परंपरागत विद्या में जो कमी रह गई थी उसकी पूर्ति विश्वामित्र करते हैं । वह ब्राह्मण गुरु की शिक्षा थी , यह क्षत्रिय राजर्षि गुरु की दीक्षा थी , क्रान्तिकारी दीक्षा , जीवन को उसकी समग्रता में जीने की दीक्षा , और इसीलिए उसका "दीक्षा" शीर्षक सार्थक हुआ है । वसिष्ठ प्राचीनता और पुरातनता के प्रतीक हैं , विश्वामित्र नवीनता के , ~~xxxxx~~ प्रयोगधर्मिता के प्रतीक है । जीवन को निरंतर प्रयोगों की आवश्यकता रहती है । प्राचीनता और पुरातनता को भी इन्हीं प्रयोगों पर परीक्षित करते रहना चाहिए , यह विश्वामित्र का पक्ष था । यह उस नयी दीक्षा का ही प्रभाव था कि कई स्थानों पर राम परंपरागत कुल-मर्यादा की लीक को छोड़ते हुए दृष्टिगोचर होते हैं । समष्टि-कल्याण के लिए नारी-वध करने में वे हिचकिचाते नहीं है । कलंकिनी नारी अहल्या का उद्धार करते हैं । अज्ञातकुलशीला सीता का वरण करते हैं । राज्य का सुख त्यागकर जंगल में जाते हैं , अछूतों का उद्धार करते हैं , "वानरी-सेना" को जुटाते हैं । धर्मजीवी और परंपरावादी कुल के एक क्षत्रियकुमार को अपने समय के क्रान्तिकारी

विश्वामित्र अपनी तरह से दीक्षित करके उन्हें जननायक बना देते है , इस तथ्य को डा. कोहली इस प्रकार उपन्यस्त करते हैं कि वह कहीं से भी आरोपित या गढंत नहीं लगता है । राक्षसों के बढ़ते अत्याचार, विश्वामित्र द्वारा राजा दशरथ के सम्मुख राम-लक्ष्मण की याचना , सिद्धाश्रम में राक्षसों से युद्ध , यज्ञ रक्षा , दशरथ के सेनापति से पीड़ित निषादों की रक्षा , सेनापति और उसके पुत्र को दंडित करना , राक्षसों द्वारा अपहृत युवतियों का उद्धार , कलंकिनी और पतिता समझी जाने वाली पति-परित्यक्ता अहिल्या का उद्धार , सीता-स्वयंवर , उसी संदर्भ में सीता को वीर्यशुल्का घोषित करने वाली बात , विवाह के उपरान्त परशुराम का मान-मर्दन आदि घटनाओं को लेखक ने आधुनिक संदर्भ में तर्क-संगतता के साथ प्रस्तुत किया है ।

लेखक ने रामकथा की प्रमुख घटनाओं को लिया है , पर उसका चित्रण और अर्थघटन अपने ढंग से किया है । राम-xxxxxxxx लक्ष्मण के शैशव की कथा लिखते समय लेखक का ध्यान अपने-घर परिवार की ओर जाता है । "पुनरारंभ" पुनः एक बार उनकी स्मृति में आ गया । अतः कौसल्या का चित्रण कामुक राजा दशरथ की प्रथम और उपेक्षित पत्नी के रूप में हुआ है । राम उनके पुत्र और लक्ष्मण अडिग प्रेम करने वाला भाई । दशरथ का सारा प्रेम कैकेयी के लिए था । अतः सुमित्रा की उपेक्षा ही हुई होगी । दो उपेक्षित माताओं के पुत्रों में प्रेम-भाव सहज और मनोविज्ञान की दृष्टि से तर्कसंगत ही माना जायेगा । लेखक के दादा ने भी कामुकतावश तीन विवाह किए थे । लेखक की दादी उनकी पहली और उपेक्षिता पत्नी थीं , जो उनके साथ कम , उनसे अलग ज्यादा रहीं । लेखक के पिता और चाचा ही नहीं , उनके दूसरे बड़े भाई-बहन भी दूसरी दादी से खासे पीड़ित और प्रताड़ित रहे हैं । अतः लेखक के सामने राम-लक्ष्मण के शैशव का और दूसरा क्या रूप हो सकता था । लेखक के पिता छोटी दादी के हाथों कई बार पिट चुके थे , तो राम को कैकेयी ने क्यों न xxxx पीटा होगा । अतः कौशल्या और कैकेयी के चित्रण में लेखक की दोनों

दादियाँ ही उभरकर आयी हैं । [61]

रामकथा एक प्रख्यात कथा है -- जन-विश्रुत कथा । भारत तथा बृहद्-भारत में उसके कई-कई रूप मिलते हैं । उत्तर-भारत में तो बाकायदा रामलीलाएं होती हैं । ऐसे में उसकी घटनाओं और तथ्यों में बहुत ज्यादा बदलाव नहीं ला सकते । जो बात ऐतिहासिक उपन्यासों पर लागू होती है कि उसमें ऐतिहासिक तथ्यों के साथ लेखक खिलवाड़ नहीं कर सकता ; वही बात पौराणिक उपन्यासों को भी लागू होती है कि पौराणिक उपन्यासकार पुराणों में उल्लिखित घटनाओं और तथ्यों को मनचाहे ढंग से तोड़-मरोड़ नहीं सकता । तथापि लेखक ने कहीं-कहीं परिवर्तन किए हैं । लेखक का कथन है कि सम्पूर्ण वाल्मीकीय रामायण में उनको उर्मिला कहीं नजर नहीं आती । [62] अतः लेखक ने लक्ष्मण को अविवाहित ही माना है । उन्होंने उसे राम का समवयस्क भी नहीं माना है । उन्होंने लक्ष्मण को छोटा बताया है और दशरथ के पुत्रेष्टि पुत्रेष्टि यज्ञवाली बात को तत्कालीन राजाओं की एक रूढ़ि ही माना है । [63]

राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ सिद्धाश्रम आते हैं । रास्ते भर विश्वामित्र राम को दीक्षा देते रहते हैं और साथ ही साथ राम को अपनी सूक्ष्म विश्लेषक दृष्टि से तौलते भी रहते हैं कि वह सचमुच में उनके विश्वास के लायक हैं कि नहीं । क्या उनको दिव्यास्त्रों का ज्ञान ज्ञान दिया जा सकता है ? क्या वह उसका अनुचित प्रयोग तो नहीं करेंगे ? और पूर्णतया आश्वस्त होने के उपरान्त विश्वामित्र राम को शस्त्रास्त्रों का प्रशिक्षण और उनकी परिचालन विधि समझाते हैं । यथा --

" रघुनंदन ! तुम्हारा कल्याण हो । यह दिव्य और महान दंडचक्र , यह धर्मचक्र , यह कालचक्र , यह विष्णुचक्र तथा यह अत्यन्त भयंकर ऐन्द्रचक्र है । यह ऐषीकास्त्र और यह परम उत्तम ब्रह्मास्त्र है । पुत्र ! ये मोदकी और शिखरी नामक गदाएं हैं । पुरुष सिंह ! ये

धर्मपाश , कलापाश और वरुणपाश नामक उत्तम अस्त्र हैं । राम ! तामस, महाबली, सौमन , संवर्त , दुर्जय , मोसल , सत्य और मायामय उत्तम अस्त्र भी मैं तुम्हें अर्पित करता हूं । सूर्य का तेजःप्रभ अस्त्र भी तुम्हें देता हूं । सोम का शिशिर नामक अस्त्र और मनु का शीतेषु नामक अस्त्र भी तुम लो । ... और महाबाहु ! अब इनके प्रयोग की विधि भी सीख लो ।" 64

राम जैसे एक नये चमत्कारिक लोक में आ गए थे । राम को इस बात का आश्चर्य होता है कि अपने शिक्षणकाल में गुरु वसिष्ठ ने इन अस्त्रों की कभी चर्चा भी नहीं की थी । और विश्वामित्र उन्हें वे अस्त्र दे रहे थे । राम का मन विश्वामित्र के प्रति श्रद्धा से भर उठता है ।

कालचक्र का प्रयोग कर राम ताड़कावन की महान राक्षसी ताड़का का वध करते हैं । ताड़का-वध के पूर्व विश्वामित्र पूरी तरह से राम को इस संदर्भ में दीक्षित करते हैं --" यह न हो कि ताड़का को सम्मुख देखकर तुम धर्म-संकट में पड़ जाओ कि वह निःशस्त्र है । रघु-नंदन ! क्षत्रियों के युद्ध के नियम केवल उन क्षत्रियों के साथ युद्ध के लिए हैं , जो उन नियमों की मर्यादा मानकर युद्ध करते हैं । राक्षस युद्ध के नियमों को एकदम नहीं मानते । अतः उन नियमों का विचार मत करना । यदि तुम नियमाधीन धर्म-युद्ध करना चाहोगे , तो वह ✗ संभव नहीं होगा । ... और तात ! यह बात भी मन में मत लाना कि वह स्त्री है और क्षत्रिय होकर स्त्री का वध करना तुम्हारे लिए ✗ धर्मोचित नहीं है । ऐसे नियमों के पीछे प्रायः धर्म-बुद्धि कार्य करती है ; किन्तु इस समय ऐसे नियमों का विचार सर्वथा अधर्म होगा । इस समय तुम्हारा मात्र एक धर्म है -- राक्षस-वध ।" 65

विश्वामित्र के कहे अनुसार राम ताड़का का वध करते हैं । लोगों में विश्वास जगाने के लिए आश्रमवाहिनी का निर्माण करते हैं । यहां यह ध्यातव्य रहे कि बांग्लादेश के नेताओं ने भी ✗ पश्चिम-पाकिस्तान के नृशंस अत्याचारियों के खिलाफ लड़ने के लिए मुक्ति-

वाहिनी का निर्माण किया था । मुक्तिवाहिनी -- जन-सामान्य द्वारा प्रायः निःशस्त्र युद्ध । पाकिस्तानियों ने बांगलादेश की स्त्रियों पर अत्याचार किये थे । उन अत्याचारों और बलात्कारों के कारण कई स्त्रियाँ गर्भवती भी हो गयी थीं । बाद में बांगलादेशवासियों ने इस समस्या को भी सुलझाया था और राष्ट्र द्वारा उन स्त्रियों को सम्मानित किया गया था । अतः राम भी यहाँ ताड़का-वन की पीड़ित स्त्रियों को गगन जैसे सहनशील उदार-वीर के संरक्षण में छोड़ते हैं ।

अहल्या-प्रसंग में भी लेखक ने कुछ संशोधन किया है । अहल्या की प्रख्यात कथा इतनी-सी थी कि इन्द्र ने अहल्या के साथ व्यभिचार किया । फलतः गौतम ऋषि ने अहल्या को त्याग दिया । उसे शाप दिया कि वह पत्थर की शीला हो जाए । अनुनय-विनय पर उस शाप का यह निवारण दिया कि जब राम वन में आयेंगे तब उनके स्पर्श से वह पुनः चैतन्यवान हो जायेगी ।

इस पूरे प्रसंग को लेखक ने संशोधित करके उसे आधुनिक अर्थघटन दिया है । गौतम एक बुद्धिजीवी हैं । एक विश्वविद्यालय के कुल-पति । वहाँ एक सम्मेलन होता है जिसमें ऋषि-मुनियों के साथ-साथ कुलाधिपति के रूप में मिथिला के सम्राट सीरध्वज जनक तथा मुख्य अतिथि के रूप में इन्द्र आते हैं । इन्द्र भ्रष्ट सत्ताधारी शासक का प्रतीक है । अहल्या इन्द्र द्वारा बलात्कृत होती है । गौतम का ऋषित्व असहाय सिद्ध होता है । वह इन्द्र को दंडित नहीं कर पाते । अहल्या को चाहते हुए भी और यह जानते हुए भी कि अहल्या निर्दोष है , गौतम उस स्थान को छोड़ने पर विवश हो जाते हैं । आश्रम और आश्रमवासी सब छोड़कर चले जाते हैं । इस घटना से अहल्या जड़ हो जाती है । विक्षिप्त-सी होकर संज्ञा-शून्य अवस्था में वह किसी तरह अपना एकाकी अभिशप्त जीवन व्यतीत करती है । अन्त में राम-लक्ष्मण जब उसका चरण-स्पर्श करते

हैं, तब उनके द्वारा सम्मानित होने पर, उनकी मानवीय संवेदना और सहानुभूति से, उसकी खोयी चेतना लौट आती है और वह अपराध-बोध से मुक्त हो जाती है —

" तुमने मेरे चरण छुए हैं, राम और लक्ष्मण। तुम्हारा कल्याण हो। इच्छा होती है कि मैं तुम्हारे चरण छू लूं। ... मैं अपनी कृतज्ञता किस रूप में अभिव्यक्त करूं ? तुम लोग नर-श्रेष्ठ हो। युग-पुरुष हो। कदाचित आज तक मैं तुम लोगों की ही प्रतीक्षा कर रही थी। मैं ही नहीं, आज सम्पूर्ण आर्यावर्त तुम्हारे जैसे युग-पुरुष की प्रतीक्षा कर रहा है। मैं अकेली जड़ नहीं हो गई थी, सम्पूर्ण आर्यावर्त जड़ हो चुका है। वे सब तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वीर बंधुओ। तुम उनमें उसी प्रकार प्राण फूंको, जिस प्रकार तुमने मुझमें प्राण्ण फूंके हैं। तुम सम्पूर्ण दलित वर्ग को सम्मान दो, प्रतिष्ठा दो। सामाजिक रूढ़ियों में बंधा यह समाज न्याय-अन्याय, नैतिकता-अनैतिकता, आदि के विचार और प्रश्नों के संदर्भ में पूर्णतः जड़-पत्थर हो चुका है। राम। ~~ग्र~~× तुम इन सबको प्राण दो। ... मेरी प्रतीक्षा आज पूरी हुई। मेरी साधना आज सफल हुई। तुमने आज स्वयं आकर मेरा उद्धार किया है, आज मैं निर्भय, ग्लानिशून्य मन से कहीं भी जा सकती हूं। ... मेरा आत्म-विश्वास लौट आया है। मैं निःसंकोच अपने पति के पास जा सकती हूं। मेरा मन किसीसे आँखें नहीं चुराएगा। राम। तुमने मेरे दुविधाग्रस्त मन को विश्वास दिला दिया है कि मैं अपराधिनी नहीं हूं। वह अपराध-बोध मेरा भ्रम था।" [66]

इस प्रकार यहां लेखक ने प्रकारान्तर से यह इंगित किया है कि जो समाज में प्रतिष्ठित हो चुका है, जिसे लोग मान-सम्मान देते हैं, ऐसे व्यक्ति की बात सब लोग स्वीकार कर सकते हैं। चरित्र-वान नेता और समाजसुधारक या धर्मगुरु ही लोगों को प्रभावित कर सकते हैं। अतः जड़-निष्प्राण रूढ़ियों को तोड़ने का काम भी वे ही सरलता से कर सकते हैं।

सीता-प्रसंग में भी लेखक ने एक नया दृष्टिकोण अपनाया है। राम की दीक्षा यहां पूरी होती है। सीता-वरण राम के लिए अनेक परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के समान था — बल-और शक्ति की परीक्षा, पिता से स्वतंत्रता की परीक्षा, प्रायः विरोधी राजा सीरध्वज से नये संबंध जोड़ने की परीक्षा और इन सबके ऊपर जाति-कुल-गोत्र के भूत के विरूद्ध लड़ने की परीक्षा। उपन्यास के प्रारंभ में दशरथ की राजसभा में वसिष्ठ ने राम के विवाह के संदर्भ में जो बातें कही थीं उनमें यही कुल-गोत्र- शुद्धता-अशुद्धता की बातें थीं — "राम का विवाह कर दिया जाना चाहिए, वे ब्रह्मचर्य की आयु पूर्ण कर चुके हैं। किन्तु सम्राट को विवाह-सम्बन्ध स्थापित करते हुए, अपने वंश के अनुकूल समधी की खोज करनी चाहिए। इस विषय में यदि मेरी इच्छा जानना चाहें तो मैं कहूंगा कि सम्राट यदि किन्हीं राजनीतिक कारणों से भी चाहें, तो राजकुमार का विवाह पूर्व के व्रात्यों में न करें — जिन्होंने वैदिक कर्मकाण्ड को त्यागकर, स्वयं को ब्रह्मवादी चिंतन में विलीन कर भ्रष्ट कर लिया है। सम्राट। राजनीति का अपना महत्व है, किन्तु आर्य जाति के रक्त, कर्म, संस्कृति एवं विचारों की शुद्धता का महत्व उससे भी कहीं अधिक है। पूर्व के अतिरिक्त दक्षिण में भी मुझे ऐसा कोई राजवंश नहीं दीखता, जो रघुकुल का उपयुक्त समधी हो सके। केवल उत्तर एवं पश्चिम ..." 67

यहां वसिष्ठ का इशारा सीरध्वज जनक की ओर भी है। जनक की विचारधारा गुरु वसिष्ठ की विचारधारा से मेल नहीं खाती है। वसिष्ठ उन तमाम लोगों के विरोधी है जो उनकी विचारधारा में विश्वास नहीं रखते हैं। इस प्रकार वे परंपरावादी, रूढ़िवादी और जड़ है।

सीता-प्रसंग के संदर्भ में लेखक के सामने अनेक समस्याएं हैं — धनुष का स्वरूप क्या हो, सीरध्वज राजा जनक द्वारा सीता को वीर्यशुल्का घोषित करने का कारण, सीता की जन्म-कथा

और सीता का जीवन के प्रति दृष्टिकोण ।

इस संदर्भ में डा. नरेन्द्र कोहली कहते हैं — " सोचते हुए एक मजेदार बात से आमना-सामना हुआ ; हमारे सारे मिथकों में महान शस्त्रों के देनेवाले शिव हैं -- निश्चित रूप से वे एक विकसित शस्त्रशाला के प्रतीक हैं । अतः यह शिव-धनुष भी कोई विचित्र यंत्र ही होना चाहिए जिसे सीरध्वज ने युद्ध में प्रयुक्त नहीं किया और शोभा की वस्तु बना दिया , जिसे सैकड़ों मनुष्य और पशु खींचकर रंग-स्थली में लाते हैं और पसीना-पसीना हो जाते हैं । मैंने शिव-धनुष को आधुनिक टैंक जैसे किसी यंत्र के रूप में स्वीकार किया है । यह प्रत्येक बात का हठपूर्वक आधुनिक समाधान देने का प्रयत्न नहीं है , यह शिव के महान शस्त्र-निर्माता रूप को दृष्टि में रखकर आगे की घटनाओं की पृष्ठभूमि स्वरूप की गई कल्पना है । राम-रावण के अंतिम युद्ध तक देवताओं और राक्षसों द्वारा शिव से शस्त्रास्त्र प्राप्त करने की होड़ लगी रहती है — जैसे आज के युग में छोटे देश रूस तथा अमरीका जैसी महाशक्तियों से शस्त्र मांगते ही रहते हैं ।" [68]

उपन्यास में सीता के संदर्भ में जो संशोधन किया है , उसमें सीता-जन्म का प्रसंग भी है । पुराणों में कहा गया है कि रावण ऋषि-मुनियों के शरीर में बाण चुभाकर रक्त निकालता था और उसको वह एक घट में संग्रहीत करता था । उसने वह घट कहीं भूमि में गाड़ दिया था जो हल चलाते हुए सीरध्वज राजा जनक को प्राप्त हुआ और उसीमें से सीता का जन्म हुआ । ऐसी भी कथा है कि सीता रावण और मंदोदरी की संतान है , किन्तु उसके जन्म पर ऐसी भविष्यवाणी हुई कि यह कन्या उसके पिता के जीवन में विपत्ति लायेगी , अतः घबड़ाकर रावण ने एक सन्दूक में बन्द करके उसे कहीं गाड़ दिया । जमीन जोतते हुए यह सन्दूक राजा जनक के किसी कृषक को मिला , जो उसने राजा को सौंप दिया । सन्दूक से जो कन्या निकली राजा ने उसे पुत्रीवत् पाल-पोसकर बड़ा किया । पूर्ववर्ती

पृष्ठों में इसे निर्दिष्ट किया गया है ।

डा. कोहली ने इस कथा को इस रूप में रखा है -- सीर-ध्वज को यह कन्या अपने किसी खेत में हल चलाते हुए प्राप्त हुई थी, सीरध्वज करुणावश उस बालकी को पुत्रीवत् पालते हैं । किन्तु यह बात सभी जानते हैं कि सीता अज्ञातकुलशीला है । उसके कुल और जाति का किसीको पता नहीं है । ऐसी स्थिति में आर्य-सम्राटों और राजकुमारों में से कोई भी उपयुक्त पुरुष उस अज्ञातकुलशीला कन्या का पाणिग्रहण करने के लिए प्रस्तुत नहीं है और अपनी पोषिता पुत्री सीता को जनक आर्येतर जातियों में दे नहीं सकते या देना नहीं चाहते । इसमें पिता का हृदय और आर्स-सम्राट का अहं ये दोनों है । इसलिए जनक ने एक अद्भुत युक्ति सोची है । कहते हैं, किसी समय महादेव ने युद्ध से निरस्त होकर अपना धनुष सीरध्वज के पूर्वजों को प्रदान किया था । यह धनुष कोई साधारण धनुष नही है । यह शिव का धनुष है और शिव अनेक दिव्यास्त्रों के निर्माता हैं । "धनुष" शब्द से तात्पर्य इतना ही है कि उस यंत्र से विभिन्न प्रकार के दिव्यास्त्र प्रक्षेपित किए जा सकते हैं । शिव का यह धनुष आज भी सीरध्वज की युद्धशाला में पड़ा है, किन्तु वह पड़ा ही है, उपयोग में नहीं आ रहा, क्योंकि उसके संचालन की विधि कोई नहीं जानता, स्वयं सीरध्वज जनक भी नहीं ।[69] जनक ने उसी धनुष को लेकर सीता के विवाह की युक्ति सोची है । उसने यह प्रण किया है कि जो कोई उस धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा देगा, अर्थात् उस यंत्र को संचालित कर देगा, सीता का विवाह उसीके साथ होगा । इस तरह सीता को वीर्यशुल्का घोषित कर दिया गया है । अज्ञातकुलशीला कन्या का वरण वैसे तो कोई आर्य-क्षत्रिय राजकुमार करेगा नहीं, किन्तु बात जब पराक्रम-प्रदर्शन की होगी तो उसे क्षत्रिय-धर्म समझकर कई पराक्रमी वीर तैयार हो सकते हैं और यदि कोई पुरुष उनकी इस परीक्षा पर खरा नहीं उतरा तो वे आर्य राजकुलों में जामाता नहीं पा सकने की अक्षमता के आरोप से से बच जायेंगे । ऐसी स्थिति में

सीता भी अज्ञातकुलशीला होने के कारण अविवाहित रह जाने के आक्षेप से बच जाएगी ।[70]

लेखक ने सीता के असाधारण दिव्य सौन्दर्य का वर्णन भी किया है —" आज सीता चमत्कारिक रूपवती युवती है, जिसके सौन्दर्य की चर्चा आर्य-सम्राटों के प्रासादों के भी बाहर आर्यावर्त के बहुत परे तक राक्षसों, देवताओं, गन्धर्वों, किन्नरों, नागों आदि के राजमहलों भी हो रही है ।"[71] किन्तु यह भी एक विडम्बना है कि जाति-पाँति, कुल-गोत्र, ऊँच-नीच की मान्यताओं में जकड़े हुए इस समाज में ऐसी अभूतपूर्व अनिंद्य सुन्दरी के साथ विवाह के लिए भी कोई उपयुक्त वर तैयार नहीं होता ।

इस संदर्भ में राम गुरु विश्वामित्र को कहते हैं —" अद्भुत ! चकित हूं, एक असाधारण रूपवती राजकुमारी से विवाह के लिए कोई आर्य राजकुमार प्रस्तुत नहीं । यदि वह अज्ञातकुलशीला है तो उसमें उस कन्या का क्या दोष ? हमारा समाज कैसा जड़ है, गुरुदेव ! वनजा बिना अपने किसी दुष्कर्म के पीड़ित है, अहल्या बिना अपराध के दंडित है, सीता बिना दोष के अपमानित है । ऐसा क्यों है, गुरुदेव ? "[72] यह विश्वामित्र की "दीक्षा" का ही परिणाम है कि राम के मन में इस प्रकार के प्रश्न उठते हैं । राम यदि गुरु वसिष्ठ के सानिध्य में होते तो कदाचित ऐसा प्रश्न उनके मन में न उठता ।

सीता-स्वयंवर वाला प्रसंग भी यहां कुछ अलग तरह से बताया गया है । एक साथ आर्यावर्त के सभी राजा या क्षत्रियकुमार यहां नहीं आते, बल्कि सीता के वीर्यशुल्का घोषित होने की खबर जैसे-जैसे पहुंचती है, जिन्हें अपने पराक्रम पर भरोसा है या उसका घमण्ड है, ऐसे प्रत्याशी वहां पहुंचते हैं और धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना तो दूर, उसे वे उठा भी नहीं सकते क्योंकि उसके संचालन की विधि

किसीको ज्ञात नहीं है । विश्वामित्र उस यंत्र (अजगव) के परिचालन की विधि राम को समझा देते हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि राम का विवाह सीता से हो । यहाँ वसिष्ठ और विश्वामित्र का अंतर समझ में आता है । वसिष्ठ पूरब से कन्या लाने के विरोधी हैं, क्योंकि उनमें कुल-शील-रक्तशुद्धता आदि के विचार हैं ; विश्वामित्र आधुनिक हैं । वे इन सब संकुचितताओं से ऊपर उठ चुके हैं । वसिष्ठ के सम्मुख केवल वर्गहित की बात है, विश्वामित्र समष्टि-हित का विचार करते हैं । फलतः विश्वामित्र राम को समझाते हैं —

"वैसे जनक का प्रण हमारे अत्यन्त अनुकूल है । यदि सीधे-सीधे जनक के सम्मुख यह प्रस्ताव रखा जाता कि दशरथ के राजकुमार राम के साथ सीता का विवाह कर दो, तो कदाचित जनक यह स्वीकार नहीं करता, क्योंकि आज तक अयोध्या और मिथिला के सम्राटों के सम्बन्ध कभी मैत्रीपूर्ण नहीं रहे । इस मैत्रीशून्य इतिहास के कारण अयोध्या के राजकुमार के साथ अपनी कन्या का विवाह करते हुए सीरध्वज स्वयं को हेठा अनुभव करेगा । इसलिए यदि तुम अजगव-संचालन कर इस प्रतिबंध पर पूरे पूर्ण उतरते हो, तो निश्चित रूप से सीरध्वज इस विवाह में संकोच नहीं करेगा । पुत्र ! इससे एक ओर जहाँ सीता जैसी गुणशीला, रूपवती, युवती की जाति-विचार के पिशाच के हाथों हत्या नहीं होगी, और उसका विवाह अपने योग्य वर के साथ होगा ; दूसरी ओर अयोध्या और जनकपुरी की परंपरागत शत्रुता, वैमनस्य तथा एक-दूसरे के प्रति उदासीनता समाप्त हो जाएगी । और राम ! दो प्रमुखतम सम्राटों को मिलाकर एक कर देने, उनकी सम्मिलित शक्ति को राक्षसों के विरूद्ध लड़ने के लिए तैयार कर ~~देने~~ देने का जो स्वप्न मैंने वर्षों से देखा है, वह भी पूर्ण हो जाएगा ।"[73]

परशुराम विषयक लेखक की अवधारणा भी थोड़ी भिन्न है । यथा —" वे मेरे लिए किसी एक क्षेत्र में प्रतिष्ठित समयातीत हो चुके

जड़ पात्र हैं, जो अपने ही क्षेत्र की नयी शक्तियों की ओर से आँखें बन्द रखते हैं। वे अपने क्षेत्र के नवागंतुकों के लिए प्रोत्साहन कम और आतंक अधिक होते हैं। वे साहित्यकार भी हो सकते हैं और क्रान्तिकारी भी।" 74

और तभी राम परशुराम को कहते हैं —" हमने अद्वितीय विद्वान गुरुओं से शिक्षा पायी है। हम जानते हैं कि सहस्त्रार्जुन जैसे जनविरोधी दुष्ट को मारकर आपने अन्याय का दमन किया था और न्याय के पक्ष में महान् क्रान्ति की थी। अपने युग के दुष्ट अनाचारी और अत्याचारी क्षत्रिय राजाओं के विरुद्ध विद्रोह कर, आपने जन-सामान्य को धर्मयुद्ध का नया मार्ग दिखाया था। आप जैसे पुराने क्रान्तिकारियों का हम सम्मान करते हैं, पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि आप अकारण ही लोगों का अपमान करते फिरें। और एक बात हम नहीं समझ पाते, भृगुश्रेष्ठ। ... क्रान्तिकारिता और रूढ़िवादिता भी साथ-साथ चल पाती हैं क्या ? आप कितने रूढ़िवादी हो गए हैं — आपने कभी सोचा है ? यदि एक समय एक क्षत्रिय राजा जन-विरोधी सैनिक लुटेरा था तो क्या मान लिया जाए कि प्रत्येक राजनीतिक नेतृत्व जन-विरोधी पशुबल ही होगा — या यदि एक समय "अन्याय" क्षत्रिय राजा के रूप में प्रकट हुआ तो क्या वह सदा उसी रूप में प्रकट होता रहेगा ? आपने यह कैसे मान लिया कि उन अत्याचारी क्षत्रियों को मारकर आपका कार्य सदा के लिए संपन्न हो गया ? आपने सतत प्रयत्नशीलता का मूल्य पहचाना ही नहीं। क्या आपका क्रान्तिकारी मन यह नहीं जानता कि समय के साथ, अन्य वस्तुओं के समान, अत्याचार का रूप भी बदल जाता है ? आपने केवल उसके एक रूप को पहचाना है। इसलिए अपने समय के क्षत्रियों की हत्या कर आप अपना परशु लिए-लिए महेन्द्रगिरि पर जा बैठे। आपने यह नहीं देखा कि आज जन-विरोधी राजनीति, पशुबल तथा धन की शक्तियों ने संयुक्त मोरचा बनाया है और वह

राक्षस-शक्ति के रूप में अभिव्यक्ति पा रहा है । कितना अत्याचार कर रहे हैं राक्षस । बुद्धिजीवियों ऋषियों की हत्याएं हो रही हैं, ताकि जन-सामान्य को उचित नेतृत्व न मिल सके, प्रजा का धन लूटकर उन्होंने सोने की लंका बना ली है, नारियों का अपहरण हो रहा है, और नारी-पुरुष के सहज सम्बन्ध को पाशविक शक्तियों से संचालित करने का प्रयत्न किया जा रहा है । यह सब आपको नहीं दिखता ? आपकी दृष्टि मंद पड़ गई है । आपका मस्तिष्क सो गया है । आप वर्तमान के दायित्व को त्याग, प्राचीन कृत्य का यश ओढ़े हुए, उचित-अनुचित, न्याय-अन्याय का विचार छोड़, लोगों को डराने-धमकाने रह गए हैं । और फिर भी आप चाहते हैं कि लोग आपका सम्मान करें ।' 75

इतने पर भी परशुराम के मन का समाधान नहीं होता है और वे अपने कंधे से वैष्णवी धनुष उतारकर राम को उसके संचालन के लिए कहते हैं । यह उस अजगव के लघु-संस्करण सा था और उसकी संरचना में रत्ती-भर का भी अंतर नहीं था । अतः राम उसके संचालन में भी सफल हो जाते हैं । उपन्यास का अन्त इन शब्दों के साथ होता है —' नहीं, मैं आश्वस्त हुआ पुत्र । तुम समर्थ हो और अन्याय के दलन की दीक्षा ग्रहण कर चुके हो । भगवान तुम्हारा कल्याण करें । .... परशुराम खोये हुए-से अपने यान की ओर चले गये । क्षण-भर में गगनभेदी कोलाहल करता हुआ, यान अवकाश में विलीन हो गया । दशरथ ने देखा — राम अपने अश्व पर बैठ चुके थे । बारात फिर से अयोध्या की ओर चल पड़ी ।' 76

इस प्रकार प्रस्तुत उपन्यास राम की दीक्षा का, पूर्व-तैयारी का उपन्यास है । रामायण-माला की एक कड़ी होते हुए अपने आप में भी वह एक स्वतंत्र उपन्यास है । डा. विवेकीराय ने डा. कोहली को एक अप्रतिम कथा-यात्री कहा है । और सचमुच में इन उपन्यासों के द्वारा वे पाठक को भी एक कथा-यात्रा करवाते

हैं । किन्तु एक बात हम अवश्य कहना चाहेंगे कि रामायण के वृतान्त पर आधारित होते हुए भी यह एक और रामायण नहीं है । वस्तुतः यह एक उपन्यास है -- पौराणिक उपन्यास । डा. विजयेन्द्र स्नातक "दीक्षा" के राम को जनवादी राम कहते हैं,[77] तो डा. पारूकान्त देसाई "दीक्षा" को आधुनिक भावबोध संपन्न उपन्यास कहते हैं ।[78]

अवसर :

"दीक्षा" उपन्यास को अभूतपूर्व सफलता मिली । जहां दक्षिण-पंथी लोगों ने "राम" के कारण उसे सराहा , वहां कुछेक वाममार्गी लोगों को भी यह अच्छा लगा ।[79] फलतः लेखक अपनी उपन्यास-यात्रा जारी रखते हैं । वैसे आरंभ से ही लेखक के मन में उपन्यास-माला का एक व्यवस्थित ढांचा बन गया था , जिसमें उसे वे चार स्वतंत्र उपन्यासों में लिखना चाहते थे -- दीक्षा , अवसर , संघर्ष की ओर और युद्ध ।

"अवसर" में दशरथ की राम के युवराज्याभिषेक की व्याकुलता तथा राम का वनगमन चित्रित है । "दीक्षा" में हम देखते हैं कि विश्वामित्र राम से एक प्रण करवाते हैं कि अयोध्या के राजा होने के उपरान्त भी वे वनों से मुंह नहीं मोड़ेंगे और जब-तब वन में आकर वहां की परिस्थितियों का अवलोकन करते हुए हमेशा अत्याचार और अन्याय के सामने लड़ेंगे । विश्वामित्र राम से कहते हैं --" अपनी राजधानी में सेना से रक्षित राजसिंहासन पर बैठना , आक्रमण होने पर शत्रु से युद्ध अत्यन्त सरल कार्य है । और जो कार्य मैं कह रहा हूं , वह उससे कहीं कठिन और विकट है । उसके लिए तुम्हें अपना राज्य छोड़कर उन गहन वनों में जाना होगा , जहां ऋषि तुमसे पहले जा पहुंचे हैं । ये समस्त ऋषि अपनी तथा अपने पक्ष की रक्षा के लिए याचना करते हुए तुम तक नहीं आयेंगे , तुम्हें उनको शोध कर , उन तक पहुंचना होगा । आदर्श शासन व्यवस्था स्वयं नागरिक तक पहुंचकर उसका कष्ट पूछती है । नागरिक को परिवाद लेकर स्वयं शासन तक

पहुँचना पड़े तो वह आदर्श व्यवस्था नहीं है । तुम मुझे वचन दो कि तुम अपने राज्य और उसके बाहर भी आदर्श व्यवस्था स्थापित करोगे — एक राजा के रूप में भी , और एक मनुष्य के रूप में भी । तुम प्रासाद, सिंहासन , राज्य छोड़कर अकेले पदाति वन-वन घूमकर गहन वनों में ऋषि आश्रमों को खोज उनकी रक्षा करोगे , और उनके शत्रु राक्षसों का समूल नाश करोगे । इस बात की प्रतीक्षा नहीं करोगे कि पहले राक्षस तुम्हें पीड़ित करें । तुम रुके नहीं रहोगे कि पहले रावण अयोध्या पर आक्रमण करे । तुम स्वयं अन्याय का नाश करने का प्रण करके घर से निकल पड़ोगे ।" [80] और राम भी गुरु को वचन देते हैं --" मैं आपको यह वचन देता हूं कि मेरे जीवन का लक्ष्य राज-भोग नहीं , न्याय का पक्ष लेकर लड़ना , अन्याय का विरोध करना , वैयक्तिक स्वार्थों का त्याग , जन-कल्याण के मार्ग में आने वाली बाधाओं का नाश तथा सबके हित और सुख के लिए अपने जीवन को अर्पित करना होगा । मैं आपको वचन देता हूं कि मैं स्वयं तपस्वियों ऋषियों , बुद्धिवादियों के पास जाऊंगा , जिन्होंने अपने जीवन को सत्य और न्याय के चिंतन में , साधना में , ज्ञान और विज्ञान की वृद्धि में खपा दिया है । जो अपनी रक्षा का वचन लेने के लिए मुझ तक नहीं आ सकते , मैं उन तक ~~पहुंचूंगा~~ पहुँचूंगा और अन्याय का , उसकी शाखा-प्रशाखाओं के साथ-साथ समूल नाश करूंगा ।" [81]

और राम को अपना उक्त वचन निभानेका अवसर "अवसर" उपन्यास में मिल जाता है । इस उपन्यास में किए गए परिवर्तनों के संदर्भ में लेखक कहते हैं — " यहां भी मैंने स्वीकार नहीं किया है कि ज्योतिष के किसी योग के कारण दशरथ राम का युवराज्याभिषेक करने को उत्सुक थे और पिता के वचनों की रक्षा के लिए राम बलात् वन भेज दिए गए । मैंने यह माना है कि सत्ता दशरथ के हाथों से फिसल रही थी । अपनी सुरक्षा के लिए वे आशंकित तथा भयभीत थे । उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए आवश्यक प्रतीत हो रहा था कि

शासन राम के हाथों में रहे । किन्तु जब यह नहीं हो सका तो उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए । ... दूसरी ओर , राम वन जाने के अवसर की प्रतीक्षा में थे । घरेलू कलह के कारण उन्हें यह अवसर मिल गया और इससे पहले कि उन्हें किसी-न-किसी तर्क की आड़ में रोक पाता — वे अयोध्या छोड़कर चल दिए । किन्तु उनका चित्रकूट में नौ-दस महीने रुका रहना , मेरे लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था । वे वहां क्यों रुके ? मैंने यही माना कि वे कैकेयी के आचरण के कारण भरत की ओर से सशंक चाहे नहीं थे , किन्तु परख लेना चाहते थे कि अयोध्या लौटकर भरत कैसा व्यवहार करते हैं । इसीलिए भरत से मिलकर और उनकी ओर से पूर्णतः आश्वस्त होकर ही वे आगे बढ़े ।" [82]

इस प्रकार "दीक्षा" की अगली कड़ी के रूप में हमें "अवसर" उपन्यास प्राप्त होता है । इसमें अयोध्याकांड और अरण्यकांड की कथा कुछेक नये परिवर्तनों के साथ है । गुरु वशिष्ठ से परंपरागत शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत "दीक्षा" उपन्यास में हम देखते हैं कि विश्वामित्र राम और लक्ष्मण को क्रान्ति की दीक्षा देते हैं । उस समय क्रान्ति अर्थात् अत्याचारी , अन्यायी , अविवेकी राक्षसी शक्ति से जनता को मुक्ति दिलाना ऐसा अर्थ यहां अभिप्रेत है । और इसीलिए विश्वामित्र ने राम से वचन भी ले लिया था कि शेष निशाचरों के उन्मूलन के लिए वे पुनः जंगलों में आयेंगे , जिसे हम निर्दिष्ट कर चुके हैं । कथा को औपन्यासिक अन्विति प्रदान करने के लिए कथाकार को कुछ अतिरिक्त शिल्प-श्रम करना पड़ा है ।" रामकथा जनमानस में इतनी गहराई के साथ जमी हुई है कि थोड़ी-सी भी असावधानी होने पर कृति बेमानी हो सकती है । नरेन्द्र कोहली की कुशलता उसके समग्र रूप को न आहत करते हुए ऐसे केन्द्रों पर को विशेष रूप से लक्ष्य करने में है जिनकी यथार्थता पर आज के पाठकों के मन में सहज शंका उठ सकती है । इन केन्द्रों को नई कलम से छूकर लेखक सर्वप्रथम अपनी विश्वसनीयता की धाक जमा लेता है और फिर वह रिक्त स्थानों को चुन-चुनकर ऐसा कुछ काल्पनिक , कुछ अनुमानाश्रित और कुछ पुराण

समर्थित भराव देता है कि आधुनिक पाठकों के लिए रामकथा नये आकर्षणों से परिपूर्ण हो उठती है ।" [83]

मूल कथा की आत्मा को आहत न करते हुए उसमें डा. कोहली ने कुछ इस तरह का शिल्प उभारा है कि राम का वह भगवान वाला रूप तिरोहित हो गया है । हां , लेखक ने राम के उस "मर्यादापुरुषोत्तम" वाले रूप को बरकरार रखा है । राम की धीरता , ~~अभरता~~ गंभीरता , वीरता और मानवीयता को एक जन-नायक के रूप में उकेरा गया है । राम को राज्याभिषेक से न अतीव प्रसन्नता होती है , न वनवास से वे इतने दुःखी और विचलित होते हैं । बल्कि एक तरह से प्रसन्न होते हैं , क्योंकि उनकी समझ और विवेक से वे देखते हैं कि अयोध्या के संकट से दंडकारण्य का संकट कहीं अधिक गहरा है और उसका उपचार भी शीघ्र ही होना चाहिए । अयोध्या में जो भी राजनीतिक उठा-पटक हुई उससे कमसे कम उनको तो एक मौका मिल गया अपने अभियान को अमली ~~जामा~~ जामा पहनाने का और गुरु को दिए गए वचन को सार्थक करने का । इस प्रकार राम वनगमन के प्रसंग को एक "अवसर" समझते हैं और सम्पूर्ण उपन्यास में स्थान-स्थान पर इसके शीर्षक को सार्थकता प्रदान करने वाली टिप्पणियां मिलती है । [84]

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने राम , लक्ष्मण , सीता आदि सभी पात्रों को मानवीय धरातल पर प्रस्तुत किया है । कथा भी सहज-स्वाभाविक रूप से उपन्यस्त हुई है , लगता है जैसे हम उस प्राचीन -पुरातन कथा को बिल्कुल आज के धरातल पर देख रहे हैं । प्रथम अध्याय में हम दशरथ के विचलन को देख रहे हैं । दशरथ को उन तमाम लोगों से डर लगता है जो कैकेयी द्वारा नियुक्त हैं । आशंकाओं में घिरे हुए दशरथ न्याय-समिति के सचिव पुष्कल का अपहरण करवा देते हैं , परिवाद लेकर आये हुए उनके पुत्र विपुल के साथ भी दुर्व्यवहार किया जाता है और उसके मुख खोलने पर उसे बन्दीगृह में डलवा दिया जाता है । पाठक को स्मृति में आपात्-

कालीन स्थिति वाले दिन सहसा कौंध जाते हैं । सम्राट दशरथ भय-भीत और बौखलाए हुए हैं । उन्हें डर है कि कहीं कैकेयी का भाई युद्धाजित अपने पिता के पराजय का बदला न ले । उन्हें कैकेयी, युद्धाजित, कैकेयी द्वारा नियुक्त सभी पदाधिकारियों से खतरा लगता है । परिणामस्वरूप वे [illegible] शीघ्रातिशीघ्र राम का युवराज्याभिषेक करवा देना चाहते हैं । दूसरे अध्याय में हम देखते हैं कि अति गोपनीय रखने के बावजूद राम के राज्याभिषेक वाली बात कैकेयी पर प्रकट हो जाती है और इस बात को लेकर वह अधिक स्पष्ट हो जाती है कि उस पर आशंका की जा रही है । राम को वह कहती है —

" कल रात ढले मंथरा तुम्हारे राज्याभिषेक का समाचार लायी । मैंने बहुमूल्य मोतियों [illegible] की माला उसे पुरस्कार में दे डाली । किन्तु उस मूर्खा, कुटिला दासी ने वह मेरे मुंह पर दे मारी । किस आधार पर किया उसने यह दुस्साहस ? ... तुम्हारे पिता के मेरे प्रति अविश्वास के आधार पर । उसने मुझे बताया कि यह गोपनीय निर्णय था । सम्राट को आशंका थी कि कुछ लोग अभि-षेक में विघ्न डालेंगे, राम को नष्ट करने के लिए रातों-रात उस पर आक्रमण करेंगे । किससे था भय ? मुझसे ! मेरे पुत्र से ! मेरे भाई से ! इसलिए मुझे बताया नहीं । भरत को ननिहाल भेज दिया । भरत की अधीनस्थ [illegible] टुकड़ियों को उत्तरी सीमांत की ओर स्थानांतरित कर दिया । पुष्कल का अपहरण करवा उसे बंदी कर लिया । केकय के राजदूत की निजी सेना का निःशस्त्रीकरण हुआ .. थूड़ी है मेरी सद्भावना पर ! मेरे चरित्र के उदात्त-स्वरूप पर ! यहां कोई मुझे देवी के रूप में देखना नहीं चाहता । सब मुझे चुड़ैल समझते हैं ... मेरे क्रूर रूप को ही सत्य मानते हैं । तो वही हो, राम वही हो ... सम्राट के अविश्वास ने मेरे चरित्र के दुष्ट तत्वों को उकसा दिया है, मेरी प्रतिहिंसा और घृणा को जगा दिया है । मैं सम्राट को इसका दण्ड दूंगी — ऐसा आग लगाऊंगी कि

आग बुझ भी जाए तो उसकी लहर समाप्त न हो । सम्राट को जला-ऊँगी -- चाहे उस अग्नि में स्वयं मुझे जल जाना पड़े । चाहे तुम अपने शरीर और मन पर टीसते हुए फफोले वहन करो । पर मेरी प्रति-हिंसा शान्त नहीं होगी । मैं उसे शान्त होने नहीं दूंगी ।" 85

यहां कैकेयी अपने मन को स्पष्ट करते हुए कहती है —" मैं इस घर में अपने अनुराग का अनुसरण करती हुई नहीं आयी थी । मैं पराजित राजा की ओर से विजयी सम्राट को संधि के लिए दी गयी एक भेंट थी । सम्राट और मेरे वय का भेद आज भी स्पष्ट है । मैं इस पुरुष को पति मान पत्नी की मर्यादा निभाती आयी हूं , पर मेरे हृदय से इनके लिए स्नेह का उत्स कभी नहीं फूटा । ये मेरी मांग का सिंदूर तो हुए , अनुराग का सिंदूर कभी नहीं हो पाए ।"86

यहां कैकेयी राम के सम्मुख इस बात का एकरार भी करती है कि प्रारंभ में उसके मन में प्रतिशोध का भाव था और इसलिए वह कौस-ल्या , सुमित्रा , राम , रघुवंशियों तथा मानव-वंशी परंपराओं को घृणा करती थी । किन्तु बाद में कैकेयीने अनुभव किया कि ये सब भी उसके समान पीड़ित और अपमानित थे और फलतः वह धीरे-धीरे सबकुछ भूलती गयी , राम को भी पुत्रवत् प्यार करने लगी । दशरथ ने कैकेयी के पिता को जो वचन दिया था कि कैकेयी का पुत्र ही युवराज होगा । वह उसको भी भूला चुकी थी । शंबर-युद्ध के पश्चात् मिले वरदानों को भी भूल चुकी थी । मानव-वंशी परंपराओं का विरोध भी छोड़ दिया था और एक तरह से राम को युवराज के रूप में मन ही मन स्वीकार भी कर लिया था , किन्तु सम्राट के व्यवहार ने , उन्होंने उस पर जो आशंका की और विश्वास नहीं किया , उस बात ने आज पुनः उसमें प्रतिहिंसा के भावों को जगा दिया है । उसके मन का अमृत-पक्ष अब सो गया है और वह विषैला स्वरूप सामने आ गया है । अब वह उन दो वरदानों में भरत का राज्याभिषेक और राम के लिए चौदह साल का वनवास मांगती है । लेकिन राम इस वनवास को भी वरदान — एक "अवसर" मान लेते हैं , क्योंकि अन्यथा वह

ऋषि विश्वामित्र को दिए गए वचन का पालन कैसे करxxx करते ।

प्रस्तुत उपन्यास में उक्त बातों के अxxxxx अतिरिक्त राम का वनगमन, वनगमन के पूर्व माता कौसल्या, माता सुमित्रा आदि से मिलना, राम के सारे तर्कों को निरस्त करते हुए सीता का राम के साथ जाने का निश्चय और अन्ततः राम द्वारा उसका स्वीकार, राम-लक्ष्मण संवाद, लक्ष्मण का भी राम के साथ जाने का निर्णय, ×xxxx× सीता के लक्ष्मण के साथ के हास-परिहास, श्रृंगवेर-पुर में निषादराज गुह द्वारा राम-लक्ष्मण-सीता का स्वागत, सीता का निषादरानी से घुल-मिल जाता, ऋषि भारद्वाज से वार्तालाप, स्थिति का जायजा लेना, मुखर के परिवार के लोगों की राक्षसों द्वारा हत्या की कहानी, मुखर का राम-लक्ष्मण के साथ आने के लिए तैयार होना, मंदाकिनी के संगम पर चित्रकूट में राम द्वारा आश्रम की स्थापना, भरत की स्थिति साफ होने तक वहां रूकने का निर्णय, माता कौसल्या तथा सुमित्रा की रक्षा हेतु राम की तैयारी, अपने मित्रों को कुछ स्पष्ट सूचनाएं, आश्रम में राम-लक्ष्मण द्वारा शस्त्र-प्रxxx प्रशिक्षण की तैयारी, प्रथमतः सीता और मुखर को प्रशिक्षित करना, लक्ष्मण द्वारा कुटी-निर्माण कार्य; सुमेधा, कालकाचार्य, कुंभ-कार उद्घोष, झिंगुर आदि से परिचय, राक्षसों के साथी तुंभरण का आतंक, तुंभरण द्वारा चलायी जा रही दासप्रथा, उद्घोष का भी राम के आश्रम में आ जाना, तुंभरण के वध से गांव के लोगों के आत्मविश्वास में वृद्धि होना, राम-लक्ष्मण द्वारा लोगों को संगठित करना, राम द्वारा जातिवाद को मिटाने की बात करना, दशरथ की मृत्यु के समाचार, भरत तथा माताओं का आना, जयंत को राम द्वारा एकाक्ष कर देना, भरत तथा माताओं की निराश वापसी, राक्षसों के अत्याचार का बढ़ जाना, संकल्प मुनि के पैर को राक्षसों द्वारा काट लेना, कालकाचार्य के ब्रह्मचारियों पर राक्षसों के अत्याचार, कालकाचार्य द्वारा आश्रम को अन्यत्र ले जाना, राम का जन-स्थान के लोगों को क्रान्ति के लिए तैयार

करना आदि घटनाओं को "अवसर" में उपन्यस्त किया गया है । वस्तुतः उपन्यास में राम-लक्ष्मण के अतिरिक्त कई लोगों को "अवसर" उपलब्ध हुआ है, जैसे — सीता को राम के साथ नैकट्य का और अपनी प्रतिभा और शक्ति को प्रदर्शित करने का ; ऋषि-मुनियों को राक्षसों के आतंक से मुक्त होने का ; जन-साधारण को राक्षसों के अत्याचार और आतंक से मुक्त होने का तथा उनसे प्रतिशोध लेने का — इस प्रकार यह उपन्यास अनेक "अवसरों " की संगम-स्थली है ।

लेकिन इस उपन्यास का महत्त्व इसमें है कि लेखक ने इसके द्वारा अनेक स्थानों पर अपने जनवादी विचारों को अभिव्यक्ति दी है और इस तरह कृति को केवल पौराणिक कथा न रहने देकर एक सार्थक औपन्यासिक कृति का रूप दिया है ।

सीता यहां अभिजातवर्गीय स्त्रियों की स्थिति के माध्यम से जो बात करती है, वह कमोबेश रूप से आज की उच्चवर्गीय स्त्रियों पर भी लागू होती है और इस प्रकार यहां नारी-विमर्श के भी कुछ आयाम स्पष्ट होते हैं —" इस परिवार का ही नहीं, सारे समाज का ढांचा ही कुछ ऐसा है, कि नारी कहीं शोभा की वस्तु है, कहीं भोग की । कहीं वह अत्यन्त शोषित है, कहीं परजीवी । अमरबेल होकर रह गयी है नारी ; जो अपने पति के माध्यम से समाज का रस खींचती है । समाज से उसका सीधा कोई सम्बन्ध नहीं है । घर की व्यवस्था में तो फिर भी उसका स्थान है, किन्तु सामाजिक उत्पादन में वह एकदम निष्प्रयोजन वस्तु है । निर्धन किसान की पत्नी उसके साथ खेत पर जाकर उसका हाथ बंटाती है, श्रमिक की पत्नी पति के साथ या स्वतंत्र रूप से श्रम करती है ; किन्तु धनी वर्ग की स्त्रियां मात्र जोंकें हैं । चूसने के लिए उन्हें रक्त चाहिए । उनकी सामाजिक उपयोगिता पूरी तरह शून्य है और उनकी आवश्यकताएं आसमान को छू रही हैं । उन्हें भड़कीले वस्त्र चाहिए, चमकीले आभू-षण चाहिए ; प्रसाधन के लिए चंदन-कस्तूरी के छकड़े भी उनके लिए

अपर्याप्त हैं ; चर्बी चढ़ाने के लिए दुनिया भरका गरिष्ठ और स्वादिष्ट भोजन चाहिए ... रानियां , मंत्राणियां , सामंत-पत्नियां , आचार्य-पत्नियां — सब ही पुराने पड़े व्यर्थ के कबाड़-सी वस्तुएं थीं , जिनकी कोई सामाजिक उपयोगिता नहीं थी ।" 87

संतान-उत्पत्ति के संदर्भ में भी सीता के विचार एकदम आधुनिक हैं --" संतान के जन्म से पहले , उसके स्वागत के लिए माता-पिता की परिस्थितियां अनुकूल होनी चाहिए । वे भौतिक सुविधाओं , शारीरिक तत्परता तथा अनुकूल मानसिकता के साथ प्रस्तुत हों , तो ही संतान के साथ न्याय हो सकता है । संतान को जन्म देने के पश्चात् माता-पिता को लगे कि उनके पास संतान के लिए समय नहीं है , उनके पास अपनी अन्य गंभीर चिंताएं या महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं , बच्चे उन्हें अपने मार्ग की बाधा लगने लगें और वे उन पर झल्लाते रहें तो यह संतान के साथ न्याय नहीं होगा । ... धन के बल पर, xxxxx दास-xxxxxxxx दासियां , शिक्षक-आचार्य उपलब्ध करा देने भर से , संतान के प्रति माता-पिता का दायित्व पूरा नहीं हो जाता । संतान को माता-पिता की भौतिक सुविधाओं के साथ , उनका समय , उनका शरीर , उनका मन , उनकी आत्मा — प्रत्येक वस्तुकी आवश्यकता होती है ।" 88

ज्ञान-विज्ञान और कला के विकास के लिए काम करने वाले ऋषि-मुनियों के आश्रमों और गुरुकुलों की स्वायत्ता के संदर्भ में ऋषि वाल्मीकि के विचार भी आधुनिक विमर्श का परिणाम है —" राज्य का अनुदान ! ... अनेक बार सोचा है राम ! पर राज्याश्रय कलाकार की कला का काल है , पुत्र । राज्य के अनुदान का आरंभ में कदाचित कोई विशेष लक्ष्य नहीं होता । वह कला को संरक्षण देता है , किन्तु जब उसके संरक्षण में पलकर कला शक्ति अर्जित कर लेती है , तो संरक्षक राज्य उस शक्ति का उपयोग अपने पक्ष में करना चाहता है , जो कला के लिए काम्य नहीं है । राज्याश्रय में

पलकर , किसी राज्य का अनुदान लेकर , कलाकार को उस आश्रय तथा अनुदानदाता का ध्यान कला से भी अधिक रखना पड़ता है । पुत्र ! अन्याय वहीं होता है , जहां सत्ता और धन होता है । कला का मूल धर्म अन्याय का विरोध है । कला जब सत्ता और धन के आश्रय में चली जाती है , तो अपने मूल धर्म से च्युत हो जाती है । ... कलाकार विद्रोही होता है , और शासन विद्रोह नहीं चाहता । कलाकार और शासन सहमत हों तो कलाकार को ईमानदार न समझो । शासन द्वारा पूजे जाने वाले कलाकारों में वास्तविक कलाकार बिरले ही होते हैं , अधिकांश भांड मात्र होते हैं ।"[89]

प्रस्तुत उपन्यास में यह भी लक्षित हुआ है कि "राक्षस" कोई जाति नहीं , "प्रवृत्ति " है । किसी भी जाति और वर्ण का व्यक्ति राक्षस हो सकता है । एक स्थान पर राम अपना चिंतन व्यक्त करते हैं —" यह प्रदेश सभ्यता के आदिम युग में जी रहा है । समस्त प्रदेश वनों से भरा पड़ा है । व्यवस्थित राज्य की स्थापना नहीं हुई है ; किन्तु स्थान-स्थान पर , क्षीण जन-संख्या वाले अनेक आश्रम , ग्राम , पुरवे , टोले बस गए हैं । जो कुछ मुझे ज्ञात हुआ है , उसके अनुसार प्रायः प्रत्येक जाति के लोग यहां बसे हुए हैं और बसते जा रहे हैं । आर्यों की अनेक उपजातियों के लोग , शबर , किरात , नाग , निषाद , कोल , भील , यक्ष , किन्नर, वानर तथा ऋक्ष जातियों के लोग हैं । किन्तु इन्हीं सबके बीच एक नयी जाति पनप रही है -- वह जाति रक्त तथा आकार-प्रकार की भिन्नता के कारण नहीं है ; वह एक चिंतन-प्रवृत्ति है । वह प्रवृत्ति-जाति राक्षसों की है । प्रत्येक जाति के अनेक लोग , जैसे-जैसे अन्य लोगों की संपत्ति धनाढ्य बनते जा रहे हैं — राक्षस प्रवृत्ति में दीक्षित होते जाते हैं ।"[90]

ये राक्षस-प्रवृत्ति के लोग सम्पूर्ण प्रदेश पर आधिपत्य

जमाना चाहते हैं । फलतः वे अन्य लोगों के यहां आकर बसने के विरोधी नहीं है, बल्कि वे तो चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा ऐसे लोग यहां आकर बसें ताकि उनकी परोपजीवी विलासी भोगवादी प्रवृत्ति चलती रहे । बस्तियों के अभाव में ये वन-उपवन, नदियां, पर्वत, भूमि किसी काम के नहीं है । ' उन्हें वनों के काटने, भूमि जोतने, खानों से धातुएं निकालने, नदियों से मछलियां पकड़ने, नौकाएं चलाने, अपने घरेलू कामों तथा व्यक्तिगत सेवाओं के लिए दास चाहिए । भोग के लिए स्त्रियां चाहिए, नर-मांस के लिए पुरुष चाहिए । इन्हीं सब कारणों से वे चाहते हैं कि इस प्रदेश में पहले से बसे हुए लोगों की जन-संख्या बढ़े तथा बाहर से आकर भी विभिन्न जातियों के लोग बसें । किन्तु वे नहीं चाहते कि यहां की प्रजा बुद्धिवादी, स्वतंत्र चिंतक, आत्मनिर्भर, अधिकारों के प्रति सजग-सचेत तथा आत्मरक्षा में समर्थ एवं शक्तिशाली हो । वे चाहते हैं कि यहां की प्रजा बाड़े में पला उनका पशुधन हो, जिसे वे जिस काम में चाहें, जोत दें और जब चाहें इसे मारकर खा जाएं । अपनी रक्षा में समर्थ शरीर तथा स्वतंत्र रूप से सोचने वाला मस्तिष्क, उन्हें अपने लिए खतरा लगता है, अतः उसे वे अपना शत्रु समझते हैं । बुद्धिवादी ऋषि उनके सबसे बड़े शत्रु हैं क्योंकि वे लोग न केवल स्वयं शक्तिशाली हैं, वरन चिंतनशीलता का रोग संक्रामक रूप से फैलाते हैं ।' 91

दूसरे शब्दों में वे चेतना नहीं चाहते, शिक्षा नहीं चाहते, मनुष्य नहीं चाहते, मानवीय चिंतन नहीं चाहते । वे केवल कीड़े-मकोड़े और पशु चाहते हैं । यही तो अंग्रेज चाहते थे । यही इस समय विश्व के विकसित देश (Developed countries) चाहते हैं । वे कालकाचार्यों को तो सह सकते हैं, किन्तु विश्वामित्रों को नहीं । और एक दूसरे परिप्रेक्ष्य में सोचें तो यही आज के, आजादी के बाद के, नव-धनिक-वर्ग (Neo-Capitalist) के लोग चाहते हैं । उनको भीड़ चाहिए, चिंतक नहीं । मेरी स्मृति में आ रहा है, गांव का वह जमींदार और उसके शब्द । एक बार मैं बड़ौदा जिले के एक गांव में

गया था । मेरे मित्र के मामा उस गांव के बड़े जमींदार व सरपंच भी थे । मैंने देखा कि दोपहर के समय उनके यहां गांव की प्राथमिक स्कूल के दो-तीन शिक्षक बैठने आये और दो-तीन घण्टे तक गप-शप करते रहे । उनके जाने के पश्चात् मैंने मित्रके मामाजी से बात की । ये लोग चालू स्कूल से आये थे , आपने उनको कुछ कहा क्यों नहीं ? उन्होंने जो उत्तर दिया वह चौंकानेवाला था । कहा कि " हम नहीं चाहते कि वे गांव के इन दलिद्दरों को पढ़ाएं । ये सब पढ़-लिख गए तो हमारे खेतों में काम कौन करेगा ? " इसे ही राक्षसी-वृत्ति कहते हैं । डा. नरेन्द्र कोहली ने राम के मुंह से बिलकुल सही बात कहलवायी है । xxx राक्षस कोई जाति नहीं है । जहां भी धन और xxxxx सत्ता का गठबंधन होगा , राक्षस वहां अपने आप उग आयेंगे ।" हेतिकुल जिस आदिम अवस्था से उठा था , वहां नर-मांस खाने की परंपरा थी । किन्तु राक्षसी-चिंतन जिस स्वार्थ बुद्धि पर चलता है , वह अंतिम रूप से अपने व्यक्तिगत सुख की ही चिन्ता करता है । सुख की अति , सदा ही बीभत्सता की ओर बढ़ती है । ये नव-राक्षस भी क्रमशः उसी ओर बढ़ रहे हैं । इन्होंने नर-मांस खाने की परंपरा को आभिजात्य के धरातल पर प्रतिष्ठित किया है । मदिरा तथा काम-संबंधों की नग्नता को भी ये गौरवान्वित करते जा रहे हैं — ताकि क्रमशः मानवीय सम्बन्ध समाप्त हो जाए और मनुष्य पूर्णतः पशु हो जाए ।" [92]

सम्प्रति दिल्ली के पास नोएडा में जो बच्चों के नर-कंकाल मिले हैं और उस सम्बन्ध में सुरेन्दर कोली और मोनिंदर पांढोरी नामक दो नर-राक्षसों को पकड़ा गया है । उस संदर्भ में और भी कई चौंकाने वाले तथ्य सामने आये हैं जिनमें एक यह भी है कि बच्चों के साथ कुकर्म के पश्चात् गला घोंटकर उनकी हत्या कर दी जाती थी और बाद में से सुरेन्दर उन बच्चों का कलेजा निकालकर उनका मांस खा जाता था । कुछ डाक्टरों से भी इनकी सांठगांठ थी जो इन बच्चों के शरीर से कुछ आवश्यक अंग निकाल लेते थे । [93] यह घटना

भी इस विचार को ही प्रमाणित करती है कि राक्षस कोई जाति नहीं, प्रवृत्ति-विशेष है और किसी भी जाति का व्यक्ति, चाहे वह ब्राह्मण ही क्यों न हो राक्षस हो सकता है। प्रायः हमारी सभी रामायणों में रावण को भी ब्राह्मण ही बताया गया है। और इस प्रकार लेखक ने इस रामायण कथा को आधुनिक संदर्भों से इस तरह जोड़ा है कि न केवल उनके समय की घटनाएं, किन्तु भविष्यत् घटनाओं के संदर्भ में भी वह प्रासंगिक हो उठता है।

राम, लक्ष्मण, सीता, सुमित्रा, कैकेयी, कौसल्या आदि सभी पात्रों को लेखक ने मानवीय धरातल पर लाकर खड़ा कर दिया है। लक्ष्मण के मन में अपने पिता के प्रति घोर वितृष्णा का भाव है। उपन्यास में सर्वत्र दशरथ के लिए वह "सम्राट" शब्द ही प्रयुक्त करता है। बल्कि समय-समय पर उन पर व्यंग्य-बाण चलाने मे में भी कोई चूक नहीं करता है। राम जब लक्ष्मण को कहते हैं कि अभी उसका विवाह भी नहीं हुआ है और यदि वह उनके साथ वन में गया तो तब तक उसकी विवाह की वय निकल जायेगी। तब लक्ष्मण दशरथ पर वार करने में कोई कसर नहीं रखता — "जिस वय में पूज्य पिताजी ने कैकेयी से विवाह किया था, क्या मेरा वय उससे भी अधिक हो जायेगा ?"[94] जब सुमंत्र लक्ष्मण को सम्राट के कोमल पक्ष की ओर देखने की बात करते हैं, तब लक्ष्मण सम्राट को कितनी घृणा करता है, वह स्पष्टतः सामने आता है — "आपने उनका वह रूप नहीं देखा, आर्य सुमंत्र। लक्ष्मण की वाणी वक्र हो उठी, " जब सुन्दरी युवती देखते ही उनके मुंह में पानी भर आता था। विभिन्न सामान्य-जन की कन्याओं, सामंतों की पुत्रियों और राजाओं की राजकुमारियों को वे अपने सैनिक बल की धमकी अथवा वास्तविक बल से प्राप्त करते थे। अपनी साम्राज्ञी को (माता कौसल्या को) उन्होंने जूते की नोंक पर रखा और राम जैसे पुत्र की विकट उपेक्षा की। आपने उनका वह रूप नहीं देखा, जब वे

क्रमशः वृद्ध हो रहे थे, काया और बुद्धि क्षीण हो रही थी, आंखों की ज्योति मंद हो रही थी, पेशियां गलकर चर्बी बन रही थीं और तब भी सम्राट वर-यात्राएं कर रहे थे। दर्प से दमकती कैकेयी के पीछे अनाथ वृद्ध के समान डोलते फिरना क्या ~~सर्व~~ तनिक भी सम्मान-जनक था।" 95

उपन्यास के बुद्धिजीवी पाठकों को लक्ष्मण के संदर्भ में दो बातें सराहनीय लग सकती हैं। पहली बात यह कि वनगमन के समय लक्ष्मण अविवाहित हैं, और दूसरी बात यह कि वनवास के दरमियान लक्ष्मण आवश्यकतानुसार रात में सोते भी हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा पंडित महावीरप्रसाद द्विवेदी ने रामायण में उर्मिला की उपेक्षा को लेकर काफी क्षोभ व्यक्त किया था। अतः डा. कोहली के इस पक्ष से उन्हें संतोष होगा। उनका लक्ष्मण मनुष्य है और वह राम तथा सीता के साथ, विशेषतः सीता के साथ हास-परिहास भी करता है। लक्ष्मण की भांति सीता में भी नारीत्व की सहजता और ~~xस्वस्थ~~ स्वाभाविकता के साथ एक प्रकार की उद्देश्य-कर्तव्य निष्ठा का सृजन हुआ है। सीता राम के साथ अनेक सामाजिक-राजनीतिक तथा वैश्विक मसलों पर विचार-विमर्श करती है। यहां सीता फूल-सी कोमल और अबला के रूप में प्रस्तुत नहीं हुई है। राम उसे शस्त्र चलाना सिखाते हैं, नाव चलाना सिखाते हैं और युद्धाभ्यास और संघर्ष प्रतिरोध के लिए उसे तैयार करते हैं। सीता कोलों, भीलों, किरातों, वानर, ऋक्ष आदि वन्य और आदिम जातियों की स्त्रियों को प्रशिक्षित करती है। रास्ते में राम अपने मित्र निषाद-राज गुह को मिलती है, तो ~~xx~~ सीता भी निषाद-रानी से मुलाकात करती है और नये-नये राजनीतिक-सांस्कृतिक सम्बन्धों को स्थापित करती है। कोई भी सामान्य स्त्री जब सीता को "देवि" के रूप में सम्बोधित करती है, तो सीता तुरन्त उसे टोक देती है और उसे "दीदी" के सम्बन्ध से सम्बोधित करने के लिए कहती है, क्योंकि सीता जानती है कि "दीदी" में जो आत्मीयता है, वह

"देवि" में कहां ? सीता के पास वन में भी आभूषण है । दशरथ सुमंत्र के हाथों जब आभूषण भेजते हैं , तब कुछ समय के लिए तो वह किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाती है , किन्तु बाद में उनकी इच्छा का आदर करने के लिए उन्हें अंगीकार कर लेती है । यहाँ तुलसी के "मानस" में निरूपित एक समस्या का भी समाधान हो जाता है कि यदि सीता तपस्विनी वेश में और बिना अलंकार के थी , तो अशोक-वाटिका में "चूड़ामणि उतार तब दीन्हीं " कैसे सम्भव हुआ ? और अपहरण के बाद वनमार्ग में गिरी हुई " "किंकिरिणयां " कैसे मिलतीं. ? इस प्रकार सीता को भी राजरानी या राजकुमारी के स्थान पर सचमुच में "भूमिपुत्री" होने का अवसर मिलता है । और राम भी अपने "शस्त्रागार" के साथ चलते हैं ।

इस प्रकार "अवसर" में हमें राम-वनगमन से लेकर चित्रकूट तक की यात्रा का विवरण मिलता है । चित्रकूट भी राम सप्रयोजन ही कुछ अधिक रहते हैं । वे अयोध्या के निकट चित्रकूट में रहकर भरत की प्रवृत्तियों पर नज़र रखे हुए हैं और जब भरत की ओर से पूर्ण-तया आश्वस्त हो जाते हैं तब आगे की यात्रा के लिए प्रस्थान करते हैं । इस प्रकार यहां भी राम ईश्वर के अवतार न होकर एक मानव-महानायक के रूप में ही चित्रित हुए हैं । यथार्थ-परिवेश निर्माण के लिए पौराणिक पात्रों के साथ उन्होंने जन-समाज के कुछ यादृच्छिक पात्रों को इस प्रकार फेंट दिया कि कथा विश्वसनीय , पठनीय और सहज-स्वाभाविक प्रतीत हो ।

संघर्ष की ओर :

"दीक्षा" और "अवसर" की तुलना में रामकथा उपन्यास-माला का यह खण्ड कुछ अधिक विस्तृत हो गया है । लेखक ने उसे दो खण्डों में xxxxxx उपन्यस्त किया है । प्रथम खण्ड पन्द्रह अध्याय और 208 पृष्ठों में विस्तृत है , और द्वितीय खण्ड आठ अध्याय और एक सौ उनचास पृष्ठों में उपन्यस्त है । प्रथम खण्ड की कथा

चित्रकूट से आगे प्रस्थान से आरंभ होकर ऋषि अगस्त्य के आश्रम तक चलती है । इसमें मूल कथा — आधिकारिक कथा — के साथ मुनि धर्मभृत्य द्वारा प्रणीत अगस्त्य-कथा भी चलती है । इस प्रकार वे क्रमशः संघर्ष की ओर बढ़ते जाते हैं । दूसरे खण्ड में चौथे उपन्यास "युद्ध" — राम-रावण युद्ध — की पृष्ठभूमि निर्मित हुई है । इस तरह एक श्रृंखला की भांति ये स्र उपन्यास परस्पर जुड़ते चले गए हैं । और यह जुड़ाव इतना कलात्मक और कथा-शिल्प कौशल युक्त है कि ये उपन्यास स्वतंत्र भी हैं और उपन्यासमाला के मणके भी हैं, ऐसा प्रतीत हुए बिना नहीं लगता ।

"संघर्ष की ओर" रामायण के "अरण्य-कांड" की कथा पर आधारित है । इस उपन्यास में लेखक को रामकथा के साथ-साथ अपने युग की परिस्थितियों को चित्रित करने का भरपूर मौका मिला है । यहां उन्होंने अपने युग के चिंतन को वाणी प्रदान की है । इसमें राक्षसों द्वारा खाए गए तपस्वियों और मनुष्यों की हड्डियों के ढेर का बीभत्स और दिल दहलाने वाला चित्रण है, इन सब स्थितियों से विवश आत्मदाह करने वाले ऋषि शरभंग हैं, राम को अपने आश्रम में ठहराने से डरने वाले सुतीक्ष्ण हैं और पंचासर में अप्सराओं के साथ विहार करते हुए, नृत्य और संगीत में झूमते हुए मांडकर्णि हैं । सबसे महत्वपूर्ण और चौंका देनेवाली बात यह है कि शरभंग के जिस आश्रम के पास वह हड्डियों का ढेर है, उस आश्रम में इन्द्र का भी आवागमन होता रहता है और इन्द्र की ओर से निराश और हताश होकर ही ऋषि शरभंग आत्मदाह कर लेते हैं । यहां आदिम जातियों के शोषण-चक्र में इन्द्र भी रावण जैसे राक्षसों से मिला हुआ है । डा. नरेन्द्र कोहली इस संदर्भ में कहते हैं —" मैंने यहां पिछड़ी हुई अविकसित मानवता के विरुद्ध महाशक्तियों के षडयंत्र की कल्पना की है । इस अविकसित मानवता के पक्ष में खड़े हैं शरभंग और अगस्त्य । राम इसी पक्ष की सहायता के लिए वहां आते हैं । दस वर्षों तक राम मानवता के शत्रुओं का नाश करते हैं और उस सम्पूर्ण क्षेत्र को भयमुक्त

कर अगस्त्य के आदेश से पंचवटी में आकर बस जाते हैं । पंचवटी के सामने गोदावरी है× के उस पार शूर्पणखा का सैनिक स्कंधावार है । यहाँ से राक्षसों के साथ राम द्वारा संगठित लोगों को संघर्ष आरंभ होता है । शूर्पणखा को मैंने प्रौढ़ वय की , धन-सत्ता-सेना संपन्न कामुक स्त्री के रूप में चित्रित किया है । जटायु गृध्र गुरिल्ला-योद्धा हैं तथा विभिन्न जन-संगठन राम की सेना है ।' 96

पहले निर्दिष्ट किया जा चुका है कि प्रस्तुत उपन्यास दो खण्डों में विभक्त है । अध्ययन की सुविधा हेतु हम यहाँ प्रथमप्रथम खण्ड की कथा को संक्षेप में वर्णित कर रहे हैं ।

उपन्यास के प्रथम खण्ड में ऋषि शरभंग का आत्मदाह , इस संदर्भ में मुनि ज्ञानश्रेष्ठ का मौन , मुनि धर्मभृत्य की स्पष्ट बातें , अस्थिपिंजर का रहस्योद्घाटन , मुनि सुतीक्ष्ण सुतीक्ष्ण की तटस्थता पूर्ण कायरता , सीता को उठा ले जाने का विराध नामक राक्षस का प्रयत्न , जव और शतहृदा के पुत्र वराध का वध , भीखन द्वारा यह संकेत मिलना कि मुनि धर्मभृतय अगस्त्य-कथा का प्रणयन कर रहे हैं , यहाँ से मूल कथा के साथ-साथ उसके समान्तर समानांतर अगस्त्य और भारद्वाजतनया लोपामुद्रा की कथा का चलना ,अगस्त्य को समय देकर प्रवीर नामक आर्य-प्रमुख का न आना , विन्ध्य के उत्तर में आर्य-प्रदेश में लूटपाट और आगजनी की घटनाएं , आर्यों का वानर जाति के लोगों पर शक , वानरों पर आक्रमण की तैयारी , अगस्त्य द्वारा प्रवीर तथा उसके साथियों को समझाना कि यह कार्य वानरों का नहीं है , उनके न लौटने तक वे इस प्रकार की कोई मूर्खता-पूर्ण पहल न करें इस तरह की हिदायत देकर अगस्त्य का विन्ध्य के दक्षिण में वानर-ऋक्ष -गृध्र आदि जातियों की बस्तियों में जाना , वानर,ऋक्ष , गरुड़ , गृध्र (गिद्ध) आदि आर्येतर मानव-जातियों की स्पष्टता , अगस्त्य का शतालु-साझा (पति-पत्नी) नामक वानर-प्रमुख से मिलकर बात करना , ठीक वैसी ही घटनाओं का

वानर-ग्रामों में भी घटित होना और उनको आर्यों पर शक होना , घोड़ों के खुर के निशानों से गुरु अगस्त्य का समझ जाना कि ये आर्यों का नहीं बल्कि दक्षिण-पश्चिम के राक्षसों का है , वानर-यूथों को भी समझाना , प्रभा का इलाज करना , अंध-विश्वासों से और भूत-प्रेत इत्यादि मान्यताओं को भगाना , इस प्रकार आर्यों और वानरों के बीच समझौता करवाना , इधर मूल कथा में ~~अर्थ~~ अनिंद्य और सुधा की कहानी , मांडकर्णि की कहानी , खान-कर्मियों का खान-मालिकों की ओर से शोषण , अनिंद्य द्वारा बताना कि गरीबी और आर्थिक समस्याएं मद्य-पान के लिए प्रेरित करती हैं , भूधर द्वारा खेतों पर काम करने वाले कृषकों का शोषण , बहन-बेटियों को बेच देना , कुटीर निर्माण योजना , शिक्षा और जागृति , ऋषि की नयी परिभाषा , जनवाहिनी का निर्माण , सामूहिक खेती की विभावना , लोक-जागरण के कारण नयी चेतना , मुनि आनंद-सागर के आश्रम को बचाना , अग्निमित्र और उग्राग्नि से खान-मजदूरों को मुक्ति दिलाना , फलतः राक्षसों का आक्रमण , राक्षसों को पराजित करना , फलतः लोगों में उत्साह के ज्वार का जगना , भूधर का वध , आश्रमवाहिनियों और ग्रामवाहिनियों की स्थापना , मंती-आतुर की कहानी , शराब के व्यापारी उजास को समझाना , आनंदसागर आश्रम पर राक्षसों का धावा , बंदी राक्षसों तथा ~~भू~~ भूधर का वध करने वाले वृद्ध को पकड़कर ले जाना , मुनि आनंदसागर का समाज-निरपेक्ष चिंतन , राम द्वारा समझाना कि समाज-सापेक्ष चिंतन और अध्यात्म से ~~भरभ×~~ ही लाभ हो सकता है , राक्षसों के दूसरे हमले से गांववालों का टूट जाना , भूधर की जमीन पर काम करने से इन्कार , राम के प्रयत्नों से उनमें पुनः आशा-संचार , राक्षसों से निपटने के लिए युद्ध की तैयारियां , राक्षसों का हमला , राम ~~दरदर~~ , लक्ष्मण , सीता और जनवाहिनी के कारण अनेक राक्षसों का मारा जाना , राक्षसों की ओर से ओगरू नामक एक का पकड़ा जाना , किन्तु उसका राक्षस न होना , उसका कर्कश नामक पुरोहित का दास होना , कर्कश से जुड़ी दैवी-शक्ति की

झूठी कहानी , कर्कश की ××× धूर्त-विद्या का पर्दाफाश , ओगरू द्वारा उसकी हत्या , ओगरू के गांव के लोगों का भी राम के प्रति आकर्षित होना ,जन-जागरण की बातें मुनि सुतीक्ष्ण तक पहुंचना , राम को उनका आमंत्रण , राम का सुतीक्ष्ण के आश्रम जाना , आस-पास के जन-समूह का उमड़ पडना , राम द्वारा उनका संगठन और जागरण आदि घटनाओं का वर्णन हमें उपलब्ध होता है ।

उधर अगस्त्य की कहानी में मुर्टू नामक एक वानर-शिशु का अन्य अनेक शिशुओं के साथ अपहरण , योग्यता और उपयोगिता के कारण मुर्टू का लंका के राज्य में उच्च पद पर पहुंचना , उसके द्वारा बड़े-बड़े जलपोतों का निर्माण , उसी प्रकार मुर्टू के ही गांव के नीलाद्रि नामक युवक के सपनों का सार्थक होना , कई वर्षों बाद मुर्टू का गांव लौटना पर गांव और गांववालों की दरिद्रता और जहालत से निराश होना , मुर्टू के पिता द्वारा मुर्टू को गुरु अगस्त्य के पास ले जाना , अनेक शंका-कुशंकाएं , दूसरे दिन मुर्टू का अकेले गुरु को मिलना , गुरु की बातों और तर्कों से निरस्त होकर उसी जनपद में रहकर उसके उद्धार की योजना , उसीके अन्तर्गत ग्राम-प्रमुख को मिलना , यूथपति को मिलना , पुरोहित को मिलना , पुरोहित द्वारा समुद्र देवता की बात , समुद्र को लांघना अर्थात एक बहुत बड़ा पाप , समुद्र देवता के रूष्ट हो जाने का डर बताना , बुद्धिमान मुर्टू का समझ जाना कि गांववालों की गरीबी और जड़ता का मूल कारण पुरोहित ही है , अपने निजी स्वार्थों पर खतरा मंडराता देख पुरोहित द्वारा मुर्टू का अपमान , उसको प्रताड़ित करना , फलतः मुर्टू का पुनः लौट जाना आदि घटनाओं को मुनि धर्मकृत्य द्वारा प्रणीत अगस्त्य-कथा में बताया गया है । उसके बाद की कथा मुनि सुतीक्ष्ण बताते हैं । मुनि सुतीक्ष्ण अगस्त्य के ही शिष्य है किन्तु स्वभाव की भीरूता के कारण राक्षसों से डरते हैं , परन्तु इधर की नवीन गतिविधियों से उनकी आत्मा भी जग जाती है और इसीलिए वे राम को आमंत्रित करते हैं , इसे निर्दिष्ट किया

जा चुका है । मुनि सुतीक्ष्ण जो कथा बताते हैं उसमें कालकेयों को पराजित करना , उसके द्वारा वानरों की समुद्र-विषयक मान्यताओं अन्धविश्वासों को दूर करना , वानरों को नौकाओं और जलपोतों के लिए प्रेरित करना , वातापि और इल्वल का संहार आदि घटना-ओं को उपन्यस्त किया गया है । यहाँ पर अगस्त्य से संबंधित विन्ध्य को झुका देनेवाले मिथक की कथा तथा अगस्त्य द्वारा समुद्र को पी जाने की मिथक कथाओं के मिथकार्थों को भी लेखक ने स्पष्ट किया है ।

ऋषि सुतीक्ष्ण के आश्रम से राम, सीता, लक्ष्मण और मुखर ऋषि अग्निजिह्वा के आश्रम जाते हैं और वहाँ से वे अन्ततः ऋषि अगस्त्य और लोपामुद्रा के आश्रम में पहुँचते हैं । यहाँ से रामकथा और अगस्त्य-कथा मिल जाते हैं । राम और अगस्त्य के बीच गंभीर विचार-विमर्श होते हैं । अगस्त्य राम को भविष्यत खतरों से भली-भाँति परिचित कराते हैं , किन्तु राम की बातों से आश्वस्त होकर उनको जनस्थान की ओर पंचवटी जाने का आदेश और आशीर्वाद देते हैं । एक तरह से अगस्त्य अपना मिशन राम-लक्ष्मण और सीता को सुपूर्द कर देते हैं । सीता भी लोपामुद्रा की बातों और उनके कार्यक्षेत्र से काफी प्रभावित होती है । लोपामुद्रा एक चिकित्सालय चलाती है । शंतालु की कन्या एक महान वैद्य और शैल्य चिकित्सक हो गई है । वह अब सेनानायक सिंहनाद की पत्नी है । यहाँ पर अगस्त्य ने युद्ध के लिए शैल्य-चिकित्सा के महत्त्व को भी बताया है और कहा है कि कई बार सुनियोजित , व्यवस्थित और वैज्ञानिक ~~शैल्य~~ शैल्य-चिकित्सा के अभाव में जीते हुए युद्ध भी पराजय में परिवर्तित हो जाते हैं । अतः युद्ध के लिए जहाँ शस्त्रागार का महत्त्व है , वहाँ एक अच्छे चिकित्सालय का भी महत्त्व है । यहाँ तक की कथा "संघर्ष की ओर" के इस प्रथम खण्ड में उपन्यस्त है ।

लेखक ने अपने पूर्व-उपन्यासों की तरह यहाँ भी समसामयिक समस्याओं और प्रश्नों से सम्बन्धित चित्रण प्रस्तुत किया है । मुनि सुतीक्ष्ण के आश्रम के पास जो कंकालों का ढेर है , उसके संदर्भ में

मुनि ~~धर्मभृत्य~~x धर्मभृत्य जो बात करते है वह लोमहर्षक है । यथा — "जब किसीको अपना शत्रु मानकर राक्षस उसका वध करते हैं, तो उसके सगे-सम्बन्धी भी भयाक्रान्त होकर उस व्यक्ति को अपना आत्मीय स्वीकार कर, उसका अंतिम संस्कार करने का साहस नहीं जुटा पाते । वे चोरी-छिपे उस शव को अथवा उसकी अस्थियों को यहां फेंक जाते हैं ताकि उस मृत व्यक्ति का पृथक् अस्तित्व भी समाप्त हो जाए — यहां तक कि स्वयं राक्षस भी स्मरण न कर सकें कि उन्होंने उसकी हत्या की थी और उनके सम्बन्धी कौन लोग थे ।" 97

हम प्रायः देखते हैं कि नगरों या महानगरों या औद्योगिक क्षेत्रों में बड़े-बड़े उद्योगपति श्रमिकों का भयंकर शोषण करते हैं । वे बराबर चाहते हैं कि मजदूरों का अपना कोई संगठन न बने और यदि मजदूरों के हितों के लिए कोई व्यक्ति आवाज़ उठाता है, उन्हें न्याय और विविध प्रकार की सुविधाओं को देने के बात करता है, उनके पारिश्रमिक को बढ़ाया जाए उसकी मांग करता है और यदि वह व्यक्ति उन श्रमिकों ~~के~~ के बीच अपना स्थान बना लेता है, श्रमिक उसकी बात को सर आंखों पर चढ़ाने के लिए तत्पर हो जाते हैं तो ये न्यस्त हित वाले उद्योगपति किसी-न-किसी प्रकार उस कांटे को दूर कर देते हैं । उसके लिए वे साम, दाम, दण्ड ~~xx~~ और भेद तमाम प्रकार की नीतियों को काम पर लगाते हैं । "संघर्ष की ओर" में ऐसा चरित्र मांडकर्णि का है । मांडकर्णि श्रमिक बस्तियों में बराबर कहता था कि उन खानों को अधिक दोहन न किया जाए । ऐसा करने पर वे कभी भी धंस सकती है, किन्तु उन स्वार्थी खान-मालिकों अग्निमित्र और उग्राग्नि के कानों पर जू तक नहीं रेंगती है और सचमुच में एक दिन सैंकड़ों श्रमिक वहां जीवित समाधि ले लेते हैं । उस दिन से श्रमिक मुनि मांडकर्णि को खूब मानने लगते हैं । लेकिन होता क्या है ? वे लोग मुनि मांडकर्णि को ही खरीद लेते हैं । उसके लिए एक प्रासाद बना देते हैं जहां अप्सराओं का नृत्य होता रहता है । गरीबों की हित-

चिन्ता करने वाला मुनि मांडकर्णि मर जाता है और उसके स्थान पर एक राक्षस मांडकर्णि का निर्माण होता है जो रात-दिन सुरा-सुन्दरी में आकंठ डूबा रहता है ।

मुर्तु की जो समस्या है वह "ब्रेइन ड्रेनेज " की समस्या है । साथ ही लेखक ने पूर्ण विकसित राष्ट्र किस प्रकार अविकसित देशों का शोषण करते हैं , वह भी इंगित किया है । मुर्तु जैसे युवक किसी अगस्त्य की प्रेरणा से अपने प्रदेश में रहकर यदि सेवा भी करना चाहें तो राजनीतिक और धार्मिक जड़ता उनको करने नहीं देती । डा. खुराना भी अपने ज्ञान का उपयोग अपने देश के लिए करना चाहते थे , पर क्या सरकार ने उनको उपयुक्त संसाधन जुटाने में तनिक भी सहयोग दिया था । भूधर के द्वारा लेखक ने छोटे किसानों की समस्या , उनके ऋण की समस्या , और अन्ततः उनके आर्थिक शोषण की समस्या को रूपायित किया है । जो बात प्रेमचंद "प्रेमाश्रम" , "गोदान" आदि उपन्यासों में कहते हैं , लगभग उसी तरह की बात डा. कोहली अपने पौराणिक उपन्यास में समेकित करते हैं ।

उपन्यास के द्वितीय खण्ड में आठ अध्याय हैं और राम, लक्ष्मण और सीता ऋषि अगस्त्य के आदेशानुसार पंचवटी में आकर अपना आश्रम स्थापित करते हैं , वहां से लेकर सीताहरण तक की घटनाओं का सिलसिलेवार ब्यौरा यहां उपलब्ध होता है । इसमें जटायु से मुलाकात, शूर्पणखा के अत्याचार , उसका पर-पीड़क स्वभाव , उसकी मनोवैज्ञानिक पड़ताल , शूर्पणखा के पति व प्रेमी कालकेय विद्युज्जिह्व का रावण द्वारा वध , उसके पश्चात् शूर्पणखा का विपुलवासनावती स्त्री हो जाना, सेविकाओं और दासियों पर अत्याचार , सुखी दम्पति देखकर उसकी ईर्ष्या और उसको प्रताड़ित करना , राम पर उसका मुग्ध हो जाना , सौन्दर्य-आह्वान हेतु लंका से सौन्दर्य-कर्मियों को बुलाना , राम-शूर्पणखा संवाद , शूर्पणखा की वाग्मिता , राम की युक्ति , सौमित्र की ओर इशारा , शूपर्णखा में आशा का संचार , दूसरे दिन और तैयारियों के साथ आना , सीता का परिहास , जटायु की चिन्ता,

शूर्पणखा का दुग्ध-स्नान , लक्ष्मण-शूर्पणखा- संवाद , सीता को देख कर उग्र रूप धारण करना , लक्ष्मण द्वारा खडग-प्रहार , शूर्पणखा को नाक और कान पर शस्त्र-चिह्नित कर देना , इस प्रकार विरूपता-वाली बात को एक नया रूप देना , प्रतिशोध की भावना , सौ अंगरक्षकों को लेकर जाना , पराजय , खर-दूषण को चौदह हजार की सेना के साथ भेजना , खर-दूषण-त्रिशिरा आदि का वध , राक्षस-सेना का पराजय , शूर्पणखा का लंका भाग जाना , मंदोदरी द्वारा ढाढस बंधवाना , विभीषण की कटु बातें , रावण को चढ़ाना , सीता के अद्वितीय सौन्दर्य के वर्णन द्वारा उसकी लोलुपता को प्रदीप्त करना और उसको सीताहरण के लिए प्रेरित करना , मारीच की सहायता और छद्म द्वारा सीता का अपहरण , जटायु और मुखर का संघर्ष , मुखर का खेत रहना , जटायु का बुरी तरह से आहत होना , रावण-मंदोदरी संवाद , इन्द्रजीत के कारण मंदोदरी के सामर्थ्य का बढ़ना , सीता को एक वर्ष की अवधि तक अशोकवन में रखना , रावण-सीता संवाद , सीता की निर्भीकता , सीता द्वारा रावण की भर्त्सना , शूर्पणखा-त्रिजटा संवाद , मंदोदरी-विरोध के मनोवैज्ञानिक कारणों का विश्लेषण जैसे मुद्दों की लेखन ने चर्चा की है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने शूर्पणखा के उग्र , परपीड़क , कामुक स्वभाव का विश्लेषण सहज एवं मनोवैज्ञानिक ढंग से किया है । यहां शूर्पणखा को एक प्रौढ़ राक्षस महिला बताया है । युवानी में वह काफी सुंदर रही होगी । युवावस्था में उसमें भी कोमल भावनाएं निवास करती थीं , किन्तु अपनी राजनीतिक शत्रुता के कारण रावण उसके प्रेमी-पति कालकेय राजकुमार विद्युज्जिह्व का वध कर देता है । अभी सुहागरात का आनंद भी वह उठा नहीं पायी थी कि उसके भाग्य में वैधव्य आ जाता है । रावण अपनी बहन को प्रसन्न करने के लिए उसे जन-स्थान भेज देता है और उसे अबाधित अधिकार देता है , अपने जीवन की करुण घटना के कारण वह पर-पीड़क हो जाती है । दूसरों को , विशेषतः सुखी गृहस्थों को

पीड़ित करने में उसे विशेष आनंद आता है । स्वर्ण-मृग वाले प्रसंग को दूसरी तरह चित्रित करके उसमें निहित चमत्कार के तत्व का छेद उड़ा दिया है । मारीच यहाँ एक तपस्वी के वेश में जाता है और अपने संकल्प की बात करता है कि वह केवल अपने आसन पर ही बैठता है । उसका आसन स्वर्ण-मृग-छाले का था । पूछने पर बताता है कि उसने आश्रम में आने से पूर्व एक ऐसा स्वर्णमृग देखा था और राम को स्वर्णमृग दिखाने के बहाने से वह बाहर ले जाता है, राम-लक्ष्मण उसकी छद्म-जाल में फंस जाते हैं और छद्मवेशधारी रावण जब मुखर पर प्रहार करता है तब सीता को अपनी कुटिया से बाहर अरक्षित×है आना पड़ता है ।[98] जटायु भी यहां कोई पक्षी न होकर गृध्र जाति का एक वृद्ध गुरिल्ला योद्धा है । वह दशरथ का पुराना मित्र है और शंबर युद्ध में वह दशरथ की ओर से लड़ा था ।[99] राक्षसों के अत्याचारों से वह भी पीड़ित था और निरंतर उनके अत्याचारों के खिलाफ अपने ढंग से लड़ता रहता था ।

रावण खर-दूषण-त्रिशिरा की भांति पंचवटी जाकर क्यों नहीं युद्ध करता, उसकी भी व्यवस्थित-व्यावहारिक पृष्ठभूमि लेखक तैयार करता है । उसके लिए शूर्पणखा रावण को प्रेरित करती है । सीता का अपहरण करने के उपरान्त रावण उसको एक वर्ष की अवधि तक अशोकवाटिका में क्यों रखता है उसको भी यहां सहज-स्वाभाविक ढंग से बताया गया है ।[100] इस प्रकार यहां निरूपित किया गया है कि राम राक्षस-शक्तियों का नाश करने के लिए, लोगों को उनके अत्याचार-अन्याय से मुक्त करने के लिए समस्त दक्षिण आर्यावर्त की आर्येतर आदिम जातियों को संगठित करते हैं, उन्हें प्रशिक्षित करते हैं, उनके हाथों में धनुष-बाण थमा देते हैं । यहां राम की ओर से लड़ने वाले बन्दर-भालू नहीं, वरन् वानर-ऋक्ष-गृध्र आदि आदिम जाति के योद्धा थे । राम उनको संगठित और प्रशिक्षित करते हैं । उनके आत्माभिमान को जगाते हैं और इस प्रकार की जन-वाहिनी जब तैयार होती है, तब बड़े-बड़े साम्राज्यों की चूलें हिल जाती है । अभी

निकट अतीत में गांधीजी ने यह करके दिखाया था और उसके बाद सनx 1971 में बांग्लादेश के बंगबंधु मुजिबर रहमान और उनकी मुक्तिवाहिनियों ने यह कमाल कर दिखाया था । इतिहास इसका साक्षी है कि जब-जब किसी शासक ने आदिम-वनवासी जातियों की सेना को तैयार किया है उसके आश्चर्यजनक परिणाम आये हैं ।

युद्ध :

रामायण पर आधारित डा. कोहली का यह चौथा उपन्यास है । उसमें सीता-हरण से लेकर रावण-वध तक की घटनाओं को उपन्यस्त किया गया है । इस प्रकार यह उपन्यास भी "दीक्षा" , "अवसर" और "संघर्ष की ओर " की अगली कड़ी है । रामायण का युद्धकांड भी सबसे बड़ा है । यह उपन्यास भी अपने पूर्ववर्ती तीनों उपन्यासों से बड़ा है । अतः उसे भी दो खण्डों में विभक्त किया गया है — "युद्ध-1 " और "युद्ध-2 " । जहां उक्त तीन उपन्यास "अभ्युदय" खण्ड-1 में संकलित है , वहां यह अकेला उपन्यास "अभ्युदय-" खण्ड-2 में संकलित हुआ है । युद्ध-1 में कुल 17 अध्याय हैं । उसमें भी खण्ड-1 और खण्ड-2 ऐसे दो विभाग है । खण्ड-1 में नौ अध्याय और खण्ड-2 में आठ अध्याय है । उसी तरह "युद्ध-2 " के प्रथम खण्ड में गयारह और द्वितीय खण्ड में पन्द्रह अध्याय यों कुल मिलाकर छब्बीस अध्या हैं । यह 629 पृष्ठों का एक बृहदकाय उपन्यास है , जिसे हम चाहें तो महाकाव्यात्मक उपन्यास (Epic Novel) भी कह सकते हैं ।

"संघर्ष की ओर " जहां रामायण के "अरण्यकांड" पर आधृत है , वहां "युद्ध" रामायण के "किष्किंधाकांड" , " सुंदरकाण्ड" और "लंकाकाण्ड" की कथा पर आधृत उपन्यास है । इस उपन्यास के संदर्भ में डा. कोहली का अपना मंतव्य है — " मेरे लिए यह प्रश्न अत्यन्त महत्त्वपूर्ण था कि राम , सुग्रीव तथा विभीषण की मैत्री का

आधार क्या था ? राम ने वाली से मित्रता क्यों नहीं की ? सुग्रीव और xxxxxx विभीषण ने अपने भाइयों के विरूद्ध राम का साथ क्यों दिया ? अंगद और तारा को सुग्रीव और राम के विरूद्ध शिकायत क्यों नहीं थीं ? xxxxxxxxx तार ‹ तारा का भाई › अपने बहनोई वाली को छोड़कर सुग्रीव के साथ वनों में क्यों भटक रहा था ? और सबसे बड़ी बात — ब्रह्मा के प्रपौत्र , शिव और दुर्गा के भक्त और कृपापात्र , इन्द्र और कुबेर के विजेता रावण और अपने समय के सबसे सुदृढ़ सुसंगठित साम्राज्य की प्रशिक्षित सेनाओं के विरूद्ध राम और उनकी xxxx वानर-भालुओं की जन-सेना विजयी कैसे हुई ? इन तथा इन्हीं से संबंधित अनेक प्रश्नों का समाधान ढूंढ़ने का प्रयत्न मैंने अपने इस उपन्यास के दोनों भागों में किया है ।'[101]

"युद्ध-1" का प्रथम खण्ड 185 पृष्ठों का है । उसमें यह रामकथा तीन स्तरों पर चलती है — वाली-xxxx सुग्रीव की कथा , राम के विरह तथा सीतान्वेषण की कथा , अशोकवाटिका तथा महामहालय ‹ रावण का महल › की गतिविधियां । वाली-सुग्रीव कथा में वाली की वीरता , दुंदुभि नामक भैंसे को मारना , वाली की जड़ता , मय दानव के पुत्र मायावी की मैत्री के कारण सुरा-सुन्दरी का विलासी जीवन , राजसभा में xxxx सुग्रीव तथा अंगद द्वारा वाली की प्रजा-विरोधी अन्यायी नीतियों का विरोध , मायावी की राजसभा में महासामन्त के रूप में नियुक्ति , अलका नामक वेश्या के प्रेम में वाली का पागल-सा व्यवहार , एक दिन वाली द्वारा मायावी और अलका का पकड़ा जाना , मायावी का मतंग वन में भाग जाना , xxxx वाली द्वारा उसका पीछा करना , काफी सारा समय व्यतीत हो जाना , सुग्रीव का राज्याभिषेक , समाज-सुधार तथा शिक्षा के प्रचार-प्रसार के प्रयत्न , फलतः वाली के सभासदों का उससे रूष्ट रहना , नवीन निर्माण कार्य ; सुग्रीव , हनुमान , नल , नील , तार , वाली के श्वसुर सुषेण आदि की एक धुरी का निर्माण,

अन्ततः मायावी का वध करके वाली का किष्किंधानगरी लौटना , सुग्रीव द्वारा उसका राज्य लौटा देना , उसका पुनः सम्राट होना , अलका को वहां से हटा देने के कारण वाली का कुपित होना , उसके गुर्गों द्वारा निरंतर वाली के सामने सुग्रीव की निन्दा करना , फलतः सुग्रीव तथा उसके साथियों को अपना परम शत्रु मान लेना , उनको बन्दी बनाने के आदेश , सुग्रीव के एक साथी शिल्पी के प्रयत्नों से सुग्रीव का जंगल में भाग जाना , वाली द्वारा सुग्रीव की पत्नी रूमा पर अत्याचार और बलात्कार , उसे भी अपनी पत्नी बना देना , नल-नील-तार-हनुमान आदि का मतंग-वन में सुग्रीव को मिलना , किसी तरह सुग्रीव के मनोबल को बनाए रखने का प्रयत्न करना आदि घटनाएं "युद्ध-। " के प्रथम खण्ड में वाली-सुग्रीव कथा के अन्तर्गत वर्णित है ।

"युद्ध-। " में जैसा कि ऊपर निर्दिष्ट किया है दूसरी कथा सीताहरण के बाद की है । राम-लक्ष्मण अपने कुछ साथियों के साथ सीता को ढूंढते हुए मतंग-वन तक आते हैं । उसके पूर्व मुखर की मृत्यु तथा तात जटायु की मृत्यु को चित्रित किया गया है । जटायु के मरणोन्मुख निवेदन से इतना तो स्पष्ट हो जाता है कि सीता का हरण रावण ने ही किया है । अतः ये लोग सीता को ढूंढते हुए मतंगवन तक आ जाते हैं , जहां सुग्रीव-हनुमान आदि गुप्तवास कर रहे हैं ।

"युद्ध-।" के प्रथम खण्ड में तीसरी समानांतर कथा लंका की है । शूर्पणखा लंका पहुंच जाती है , उसके चढ़ावे में आकर ही रावण सीता का हरण करता है , इतनी कथा तो "संघर्ष की ओर " में चर्चित है । यहां कथा का तार आगे की घटनाओं के साथ जुड़ता है । अध्याय-6, 7, 8 और 9 में लंका की घटनाओं का वर्णन मिलता है । इसमें रावण द्वारा शूर्पणखा को अश्मद्वीप भेज दिया जाता है । सीता अशोकवाटिका में शस्त्र-प्राप्ति का असफल प्रयास करती है । सीता के मन में अनेक तर्क-वितर्क और शंका-कुशंकाएं उठती हैं । सीता

की रक्षिकाओं में एक त्रिजटा है । सीता के साथ उसका व्यवहार कुछ सहानुभूतिपूर्ण रहता है , क्योंकि वह शूर्पणखा की खास सेविका है और शूर्पणखा नहीं चाहती कि निराशा में कहीं सीता आत्महत्या न कर बैठे । वह सीता या रावण की हितचिंतक नहीं है । किन्तु उसकी सोच यही है कि सीता के कारण राम-लक्ष्मण लंका आ सकते हैं और फिर उनसे मिलन की कोई जुगत भिड़ायी जा सकती है । दूसरे वह अपने प्रेमी और पति विद्युज्जिह्व के हत्यारे रावण से खूब घृणा करती है और अन्दर-ही-अन्दर उसका भयंकर विनाश चाहती है । त्रिजटा भी चतुर है । वह सोचती है कि यदि सीता कभी मान जाती है , तो वह रावण की पट्ट महिषी होगी और उन स्थितियों में इधर का व्यवहार अपना कुछ रंग दिखा सकता है । सीताहरण के कारण लंका में सबसे अधिक दुःखी विभीषण है । वह रावण की राक्षसी प्रवृत्तियों का घोर विरोधी है , किन्तु रावण का विरोध करने में सर्वथा अक्षम है । यहां लंका के धनाढ्य लोगों के विलासी जीवन का भी यथार्थ चित्रण लेखक ने किया है । एक नितान्त भौतिकवादी संस्कृति किस प्रकार विकृति का रूप धारण कर लेती है , उसका लेखक ने बड़ा सहज-स्वाभाविक चित्रण किया है । कुंभकर्ण की नीद्रा का विश्लेषण भी यहां लेखक ने किया है । रावण ही अपने न्यस्त हितों की पूर्ति हेतु कुंभकर्ण को मदिरा के सागर में डूबोकर रखता है । बस उसके दो ही काम है — खाना और सोना । इस अध्याय में (अध्याय-7) लेखक ने विभीषण , उनकी पत्नी सरमा और पुत्री कला के अन्तर्द्वन्द्व को भलीभांति उकेरा है । अशोकवाटिका में जब भी रावण आता है उसके साथ मंदोदरी अवश्य होती है । एक बार यहां विभीषण आत्मजा कला भी सीता से मिलने आती है और उसे ढाढस बंधवाती है । नवम् अध्याय में रावण-पुत्र अक्षयकुमार , विरूपाक्ष , नरान्तक और मेघनाद की चर्चा है । मेघनाद और मंदोदरी में कुछ संवाद भी होता है , किन्तु मेघनाद की बातों से मंदोदरी बहुत दुःखी होती है , क्योंकि

उसके विचार भी रावण जैसे ही हैं, बल्कि रावण को उसके कारण ही एक प्रकार शह मिलती है। 102

"युद्ध-1" का दूसरा खण्ड 160 पृष्ठों का है। यहां पर कथा एक ही धरातल पर चलती है। अध्याय-1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 में क्रमशः राम-लक्ष्मण का हनुमान-सुग्रीव मिलन से लेकर हनुमान द्वारा समुद्र-संतरण कर नगरप्रवेश तक की घटनाएं उपन्यस्त हुई हैं। इसमें राम-लक्ष्मण का सुग्रीव तथा उसके साथियों से मिलना, सुग्रीव द्वारा राम का पूर्णतया परीक्षण, समान वैचारिक धरातल तथा राजनीतिक स्थितियों के कारण सुग्रीव से मैत्री-करार, उसके तहत वाली का वध, सुग्रीव का राज्याभिषेक, सुग्रीव द्वारा धर्षिता-पत्नी रूमा को स्वीकार करना, अपराध-बोध के कारण तारा से विवाह, सुग्रीव की राजनीतिक परेशानियां, उसका भी क्रमशः विलासी होते जाना, अंगद और हनुमान की नाराजगी, राम के साथ किए गए करार को विस्मृत कर अपनी ही दुनिया में खोये रहने की सुग्रीव की प्रवृत्ति से राम का दुःखी होना, अन्ततः राम की चेतावनी से उसकी जड़ता का टूटना, सीता-न्वेषण तथा प्रजा-कल्याण और प्रजा को शस्त्र-विद्या में प्रशिक्षित करना, अलग-अलग दिशाओं में विभिन्न नायकों के नेतृत्व में सीतान्वेषण के लिए विभिन्न टुकड़ियों को भेजना, दक्षिण की ओर जाने वाले दल के नेता अंगद, उसके अन्य साथियों में हनुमान, नल, नील, जाम्बवान आदि सदस्यों का होना, अन्ततः दक्षिण-तट समुद्र तक पहुंचना, समुद्र-संतरण की समस्या, अनेक विपदाओं को पार करते हुए हनुमान द्वारा समुद्र-संतरण का कार्य संपन्न करना और किसी तरह नगर में प्रविष्ट हो जाना जैसी घटनाएं यहां क्रमशः उपन्यस्त हुई हैं। हनुमान के लंका पहुंच जाने से मानो उनका एक लक्ष्य सिद्ध होता है। हनुमान यहां के परिवेश से परिचित होते हैं। वे सब प्रकार की स्थितियों का जायजा लेते हैं। 103

"युद्ध-2" का प्रथम खण्ड ।। अध्याय और 172 पृष्ठों का है । हनुमान लंकानगरी में प्रविष्ट हो जाते हैं । वहां के विराट वैभव - प्रदर्शन से उनकी आँखें चौंधिया जाती है , किन्तु शीघ्र ही उनको सिक्के की दूसरी बाजू का भी पता चलता है । यह वैभव शोषणमूलक व्यवस्था का परिणाम था । हनुमान रात के समय रावण का महामहालय भी देखते हैं । रावण और मंदोदरी को भी सुप्त अवस्था में देखते हैं । उन्हें कहीं देवी जानकी नजर नहीं आती है । दूसरे दिन वे अशोकवाटिका तक पहुंचने में और सीता को ढूंढने में सफल होते हैं । सीता से संक्षेप में बात भी होती है । गवद-घास की अंगूठी उनकी पहचान का माध्यम होती है । सीता भी हनुमान को चूडामणि देती है , ताकि हनुमान राम को दिखाकर सीता के अन्वेषण का प्रमाण प्रस्तुत कर सके । सीता अन्वेषण के पश्चात् लंका में कुछ उत्पात मचाना । रावण के कई सेनापतियों का मारा जाना , रावण-पुत्र अक्षयकुमार का मारा जाना , अंततः रावण के यशस्वी पुत्र द्वारा हनुमान को बंदी बना लिया जाता है । रावण मृत्युदंड की घोषणा करता है , किन्तु विभीषण की कुछ तर्कपूर्ण युक्तियों के कारण हनुमान की पूंछ बनाकर उसे आग लगाकर लंका में घूमाने का आयोजन होता है , जो अंततः उनको ही भारी पड़ता है , क्योंकि उसके कारण लंका में आग लग जाती है और हनुमान को वहां से भागने का सुनहरा मौका मिल जाता है । दुबारा समुद्र-संतरण करके साथियों को मिलना , टोली के सभी सदस्यों का प्रसन्न हो उठना , हनुमान के सफलकाम लौटने की सूचना से राम प्रसन्न , युद्ध की तैयारियां , इधर रावण को समझाने का एक अंतिम प्रयास विभीषण करते हैं , किन्तु रावण के कानों पर जूं तक नहीं रेंगती , इसके विपरीत वह विभीषण को सभी दरबारियो और सभासदों के सामने लात मारकर उन्हें निष्कासित कर देता है , अपने विश्वसनीय साथी अविंध्य को अपने परिवार का दायित्व सौंपकर एक नाव द्वारा समुद्र पार करके राम से मिलना , राम-विभीषण वार्ता , विभीषण का राज्या-

भिषेक , समुद्र-संतरण की समस्या , तीन दिन तक कोई उपाय न सूझना , फलतः चारों ओर निराशा का फैलना , सागर में "स्तिया" मार्ग की खोज , वहां जलपोतों को डुबोकर सेतु-निर्माण की नल की योजना सफल , परिणामतः राम की सेना का लंका के तट पर पहुंचना जैसी महत्वपूर्ण घटनाओं को यहां लिया गया है । [104]

"युद्ध-2" का द्वितीय खण्ड में 15 अध्याय और 110 पृष्ठ हैं । इसमें समुद्र-संतरण से लेकर रावण-वध तक की घटनाओं को संजोया गया है । जब रावण को समुद्र-संतरण की सूचना मिलती है , तब जीवन में पहली बार उसे चाटुकारों पर वितृष्णा होती है । अपनी बौखलाहट में वह सीता को गलत सूचना देता है कि उसने राम का वध कर दिया है । थोड़े समय के लिए सीता विचलित होती है , किन्तु बाद में उसे विभीषण की पत्नी सरमा द्वारा सही सूचना मिलती है । युद्ध से पूर्व एक बार राम पुनः अंगद को शिष्टकार के रूप में भेजते हैं , परन्तु रावण पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । युद्ध के प्रथम दिन में ही राम-लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते हैं । इन्द्र द्वारा प्रेषित गरुड़ की औषधियों से उनका उपचार किया जाता है और वे पुनः सचेत हो उठते हैं । उनमें प्राणों का संचार होता है । उसके पश्चात् लक्ष्मण को मेघनाद की अमोघ-शक्ति लगती है और वह पुनः मूर्च्छित हो जाता है । यहां पर लेखक ने दिव्यास्त्र और देवास्त्र के अंतर को भी स्पष्ट किया है । रावण के पास दिव्यास्त्र तो अनेक थे , किन्तु देवास्त्र नहीं थे । युद्ध में रावण के सेनानायक अधिक खेत रहते हैं । वानर-सेना में जन-हानि तो होती है , किन्तु उनके नायक खेत नहीं रहते हैं , इस बात से रावण चिंतित होता है । अतः रावण कुंभकर्ण को युद्ध में उतारता है । कुंभकर्ण भयंकर -भीषण युद्ध करता है और वानर सेना पर भारी पड़ता है । तब राम अपने वायवास्त्र से कुंभ-कर्ण की एक भुजा को शरीर से अलग कर देते हैं । उसके बाद ऐन्द्रास्त्र का प्रयोग कर उसकी दूसरी भुजा भी काट डालते हैं । अंत में चन्द्राकार बाण से उसके पैरों को नष्ट कर इन्द्रास्त्र द्वारा उसके रुण्ड और

मुण्ड को अलग कर दिया जाता है । इस प्रकार कुंभकर्ण की मृत्यु बड़ी ही करुण और दर्दनाक बतायी है । [105] उसके बाद रावण के सभी पुत्र एक-एक कर खेत रहते हैं — देवान्तक , त्रिशिरा , अतिकाय आदि । कुंभकर्ण के पुत्र - कुंभ और निकुंभ भी मारे जाते हैं । हनुमान किष्किंधा जाकर विशल्यकर्णी जैसी संजीवनी को ले आते हैं । मेघनाद भयंकर युद्ध करता है और एक बार पुनः राम और लक्ष्मण को मूर्च्छित कर देता है , किन्तु तेजधर अपने प्राणों पर खेल कर दोनों के शरीर को चिकित्सालय में पहुंचा देता है । हनुमान द्वारा लायी गयी औषधियों से वे पुनः जी उठते हैं । मेघनाद उनको मृत घोषित कर देता है । दूसरे दिन निकुंभलादेवी के मंदिर में वह आभिचारिक यज्ञ कर रहा था । उस समय उसके पास ब्रह्मास्त्र नहीं था । विभीषण के मार्गदर्शन पर लक्ष्मण उस समय ऐन्द्रास्त्र चलाकर मेघनाद का वध कर देते हैं । [106]

कुंभ का वध सुग्रीव द्वारा , निकुंभ का वध हनुमान द्वारा , यूपाक्ष का वध मैंद के हाथों , शोणिताक्ष का वध द्विविद द्वारा , प्रजंघ और अकंपन का वध अंगद द्वारा और खर-पुत्र मकराक्ष का वध स्वयं राम द्वारा हुआ था ।[107] बारहवां अध्याय इस परिवेश से अलग देवभूमि को लेकर है । राम-रावण युद्ध को लेकर देवराज इन्द्र चिंतित है । रावण से इन्द्र की पुरानी शत्रुता है । राम इन्द्र के मित्र नहीं हैं , दूसरे अहल्या प्रसंग के कारण वे इन्द्र से चिढ़े हुए भी हैं , तीसरे उनकी विचारधारा से भी कोई मेल नहीं है । किन्तु राम से देवराज इन्द्र को कोई खतरा भी नहीं है । अतः इस युद्ध में वे राम की सहायता करना चाहते हैं , किन्तु रावण शिवभक्त है , ब्रह्मा का वह प्रपौत्र है । अतः वे इन दोनों से भी कोई विरोध मोल लेना नहीं चाहते । शचि इन्द्र को देवी दुर्गा के पास जाने की सलाह देती है । इन्द्र देवी दुर्गा की चिरौरी करके उनसे शिव की ओर से अभयदान मांग लेता है । दुर्गा भी सीताहरण के कारण रावण से अप्रसन्न थीं , अतः कुमार कार्तिकेय ने जिन दिव्यास्त्रों द्वारा तारकासुर का वध किया था वे दिव्यास्त्र भी राम को देने के लिए इन्द्र को दे देती

हैं । इस प्रकार लेखक यहाँ "राम की शक्तिपूजा" वाले प्रसंग को एक नया रूप व दिशा दे देते हैं । [108]मेघनाद-वध की बात से रावण पूर्णतया टूट जाता है । नाना माल्यवान भी रावण को समझाते हैं कि वह राम को सीता लौटा दें , लेकिन रावण का दंभ और दर्प इसमें बाधक होता है । इस सर्वनाश के बाद अब वह पीछे मुड़ना नहीं चाहता । अंत में वह पूरी तरह से असहाय हो जाता है । उसके पास पर्याप्त सेना भी नहीं रह गयी है । उसके सारे सेनापति मारे जा चुके हैं । केवल महाकाय , महापार्श्व और विरूपाक्ष शेष बच गए हैं । अंतिम दिवस के युद्ध में वे भी मारे जाते हैं तब रावण दुर्धर्ष भयंकर युद्ध करता है । वह अपने कवच-सुरक्षित रथ में है । राम पादाति युद्ध कर रहे हैं । अतः रावण उन पर कुछ भारी पड़ रहा है । लक्ष्मण मूर्च्छित हैं । तब इन्द्र अपना रथ सारथीमातलि-सहित प्रदान करते हैं । अब असम युद्ध द्वैरथ-युद्ध में बदल गया था । राम और रावण एक के बाद एक दिव्यास्त्रों का प्रयोग कर रहे हैं । किन्तु युद्ध का कोई परिणाम नहीं आ रहा है । अंततः राम ऋषि अगस्त्य द्वारा प्रदत्त ब्रह्मा-निर्मित बाण का प्रयोग करते हैं । ऋषि ने राम से कहा था कि इसका प्रयोग किसी निर्णायक क्षण में ही करें और अन्ततः वही बाण रावण के काल का कारण बनता है । बाण रावण के कंठ में लगता है और उसका मुण्ड युद्ध-भूमि पर गिरकर अलग हो जाता है । [109] इस प्रकार रावण-वध वाले प्रसंग में लेखक रावण के दश मस्तक वाली बात को भी नकार जाते हैं और विभीषण द्वारा रावण के मृत्यु के रहस्य को प्रकट करने वाली बात को भी निरस्त कर विभीषण को भ्रातृहन्ता के कलंक से मुक्त करते हैं ।

रावण-वध के उपरान्त सीता-ग्रहण प्रसंग को भी लेखक एक नया रूप देते हैं । वे सीता की अग्नि-परीक्षा वाली बात को साफ नकार जाते हैं । सीता ने एक वर्ष की अवधि में जो अपमान , विरह-यातना , तिक्तता , विपरीत स्थितियों में भी स्वयं को जीवित रखा यही उसकी "अग्नि-परीक्षा " है । राम एक वाक्य में इसे समाप्त कर देते हैं — " एक वर्ष की दीर्घ अग्नि-परीक्षा दी है तुमने ।"[110]

वाल्मीकि रामायण में रावण-वध के उपरान्त राम कहते हैं कि उन्होंने यह युद्ध कुल-प्रतिष्ठा के लिए किया था । इसका परिष्कार लेखक इस प्रकार करते हैं —" सीता कहती है -- "रक्त तो तुमने बहुत बहाया है , प्रिय ! ... देख रही हूं , प्रत्येक अंग पर कोई-न-कोई घाव लगा ही है । " ... राम मुस्कराकर कहते हैं — " ये तो मेरी निष्ठा के प्रमाण हैं । " ... सीता पूछती है -- " मेरे प्रति ? " ... प्रत्युत्तर में राम कहते हैं -- " तुम्हारे प्रति । तुम्हारे प्रेम के प्रति " राम गंभीर हो गये -- " सत्य और न्याय के प्रति । अंधकार के विरुद्ध होने वाले अनवरत और शाश्वत संघर्ष के प्रति । " ... "घाव खाए बिना , कोई अंधकार के विरुद्ध लड़ कैसे सकेगा । "" 111

सीता जब राम से प्रश्न करती है कि क्या उन्हें कभी उसके सतीत्व के बारे में शंका होती है , तो राम उसके उत्तर में कहते हैं — "सतीत्व मन से होता है , मेरी प्रियतमा ! शरीर से नहीं । किसी व्यक्ति को घाव लग जाए , उसकी भुजा या टांग कट जाए तो वह पतित या चरित्रहीन नहीं हो जाता ।" 112 राम के इस उत्तर को सुनकर सीता पुनः पूछ बैठती है --" इस समाज में रहकर भी तुम इतने उदार कैसे हो , प्रिय ?" तो उसके उत्तर में राम कहते हैं --" तुम गुरु विश्वामित्र की दीक्षा को भूल गयी , प्रिये ! तुमसे विवाह के पूर्व उन्होंने मेरे हाथों अहल्या को सामाजिक मर्यादा दिलवाई थी । गुरु दूरदर्शी थे । उन्होंने कदाचित उसी समय तुम्हारे जीवन में इस दुर्घटना की संभावना देखी होगी ।" 113 इस प्रकार इस बात का भी परिहार हो जाता है कि जिस व्यक्ति ने अहल्या का उद्धार किया था , उस व्यक्ति द्वारा सीता के साथ ऐसा व्यवहार कैसे संभव है ।

इस प्रकार डा. कोहली की "रामकथा" रावण के अत्याचारी-अन्यायी शासन के अन्त और विभीषण को सत्ता सौंप देने के साथ समाप्त हो जाती है । वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड की कथा को उन्होंने नहीं लिया है । कथा राम के पुनः राज्याभिषेक तक भी नहीं गयी है ।

उपन्यास के अन्त में पन्द्रहवें अध्याय के अंतर्गत जो राम-विभीषण संवाद है, वह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। राम विभीषण को कहते हैं —" ऐसे में यह न हो कि नये समाज में भी पुराना शोषण और अन्याय चलता रहे; और जिन्होंने नये शासन, नयी व्यवस्थाके लिए अपने प्राण दिए हैं अथवा रक्त बहाया है, वे तथा उनके परिवार पहले के समान शोषण के पात्र बने रहें। यदि ऐसा होता रहा, तो याद रखना, जन-सामान्य को शस्त्र ग्रहण करना आ गया है। ... किन्तु ऐसा न हो कि नया समाज बनाने की आड़ में एक नयी शोषण-व्यवस्था आरंभ हो जाए। अपने सगे-संबंधियों, मित्रों तथा अपने पक्षधरों द्वारा होनेवाले अपराधों का विरोध तथा प्रतिकार, न्याय की पहली माँग है। रावण के समान संसार भर के आततायी गुंडों को एकत्रित कर हिंसा, शोषण तथा अन्याय के आधार पर साम्राज्य स्थापित करना तथा विलास में लिप्त रहना राजनीतिक आदर्श नहीं है।" 114

राम द्वारा कही गयीं ये बातें आज के संदर्भ में पर्याप्त प्रासंगिक लगती हैं। महात्मा गांधी ने विदेशी शासन रूपी रावण से भारत को मुक्त करके उसे स्वतंत्रता दिलवायी है, किन्तु आजादी के इन थोड़े-से वर्षों में ही हम अनुभव कर रहे हैं कि हम पुनः अन्याय, शोषण, अत्याचार और राजनीतिक भ्रष्टाचार की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और जन-सामान्य की आजादी के लिए, उनके अधिकारों के लिए, उनको न्याय दिलाने के लिए एक और लड़ाई हम लोगों को लड़नी होगी। इस प्रकार अंधकार के खिलाफ यह संघर्ष अब भी जारी है। आजाद हो जाना पर्याप्त नहीं है, उस आजादी को पचाना पड़ता है, उसे बनाए रखना पड़ता है और यह कार्य ही कठिन है। उपन्यास के अन्त में विभीषण द्वारा कही गयी यह बात महत्वपूर्ण भी है और सांकेतिक भी —" अब लंका में शूर्पणखाएं उत्पन्न न होंगी। जो हैं भी, उन्हें अपना मार्ग बदलना होगा। नया समाज क्रूर नहीं है, किन्तु अत्याचार के प्रतीकों को या तो बदल देगा, अन्यथा नष्ट कर देगा।" 116

चारों उपन्यासों पर एक विहंगम दृष्टिपात :

डा. नरेन्द्र कोहली के रामायण की कथा पर आधृत चार उपन्यास क्रमशः "दीक्षा", "अवसर", "संघर्ष की ओर" और युद्ध है ; जो क्रमशः बालकांड, अयोध्याकांड, अरण्यकांड, किष्किंधा-कांड, सुन्दरकाण्ड और लंकाकाण्ड पर आधारित हैं। इनमें युद्ध सबसे बड़ा है और वह पिछले तीन काण्ड अर्थात् किष्किंधाकांड, सुंदरकाण्ड और लंकाकाण्ड पर आधृत है।

"दीक्षा" का प्रारंभ विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से होता है। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के जन्म की कथा ; कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी के दशरथ से विवाह की कथा, दशरथ के शम्बरके साथ के युद्ध की कथा, कैकेयी को दिये वरदानों की कथा पूर्वदीप्ति (Flash-Back) शैली में किसी-न-किसी पद्धति या युक्ति का अवलम्ब लेकर कही गई है। लेखक ने रामकथा का पुनर्लेखन नहीं किया है, बल्कि राम के जीवन पर आधारित एक नया मौलिक उपन्यास लिखा है — पौराणिक उपन्यास। पौराणिक उपन्यास की अपनी सीमाएं और मर्यादाएं होती हैं, जिनका निर्वाह लेखक ने किया है। प्रचलित रामकथा के मुख्य प्रसंगों, बिन्दुओं और मोड़ों को लिया है, किन्तु कथा कही है अपने मौलिक ढंग से। इसमें अनेक स्थानों पर उन्होंने कुछ परिवर्तन करके कथा को तार्किक और आधुनिक पाठक के अनुकूल बनाया है। उन्होंने "पुत्रेष्टि यज्ञ" की बात को नकारते हुए राम-लक्ष्मण इत्यादि के जन्म को अलग-अलग समय पर और कुछ अन्तराल से बताया है। राम-और लक्ष्मण की वय में खासा अन्तर — लगभग दश सालका — बताया है। राम और लक्ष्मण तथा भरत-शत्रुघ्न को निकटता को बताया है। कथा के दैवी और चमत्कारिक अंशों का निरसन कर दिया है। सभी पात्रों को मानवीय धरातल पर ला खड़ा किया है और उनका बड़ा ही सुन्दर, सटीक, यथार्थ, सहज-स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। दशरथ का चित्रण

एक वृद्ध कामुक राजा के रूप में हुआ है, जो सत्ता के मद में अपने से वय में काफी छोटी ऐसी कैकेयी से विवाह करता है । फलतः कैकेयी कभी संतुष्ट नहीं रही है और उसके भीतर एक दाह अवश्य प्रज्वलित रहता है । जिस प्रकार गांधारी के साथ उसका भाई शकुनि आया था, ठीक उसी प्रकार यहाँ कैकेयी के साथ उसका भाई युद्धाजित आता है । गांधारी कुरुवंश को समाप्त करवाती है, कैकेयी राम-लक्ष्मण को वन-वास दिलाकर रघुवंश का अहित करवाना चाहती है।

"दीक्षा" के केन्द्र में विश्वामित्र है । विश्वामित्र आधुनिकता के वैज्ञानिकता, प्रगतिशील मानवता के प्रतीक हैं; तो गुरु वसिष्ठ प्राचीन परंपराओं और रूढ़िवादी समाज के प्रतीक हैं । विश्वामित्र के सिद्धाश्रम में राक्षसों का अत्याचार और अनाचार बढ़ जाता है, फलतः वे राम और लक्ष्मण को राजा दशरथ से मांगकर ले जाते हैं । राम और लक्ष्मण की पारंपरिक शिक्षा तो गुरु वसिष्ठ द्वारा हो गयी थी, किन्तु उनकी वास्तविक दीक्षा ऋषि विश्वामित्र द्वारा संपन्न होती है । विश्वामित्र के पास अनेक दिव्यास्त्र हैं, जिनके द्वारा वे राक्षसों का वध करवा सकते हैं । किन्तु उनको तलाश थी एक ऐसे व्यक्ति की जिनको अपने दिव्यास्त्र देकर वे निश्चिंत हो सकते थे । अतः अयोध्या से लेकर ताडकावन तक की यात्रा में वे राम-लक्ष्मण को परख भी लेते हैं और अत्याचार, अनाचार, अन्याय और मानव-विरोधी शोषण के खिलाफ उन्हें पूर्णतया दीक्षित भी कर देते हैं । और इसीलिए राम वनजा को प्रतिष्ठित करते है, अहल्या का उद्धार करते हैं और अन्ततः अज्ञातकुलशीला सीता का वरण करते हैं । अहल्या-प्रसंग का लेखक ने पुनर्संस्कार किया है । गौतम ऋषि किसी विश्वविद्यालय के कुलपति के प्रतीक हो जाते हैं । इन्द्र राज्यसत्ता का प्रतीक है । निर्दोष-निरीह अहल्या इन्द्रिय-लोलुप शासक के हाथों बलात्कृत होती है, फलतः जड़ीभूत हो जाती है । बाद में राम-लक्ष्मण-विश्वामित्र की सहानुभूति और संवेदना से वह पुनः आत्म गौरवान्वित होती है । इस प्रकार सीता-जन्म, धनुष-भंग,

परशुराम का तेजोवध आदि प्रसंगों का निरूपण भी आधुनिक ढंग से नये अर्थघटन के साथ किया है । शिव और ब्रह्मा को वे आधुनिक महासत्ताओं — अमरिका और रूस — के रूप में देखते हैं , जिनसे अन्य छोटे-छोटे और अविकसित या अर्द्धविकसित देश आवश्यकतानुसार शस्त्रास्त्र प्राप्त करते रहते हैं ।

"अवसर" में जो मानवतावादी दीक्षा राम-लक्ष्मण को विश्वामित्र द्वारा प्राप्त हुई थी , उसे चरितार्थ करने का एक अ " अवसर" उन्हें वनवास के द्वारा प्राप्त हो जाता है । "दीक्षा" के केन्द्र में विश्वामित्र थे , "अवसर" के केन्द्र में राम है । यहाँ राम कोई ईश्वर , परब्रह्म का स्वरूप , विष्णु का अवतार न होकर एक महान जननायक — मानवतावादी जननायक -- के रूप में चित्रित है । फलतः अयोध्या छोड़ने से पूर्व वह अपनी माताओं -- कौशल्या और सुमित्रा — के क्षेम-कुशल का पूर्णतया प्रबंध करता है । भरत की ओर से भी वह पूर्णतया संशयमुक्त नहीं है । यही कारण है कि वह अयोध्या छोड़ने के बाद काफी समय अयोध्या के निकट चित्रकूट में व्यतीत करता हैं और भरत की ओर से पूर्णतया निश्चिंत होने के पश्चात् ही आगे की यात्रा आरंभ करता है । इसमें अयोध्याकांड की घटनाएं वर्णित हैं ।

"संघx संघर्ष की ओर " में रामायण के अरण्यकांड की कथा वर्णित है । इसमें चित्रकूट से लेकर दण्डकारण्य में मुनि धर्मभृत्य धर्मभृत्य के आश्रम तक की घटनाओं को नियोजित किया गया । राम जहाँ-जहाँ भी जाते हैं जन-xx साधारण को अन्याय और अत्याचार और शोषण के खिलाफ संगठित , शिक्षित , शस्त्रास्त्र में दीक्षित और जाग्रत करते हुए जाते हैं । उनके व्यक्तित्व के आसपास एक जन-जागरण की चेतना तरंगायित हो जाते हैं , क्योंकि राम उपदेश में नहीं , प्रत्युत् कर्म में विश्वास करते हैं । "दीक्षा" और " अवसर" की तुलना में यह उपन्यास थोड़ा दीर्घकाय है । अतः उसे दो खण्डों में उपन्यस्त किया गया है । प्रथम खण्ड ऋषि शरभंग के आत्मदाह से आरंभ होकर

ऋषि अगस्त्य के आश्रम तक की यात्रा को निरूपित किया है । मुनि धर्म-भृत्य ने अगस्त्य पर एक काव्य-रचना की सृष्टि की है । अतः यहां रामकथा के समानान्तर अगस्त्य की कथा भी प्राप्त होती है । यहां से राक्षसों से उनकी टकराहट और संघर्ष शुरू हो जाते हैं । यहां लेखक ने यह भी स्पष्ट किया है कि "राक्षस" कोई जाति-विशेष न होकर , एक प्रवृत्ति है । जहां भी अन्याय , अत्याचार , दमन , शोषण , दूसरों के अधिकारों का अतिक्रमण , दूसरों के सभी प्रकार के दोहन के द्वारा स्वयं को ही समृद्ध और संपन्न करते जाना , भोग और केवल भोग की बात , यही राक्षसी प्रवृत्ति है और ऐसी प्रवृत्ति जिस-किसीमें पायी जाती है वे सब राक्षस हैं । अर्थात् राक्षस कोई भी जाति का व्यक्ति होता है । जिस प्रकार एक डाकिन दूसरी स्त्री को डाकिन बनाती है ; ठीक उसी प्रकार एक राक्षस अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए दूसरे व्यक्ति को राक्षस बना सकता है । शोषित और दमित जाति का भी समर्थ व्यक्ति राक्षसों से संपर्क में आकर राक्षस बन जाता है । इस उपन्यास में राक्षसों के इन संस्थानों को , या कहिए गढ़ों को तोड़ने और ढहाने का कार्य किया गया है । दूसरे खण्ड में दण्डकवन में तात जटायु से मिलकर पंचवटी में आश्रम स्थापित करने से लेकर सीताहरण तक की घटनाओं को उपन्यस्त किया गया है । यहां जन-स्थान में अपने चौदह हजार सैनिकों के स्कन्धावार के साथ शूर्पणखा का राज्य है । लेखक ने शूर्पणखा का चित्रण भी मनो-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में किया है । कभी शूर्पणखा भी कोमल प्रेमपूर्ण भावनाओं से पूर्ण एक सुंदर राक्षस युवती थी । वह कालकेय-राजकुमार विद्युज्जिह्व से प्रेम करती है । रावण के विरोध के बावजूद वह उससे प्रेम-विवाह कर लेती है । रावण का अहंकार इसे बरदाश्त नहीं कर सकता और सुहागरात भी वह नहीं मना पायी थी कि रावण उसके प्रेमी-पति का वध कर डालता है । उस दिन से शूर्पणखा सचमुच में राक्षसी हो जाती है । अब वह भोग को ही प्रेम मानने लगी है । जिस पर भी उसका मन आ जाता है , येन केन प्रकारेण उसे वह

पा लेती है । अतः छीनना उसकी प्रवृत्ति हो जाती है । सहज प्राकृतिक प्रेम संपन्न भोग मनुष्य को संतुलित रखता है, किन्तु शूर्पणखा का भोग-विलास तमाम प्रकार की सीमाओं को लांघ चुका है । यौन-मनोविज्ञान में ऐसी स्त्री को "निम्फो" कहा जाता है । "निम्फो" औरत को जब अपना मनचाहा पुरुष प्राप्त नहीं होता है तो वह घायल शेरनी हो जाती है । वह पंचवटी में राम को देखती है और उसके रूप-यौवन पर आफरीन हो जाती है । बाद में वह लक्ष्मण को भी देखती है और उस पर भी आसक्त हो जाती है । किन्तु अपने मकसद में जब वह कामयाब नहीं होती तो शक्ति का प्रदर्शन करती है । सीता को अपनी बाधा समझकर उस पर आक्रमण करती है । तब लक्ष्मण उसके नाक-कान को शस्त्र-चिह्नित करके उसे छोड़ देता है । उसका प्रतिशोध लेने के लिए वह खर-दूषण को चौदहहजार सैनिकों के साथ भेजती है । किन्तु राम न केवल खर-दूषण का वध करते हैं, अपितु उनकी चौदह हजार की सेना को भी ध्वस्त कर देते हैं । अकंपन के कहने से शूर्पणखा लंका भाग जाती है और अपनी कुटिल बुद्धि के कारण रावण को सीताहरण के लिए उकसाती है । रावण छद्मवेशी मामा मारीच के सहयोग से सीता का हरण करने में सफल हो जाता है । मंदोदरी अभी तक के अपहरणों में मौन साध लेती थी, क्योंकि वह स्वयं अप्सरा-पुत्री होने के कारण अत्यन्त सुंदर थी, किन्तु सीता की सुंदरता के सामने वह कुछ भी नहीं थी । दूसरे इन्द्रजित मेघनाद के कारण रावण के सम्मुख उसका सामर्थ्य कुछ बढ़ गया था । अतः अपने तर्कों द्वारा रावण को पराजित करते हुए उसे वचनबद्ध कर लेती है कि वह सीता को अशोकवाटिका में रखेगा और सीता की इच्छा से उसका वरण करेगा । इस हेतु उसे वह एक साल की अवधि दिलाने में सफल हो जाती है । अर्थात् एक साल तक रावण सीता के हृदय को जीतने का यत्न करेगा और एक साल की अवधि के समाप्त होने पर, वह चाहे तो सीता को बलात्कृत भी कर सकता है । दूसरे वह यह भी शर्त रखती है कि रावण जब भी सीता को मिलने जायेगा उसे भी अपने साथ रखेगा ।

"युद्ध" इन सब उपन्यासों में सबसे बड़ा है । उसे दो भागों में विभक्त किया है — " युद्ध-1 " और " युद्ध-2 " । पुनः इन दो भागों को दो-दो खण्डों में उपन्यस्त किया गया है । यों कुल मिलाकर यह 629 पृष्ठों का बृहद् काय उपन्यास है । "युद्ध-1 " के प्रथम खण्ड में कथा तीन धरातलों पर चलती है -- वाली सुग्रीव की कथा , सीतान्वेषण की कथा और लंका में महामहालय और अशोकवाटिका की कथा । वाली सुग्रीव की कथा में वाली के अत्याचार और विलासिता को निरूपित किया गया है । मायावी का वध करने के उपरान्त वाली जब पुनः किष्किंधा आता है , तो उसके चाटुकार उसे सुग्रीव के खिलाफ भड़काने में सफल हो जाते हैं और फलतः सुग्रीव को रातोंरात भागकर जंगल में आश्रय लेना पड़ता है । सीतान्वेषणवाली कथा में राम-लक्ष्मण तथा उनके कुछ साथी मतंग वन तक पहुंचते हैं , जहां सुग्रीव-हनुमान आदि से उनकी मुलाकात होती है । लंका में अशोक-वाटिका में सीता की स्थिति , रावण-विभीषण के बीच राजनीतिक झड़पें , शूर्पणखा को अश्मद्वीप भेज देना जैसी घटनाएं वर्णित हैं ।

"युद्ध-1" के दूसरे खण्ड में केवल किष्किंधाकांड की कथा ही चलती है । वाली वध के उपरान्त सुग्रीव का राज्याभिषेक होता है , किन्तु वह भी अपनी प्रशासनिक परेशानियों व विलासिता में डूब जाता है और राम को दिया हुआ वचन विस्मृत कर जाता है । तब उसकी जड़ता और प्रमाद को तोड़ने का कार्य राम के कहने पर लक्ष्मण करते हैं । उसके बाद सीतान्वेषण का कार्य पुनः आरंभ होता है और हनुमान समुद्र-संतरण में सफलकाम होते हैं ।

"युद्ध-2" के प्रथम खण्ड में लंका-वैभव , हनुमान द्वारा लंकादहन की घटना , रावण-विभीषण वार्ता , रावण द्वारा विभीषण को लात मारना , हनुमान का किष्किंधा पहुंचकर सीता के संदर्भ में बताना , सागर-संतरण की समस्या और उसका समाधान इत्यादि को निरूपित किया गया है । सेतु-निर्माण की चमत्कारपूर्ण

घटना को और उसके मिथक को तोड़ते हुए उसे तार्किक व वैज्ञानिक सूझ-बूझ के साथ प्रस्तुत किया गया है । "युद्ध-2" के दूसरे खण्ड में राम-रावण के वास्तविक युद्ध को निरूपित किया गया है । समुद्र-संतरण की घटना से रावण हतप्रभ और दिग्मूढ़ हो जाता है, तथापि अपने अहंकार के कारण झुकता नहीं है । एक-एक करके उसके सेनापति, पुत्र, भाई कुंभकर्ण इत्यादि खेत रहते हैं । उधर राम-लक्ष्मण भी बार-बार हताहत होकर मूर्च्छित हो जाते हैं, पर सुषेणऔर गरुड़ की चिकित्सा से ठीक हो जाते हैं । लक्ष्मण द्वारा मेघनाद के वध से रावण पूरी तरह से टूट जाता है । राम-रावण के बीच भयंकर-दुर्धर्ष युद्ध होता है, जिसमें अन्ततः इन्द्र और माँ दुर्गा की सहायता भी उन्हें प्राप्त हो जाती है । परिणामतः अगस्त्य द्वारा प्रदत्त ब्रह्मास्त्र के प्रहार से रावण का वध होता है । रावण-वध के उपरान्त सीता की अग्नि-परीक्षा वाले प्रसंग का लेखक ने परिशोध किया है । विभीषण को सत्ता हस्तांतरित करने के पश्चात् राम-लक्ष्मण, सीता, सुग्रीव और उनकी वानर-सेना तथा अन्य जन-वाहिनियों के वापस लौटने का संकेत उपन्यास के अन्त में लेखक ने दिया है । इस प्रकार रामकथा के अन्तर्गत वाल्मीकि रामायण के लंकाकांड तक की घटनाओं को लेखक ने यहाँ आधुनिक अर्थघटन के साथ प्रस्तुत किया है । अनेक प्रसंगों का परिशोध किया है और एक उपन्यास-माला के रूप में रामकथा को प्रस्तुत किया है । उर्दू के किसी शायर का एक शेर स्मृति में कौंध रहा है —"कोई हद ही नहीं यारब, मोहब्बत के फसाने की ; सुनाता जा रहा है जो जिसको जितना याद आता है ।" उसे कुछ परिवर्तन के साथ डा० कोहली के इन उपन्यासों के संदर्भ में कहा जा सकता है —"कोई हद ही नहीं यारब, राम के इस फसाने की ; सुनाता जा रहा है जो, जिसको जितना याद आता है ।" तो डा० कोहली ने राम की इस कथा को अपनी आधुनिक सूझ-बूझ, मानवता-केन्द्रित विचारधारा के तहत अपने मौलिक ढंग से कहा है । पुराकथाओं की यही तो विशेषता है कि वे एक बार में कभी चूक नहीं जाती ।

निष्कर्ष :
======

इस समूचे अध्याय के समग्रावलोकन के पश्चात् हम निम्नांकित निष्कर्ष तक सहजतया पहुंच सकते हैं —

§1§ रामायण और महाभारत भारतीय साहित्य की वह रत्न-मंजूषा है, जिसमें एक से बढ़कर एक रत्न पड़े हुए हैं।

§2§ भारतीय साहित्य में रामकथा की एक सुदीर्घ परंपरा उपलब्ध होती है।; जिसका प्रारंभ वैदिक साहित्य से होता है। वैदिक साहित्य में सिलसिलेवार रामकथा उपलब्ध होती नहीं है, किन्तु रामायण के कुछ प्रमुख पात्रों का उल्लेख एवं विवरण वहां प्राप्त होते हैं।

§3§ वैदिक साहित्य के उपरान्त पुराणों में रामकथा विष्णु-पुराण, हरिवंशपुराण, भागवतपुराण और पद्मपुराण में उपलब्ध होती है।

§4§ पुराणों के अतिरिक्त संस्कृत रामायणों में वाल्मीकि रामायण, योगवासिष्ठ रामायण, अध्यात्म रामायण, अद्भुत रामायण, आनंद रामायण, भुशुण्डि रामायण, तमिल के महाकवि कम्बन विरचित कम्ब रामायण या तमिल रामायण, बुद्धनाथ रेड्डी द्वारा प्रणीत तेलुगु रामायण या रंगनाथ रामायण, बंगाल के सन्त कवि कृतिवास द्वारा विरचित बंगला रामायण या कृतिवास रामायण आदि प्रमुख रामायणों में रामकथा उपलब्ध होती है।

§5§ उपर्युक्त रामायणों के अतिरिक्त महाभारत के वनपर्व, द्रोणपर्व और शान्तिपर्व में भी रामकथा उपलब्ध होती है।

§6§ संस्कृत प्रबंधकाव्यों तथा नाटकों में कविकुलगुरु कालिदास द्वारा प्रणीत रघुवंश, महाकवि भट्टी द्वारा विरचित भट्टी काव्य या रावण-वध काव्य, सिंहल के महाकवि कुमारदास विरचित जानकी हरण, आचार्य कवि क्षेमेन्द्र कृत रामायण-मंजरी और दशावतार चरितम् आदि प्रबंध काव्यों तथा भास कृत प्रतिमा नाटक, भवभूति कृत उत्तरराम चरित नाटक, दामोदर मिश्र कृत हनुमन्नाटक, और पीयूष-

वर्षी जयदेव कृत प्रसन्नराघव नाटक आदि नाटकों में हमें रामकथा किसी-न-किसी रूप में उपलब्ध होती है ।

§7§ संस्कृत के बाद पालि , प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में भी हमें रामकथा विविध रूपों में मिलती है । बौद्ध और जैनों ने अपने सिद्धान्तों के अनुसार रामकथा को ढाला है ।

§8§ संस्कृत और पालि , प्राकृत , अपभ्रंश के पश्चात् हिन्दी में रामकाव्य की एक सुदीर्घ परंपरा उपलब्ध होती है जिसमें पृथ्वीराज रासो , सूर-सागर , गीतावली , कवितावली , रामचरित-मानस आदि में हमें रामकथा उपलब्ध होती है । रामचरितमानस की गणना विश्व के प्रसिद्ध रामायणों में होती है । उसे तुलसीकृत रामायण भी कहते हैं और वाल्मीकि रामायणके बाद सबसे ज्यादा ख्याति "मानस" को मिली है ।

§9§ हिन्दी के आदिकाल और भक्तिकाल के पश्चात् रीति-काल में रामचन्द्रिका , श्री लालदास कृत अवध-विलास , महाकवि चन्ददास विरचित रामविनोद या चन्ददास रामायण आदि प्रबंध काव्यों में रामकथा मिलती है ।

§10§ हिन्दी के आधुनिक काल में मैथिलीशरण कृत साकेत महाकाव्य , डा. बलदेवप्रसाद मिश्र कृत कोशल-किशोर , साकेत-सन्त और राम-राज्य काव्य ; सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला कृत राम की शक्ति-पूजा , अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत वैदेही-वनवास , बालकृष्ण शर्मा नवीन कृत उर्मिला , राजाराम शुक्ल कृत जानकी-जीवन , अरुण पोद्दार कृत अरुण रामायण , मैथिलीशरण गुप्त कृत पंचवटी खण्डकाव्य , नरेश मेहता विरचित शबरी , जगदीश गुप्त विरचित शम्बूक आदि काव्यों में हमें रामकथा के विभिन्न आयाम उपलब्ध होते हैं ।

§11§ आधुनिक काल में उपन्यास का उद्भव और विकास हुआ । अतः रामकथा अब उपन्यासों में भी मिलने लगी है । आचार्य चतुरसेन शास्त्री कृत उपन्यास वयं रक्षामः ,भगवानसिंह कृत अपने अपने

राम , डा॰ भगवतीशरण मिश्र कृत उपन्यास पवनपुत्र तथा हमारे आलोच्य लेखक डा॰ नरेन्द्र कोहली द्वारा प्रणीत दीक्षा , अवसर , संघर्ष की ओर तथा युद्ध जैसे उपन्यासों में रामकथा का औपन्यासिक यथार्थ-समन्वित रूप हमें उपलब्ध होता है ।

(12) डा॰ नरेन्द्र कोहली के उपर्युक्त उपन्यास अपने आप में स्वतंत्र भी हैं और एक उपन्यासमाला की श्रृंखला के रूप में भी उनको देखा जा सकता हैं । उनमें पारस्परिक क्रमिकता है । कार्य-कारण सम्बन्ध भी है । प्रथम उपन्यास का परिणाम दूसरा , दूसरे का परिणाम तीसरा और तीसरे का परिणाम चौथा हैं ।

(13) उपन्यास के शीर्षक भी सर्वथा उपयुक्त हैं । प्रथम उपन्यास के केन्द्र में विश्वामित्र , उनका सिद्धाश्रम और उनकी विचारधारा हैं । राम और लक्ष्मण यहां दीक्षित होते हैं और विश्वामित्र द्वारा प्रदत्त शिक्षा और दीक्षा के अनुरूप कार्य करने का मौका उन्हें "अवसर" में मिलता है । "अवसर" की गतिविधियां उन्हें क्रमशः संघर्ष की ओर ले जाती हैं , जिनका अंतिम परिणाम राम-रावण युद्ध हैं ।

(14) इन चारों उपन्यासों में लेखक ने पौराणिक पात्रों का मानवीकरण और आधुनिकीकरण किया है । अनेक पात्रों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या यहां प्रस्तुत की गयी है । चरित्र-चित्रण में यथा-संभव लेखक तटस्थ व निरपेक्ष रहा है । यहां तक कि कैकेयी और शूर्पणखा जैसे ऋणात्मक चरित्रों के पीछे के मनोवैज्ञानिक कारणों की पड़ताल करके लेखक ने उनके साथ न्याय करने का प्रयत्न किया है ।

(15) लेखक के ये चारों उपन्यास आधुनिक समसामयिक परिवेश के भी सर्वथा उपयुक्त है । उनमें ऐसी अनेक समस्याओं का आकलन है जो हमारे वर्तमान जीवन में भी व्याप्त है । लेखक ने पौराणिक पात्रों के साथ-साथ कुछ काल्पनिक सामाजिक पात्रों का भी

इस प्रकार मिला दिया है कि कहीं असहज या अस्वाभाविक नहीं लगता । बहुत ही साहजिक ढंग से यह हुआ है ।

§16§ लेखक ने इन चारों उपन्यासों में अनेक पौराणिक घटनाओं का अर्थघटन आधुनिक ढंग से किया है । इन घटनाओं में अहल्या-प्रसंग , धनुष-भंग प्रसंग , कैकेयी-प्रसंग , सीताहरण प्रसंग , हनुमान का समुद्र-संतरण , सेतु-निर्माण प्रसंग आदि को उल्लेख्य कहा जा सकता है ।

§17§ लेखक ने अनेक प्रसंगों में जो पौराणिक चमत्कार का तत्व था उसको आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है और अनेक मिथक-कथाओं के मिथ को आधुनिक दृष्टि से स्पष्ट किया है ।

§18§ लेखक ने वानर , ऋक्ष , गृध्र , जटायु , संपाति , आदि का वर्णन पशु-पक्षी के रूप में न करके तत्कालीन आदिम अविकसित जातियों के रूप में किया है । इसमें राक्षस-संस्कृति और मानवतावादी भारतीय-संस्कृति का संघर्ष निरूपित किया है । यह भौतिकवाद और अध्यात्म का भी संघर्ष है ।

===== xxxxxxxx =========

: सन्दर्भानुक्रम :

§1§ ऋग्वेद : 10:60:4 ।

§2§ वही : 1:126:4 ।

§3§ अथर्ववेद : 19:39:9 ।

§4§ ऋग्वेद का सायण भाष्य : मंत्र क्रमशः 10:93:14 और 10:93:15

§5§ अथर्ववेद : 4:6:1 ।

§6§ वही : 10:2:31 ।

§7§ द्रष्टव्य :"रामकथाः उत्पत्ति और विकास " : डा. फादर कामिल बुल्के द्वारा उद्धृत : पृ. 104 ।

§8§ वही : पृ. 24 ।

§9§ "रामकथा : भक्ति और दर्शन " : डा. विश्वम्भरदयाल अवस्थी : पृ. 10-11 ।

§10§ वही : पृ. 12 ।

§11§ से §14§ : द्रष्टव्य : वही : पृ. क्रमशः 14-15, 16-17, 17-23 , 23-25 ।

§15§ द्रष्टव्य : वाल्मीकि रामायण : 1:2:5 ।

§16§ द्रष्टव्य : वही : 1:1:7-8 ।

§17§ द्रष्टव्य : भारतीय साहित्यकोश : सं. डा. नगेन्द्र : पृ. 1099 ।

§18§ " हीनवर्णो नृपश्रेष्ठ तप्यते सुमहत्तपः ।
भविष्यच्छूद्रयोन्यां ह हि तपश्चर्या कलीयुगे ।। "
:वाल्मीकि रामायण : 7.24.27 ।

§19§ " यथाहं राघवादन्यं मनसापि न चिन्तये ।
तथा मे माधवी देवी विवरं दातुमर्हति ।। "
: वाल्मीकि रामायण : 7.97.14 ।

§20§ द्रष्टव्य : " रामकथा : भक्ति और दर्शन " : डा. विश्वम्भर-दयान अवस्थी : पृ. 26-36 ।

§21§ द्रष्टव्य : "रामकथा : भक्ति और दर्शन " : डा. विश्वम्भर-
दयाल अवस्थी : पृ. 38 ।

§22§ द्रष्टव्य : " रामकथा : उत्पत्ति और विकास " : डा. फादर
कामिल बुल्के : पृ. 125-131 ।

§23§ योगवासिष्ठ : निर्वाण प्रकरण : 128.67 ।

§24§ अध्यात्म रामायण : 1.1.2 ।

§25§ और §26§ : द्रष्टव्य : वही: क्रमशः 6.13.20 , 4.62 ।

§27§ "रामकथा : भक्ति और दर्शन " : पृ. 50-51 ।

§28§ "तदा दृष्टस्तदंगुष्ठौ मया दक्षिणपादजः " : आनंद रामायण :
3.38-39 ।

§29§ वही : 3.41 ।

§30§ विस्तार के लिए द्रष्टव्य : "रामकथा : भक्ति और दर्शन " :
पृ. 52-58 ।

§31§ विस्तार के लिए द्रष्टव्य : वही : पृ. 59-62 ।

§32§ महाभारत : वनपर्व : 276.15 ।

§33§ महाभारत : द्रोणपर्व : 59.19 ।

§34§ द्रष्टव्य : " रामकथा : भक्ति और दर्शन " : पृ. 67 ।

§35§ द्रष्टव्य : रघुवंश : 14.61.1 ।

§36§ द्रष्टव्य : वही : 14.65 ।

§37§ सूक्ति-मुक्तावली : राजशेखर ।

§38§ द्रष्टव्य : प्रसन्नराघव : जयदेवपीयूषवर्षी : 1.12. ।

§39§ द्रष्टव्य : दशरथ जातक : 13वीं गाथा ।

§40§ " रामकथा : भक्ति और दर्शन " : पृ. 100 ।

§41§ द्रष्टव्य : हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त सरल इतिहास : डा.
पारुकान्त देसाई : पृ. 9 ।

§42§ द्रष्टव्य : तुलसी-पूर्व राम-साहित्य : डा. अमरपाल सिंह :
पृ. 77-78 ।

§43§ कम्ब रामायण : 4.7.346 ।

§44§ रंगनाथ रामायण : बालकाण्ड : 590-600 ।

(45) द्रष्टव्य : प्रस्तुत प्रबंध : पृ. 148 ।

(46) रामचरित मानस : तुलसीदास : बालकाण्ड ।

(47) वही : मंगलाचरण ।

(48) वही : 1.36 ।

(49) द्रष्टव्य : तुलसी-दर्शन-मीमांसा : डा. उदयभानु सिंह : पृ. 24 ।

(50) रामचरित मानस : तुलसीदास : 7.128. 3-4 ।

(51) " रामकथा : भक्ति और दर्शन " : डा. विश्वम्भरदयाल अवस्थी : पृ. 140-176 ।

(52) अपने अपने राम : भगवानसिंह : द्वितीय फ्लेप के पृष्ठ भाग से ।

(53) नरेन्द्र कोहली ने कहा : सं. ईशान महेश : पृ. 37 ।

(54) से (56) : वही : पृ. क्रमशः 38, 29, 28-29 ।

(57) अभ्युदय : डा. नरेन्द्र कोहली : पृ. 1 ।

(58) से (59) : वही : पृ. क्रमशः 2 , 2 ।

(60) " नरेन्द्र कोहली : अप्रतिम कथायात्री " : डा. विवेकीराय : : [illegible] पृ. 83 ।

(61) नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 40-41 ।

(62) और (63) : वही : पृ. क्रमशः 41 , 41 ।

(64) दीक्षा : अभ्युदय : डा. नरेन्द्र कोहली : पृ. 48 ।

(65) से (67) : वही : पृ. क्रमशः 51-52, 149 , 17 ।

(68) नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 43 ।

(69) द्रष्टव्य : दीक्षा : अभ्युदय : पृ. 155 ।

(70) से (73) : वही : पृ. 155, 155, 156 , 156 ।

(74) नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 43 ।

(75) और (76) : दीक्षा : अभ्युदय : पृ. क्रमशः 187, 189 ।

(77) द्रष्टव्य : आधुनिक हिन्दी उपन्यास : सं. भीष्म साहनी , रामजी मिश्र तथा भगवतीप्रसाद निदारिया : पृ. 531 ।

(78) द्रष्टव्य : चिन्तनिका : डा. पारुकान्त देसाई : पृ. 47 ।

(79) नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 41 ।

(80) दीक्षा : अभ्युदय : पृ. 45-46 ।

§81§ दीक्षा : अभ्युदय : डा. कोहली : पृ. 47 ।

§82§ नरेन्द्र कोहली ने कहा : सं. ईशान महेश : पृ. 30 ।

§83§ " नरेन्द्र कोहली : अप्रतिम कथायात्री " : डा. विवेकीराय : पृ. 30 ।

§84§ द्रष्टव्य : अवसरः अभ्युदय : पृ. क्रमशः 233, 238, 247 ।

§85§ से §92§ : वही : पृ. क्रमशः 235-236 , 234, 212, 216, 296-297 , 314, 314, 315 ।

§93§ द्रष्टव्य : गुजरात समाचार : गुजराती दैनिक : दिनांकः 8-1-07 : पृ. 16 ।

§94§ अवसरः अभ्युदय : पृ. 253 ।

§95§ वही : पृ. 272 ।

§96§ नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 30-31 ।

§97§ से §100§ : संघर्ष की ओर : अभ्युदय : पृ. क्रमशः 393, 719, 588, 732 ।

§101§ नरेन्द्र कोहली ने कहा : पृ. 31 ।

§102§ से §115§ : द्रष्टव्य : युद्ध : अभ्युदय-2 : पृ. क्रमशः 1-185, 186-345, 348-520, 570, 591, 591 , 596-607, 615-621 , 621, 622, 626, 626, 627. 629 ।

=======xxxxxxxxx ==========